रजिस्ट्री सं० डी—(डीएन)—128/91 REGISTERED NO. D—(DN)—128/91

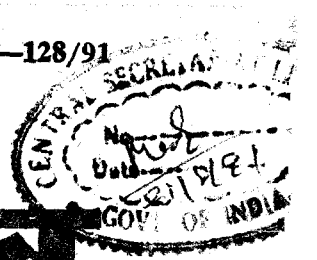

भारत का राजपत्र
The Gazette of India

प्राधिकार से प्रकाशित
PUBLISHED BY AUTHORITY

सं० 17] नई दिल्ली, शनिवार, अप्रैल 27, 1991 (वैशाख 7, 1913)
No. 17] NEW DELHI, SATURDAY, APRIL 27, 1991 (VAISAKHA 7, 1913)

(इस भाग में भिन्न पृष्ठ संख्या दी जाती है जिससे कि यह अलग संकलन के रूप में रखा जा सके।)
(Separate paging is given to this Part in order that it may be filed as a separate compilation)

विषय

	पृष्ठ
भाग I—खण्ड 1—(रक्षा मंत्रालय को छोड़कर) भारत सरकार के मंत्रालयों और उच्चतम न्यायालय द्वारा जारी की गई विधितर नियमों, विनियमों, आदेशों तथा संकल्पों से संबंधित अधिसूचनाएं	339
भाग I—खण्ड 2—(रक्षा मंत्रालय को छोड़कर) भारत सरकार के मंत्रालयों और उच्चतम न्यायालय द्वारा जारी की गई सरकारी अधिकारियों की नियुक्तियों, पदोन्नतियों, छुट्टियों आदि के सम्बन्ध में अधिसूचनाएं	501
भाग I—खण्ड 3—रक्षा मंत्रालय द्वारा जारी किए गए संकल्पों और असांविधिक आदेशों के सम्बन्ध में अधिसूचनाएं	3
भाग I—खण्ड 4—रक्षा मंत्रालय द्वारा जारी की गई सरकारी अधिकारियों की नियुक्तियों, पदोन्नतियों, छुट्टियों आदि के सम्बन्ध में अधिसूचनाएं	679
भाग II—खण्ड 1—अधिनियम, अध्यादेश और विनियम	*
भाग II—खण्ड 1—क—अधिनियमों, अध्यादेशों और विनियमों का हिन्दी भाषा में प्राधिकृत पाठ	*
भाग II—खण्ड 2—विधेयक तथा विधेयकों पर प्रवर समितियों के बिल तथा रिपोर्ट	*
भाग II—खण्ड 3—उप-खण्ड (i) भारत सरकार के मंत्रालयों (रक्षा मंत्रालय को छोड़कर) और केन्द्रीय प्राधिकरणों (संघ शासित क्षेत्रों के प्रशासनों को छोड़कर) द्वारा जारी किए गए सामान्य सांविधिक नियम (जिसमें सामान्य स्वरूप के आदेश और उपविधियां आदि भी शामिल हैं)	*
भाग II—खण्ड 3—उप-खण्ड (ii)—भारत सरकार के मंत्रालयों (रक्षा मंत्रालय को छोड़कर) और केन्द्रीय प्राधिकरणों (संघ शासित क्षेत्रों के प्रशासनों को छोड़कर) द्वारा जारी किए गए सांविधिक आदेश और अधिसूचनाएं	*
भाग II—खण्ड—3—उप-खण्ड (iii) भारत सरकार के मंत्रालयों (जिनमें रक्षा मंत्रालय भी शामिल है) और केन्द्रीय प्राधिकरणों (संघ शासित क्षेत्रों के प्रशासनों को छोड़कर) द्वारा जारी किए गए सामान्य सांविधिक नियमों और सांविधिक आदेशों (जिनमें सामान्य स्वरूप की उपविधियां भी शामिल हैं) के हिन्दी अधिकृत पाठ (ऐसे पाठों को छोड़कर जो भारत के राजपत्र के खण्ड 3 या खण्ड 4 में प्रकाशित होते हैं)	*
भाग II—खण्ड 4—रक्षा मंत्रालय द्वारा जारी किए गए सांविधिक नियम और आदेश	*
भाग III—खण्ड 1—उच्च न्यायालयों, नियंत्रक और महालेखा परीक्षक, संघ लोक सेवा आयोग रेल विभाग और भारत सरकार से संबद्ध और अधीनस्थ कार्यालयों द्वारा जारी की गई अधिसूचनाएं	417
भाग III—खण्ड 2—पेटेन्ट कार्यालय द्वारा जारी की गई पेटेन्टों और डिजाइनों से संबंधित अधिसूचनाएं और नोटिस	461
भाग III—खण्ड 3—मुख्य आयुक्तों के प्राधिकार के अधीन अथवा द्वारा जारी की गई अधिसूचनाएं	1
भाग III—खण्ड 4—विविध अधिसूचनाएं जिनमें सांविधिक निकायों द्वारा जारी की गई अधिसूचनाएं, आदेश, विज्ञापन और नोटिस शामिल हैं	927
भाग IV—गैर-सरकारी व्यक्तियों और गैर-सरकारी निकायों द्वारा जारी किए गए विज्ञापन और नोटिस	55
भाग V—अंग्रेजी और हिन्दी दोनों में जन्म और मृत्यु के आंकड़ों को दर्शाने वाला अनुपूरक	*

*आंकड़े प्राप्त नहीं।

CONTENTS

	PAGE
PART I—SECTION 1—Notifications relating to Non-Statutory Rules, Regulations, Orders and Resolution issued by the Ministries of the Government of India (other than the Ministry of Defence) and by the Supreme Court.	339
PART I—SECTION 2—Notifications regarding Appointments, Promotions, Leave etc. of Government Officers issued by the Ministries of the Government of India (other than the Ministry of Defence) and by the Supreme Court	501
PART I—SECTION 3—Notifications relating to Resolutions and Non-Statutory Orders issued by the Ministry of Defence . . .	3
PART I—SECTION 4—Notifications regarding Appointments, Promotions, Leave etc. of Government Officers issued by the Ministry of Defence	679
PART II SECTION 1—Acts, Ordinances and Regulations	*
PART II—SECTION 1-A—Authoritative texts in Hindi Language of Acts, Ordinances and Regulations	*
PART II SECTION 2—Bills and Reports of the Select Committee on Bills . .	*
PART II—SECTION 3—SUB-SEC. (i) General Statutory Rules (including Orders, Bye-laws, etc. of general character) issued by the Ministries of the Government of India, (other than the Ministry of Defence) and by Central Authorities (other than the Administration of Union Territories) .	*
PART II—SECTION 3—SUB-SEC. (ii)—Statutory Orders and Notifications issued by the Ministries of the Government of India (other than the Ministry of Defence) and by Central Authorities (other than the Administration of Union Territories)	*
PART II—SECTION 3—SUB-SEC. (iii) Authoritative texts in Hindi (other than such texts, Published in Section 3 or Section 4 of the Gazette of India) of General Statutory Rules & Statutory Orders (including Bye-laws of a general character) issued by the Ministries of Government of India (including the Ministry of Defence) and by General Authorities (other than Administration of Union Territories) . .	*
PART II—SECTION 4—Statutory Rules and Orders issued by the Ministry of Defence .	*
PART III—SECTION 1—Notifications issued by the High Courts, the Comptroller and Auditor General, Union Public Service Commission, the Indian Government Railways and by Attached and Subordinate Offices of the Government of India	417
PART III—SECTION 2—Notifications and Notices issued by the Patent Office, relating to Patents and Designs	461
PART III—SECTION 3—Notifications issued by or under the authority of Chief Commissioners	1
PART III—SECTION 4—Miscellaneous Notifications including Notifications, Orders, Advertisements and Notices issued by Statutory Bodies	927
PART IV—Advertisements and Notices issued by Private individuals and Private Bodies .	55
PART V—Supplement showing Statistics of Births and Deaths etc. both in English and Hindi	*

*Folio Nos. not received.

भाग I—खण्ड 1

[PART I—SECTION 1]

(रक्षा मंत्रालयों को छोड़कर) भारत सरकार के मंत्रालयों और उच्चतम न्यायालयों द्वारा जारी की गई विधितर नियमों, विनियमों तथा आदेशों और संकल्पों से संबंधित अधिसूचनाएं

[Notifications relating to Non-Statutory Rules, Regulations, Orders and Resolutions issued by the Ministries of the Government of India (other than the Ministry of Defence) and by the Supreme Court]

राष्ट्रपति सचिवालय

अधिसूचना

नई दिल्ली, दिनांक 26 जनवरी 1991

सं० 54—प्रेज/91—राष्ट्रपति, निम्नलिखित व्यक्तियों को उनके असाधारण वीरतापूर्ण कार्यों के लिए "कीर्ति चक्र" प्रदान किए जाने का सहर्ष अनुमोदन करते हैं :—

1. जी ओ-2009—एन सहायक इंजीनियर (सिविल) राज पाल सिंह राणा

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख : 19 जनवरी, 1990)

18/19 जनवरी, 1990 को रात को लेह-खारडुंगला मार्ग पर मौसम का सर्वाधिक हिमपात हुआ जिसके कारण सड़क पूर्णतः अवरूद्ध हो गई। सीमा सड़क संगठन, हिमांक परियोजना की 54 सड़क निर्माण कम्पनी के सहायक इंजीनियर (सिविल) राज पाल सिंह सड़क के उक्त भाग के बर्फ हटाने और उसके रख-रखाव के प्रभारी अधिकारी थे। चारों ओर भीषण बर्फ गिर रही थी जिससे सड़क पर भारी भू-स्खलन और हिम-स्खलन होने का खतरा हो गया। ऐसी स्थिति में सड़क की सफाई का कार्य बुलडोजरों की सहायता से किया जाना था।

19 जनवरी, 1990 को दस बजे के राणा तीन अन्य पाइनियरों के साथ पदल आगे बढ़े। इनके पीछे बुलडोजर आपरेटर थे इतने में ही एक भारी हिम-खंड भीषण गड़-गड़ाहट करता हुआ आ गिरा जिसके नीचे बुलडोजर सहित इनका सारा दल दब गया। श्री राणा ने उल्लेखनीय सूझ-बूझ और असाधारण साहस के साथ बर्फ में से स्वयं को बाहर निकाला और यह सोचकर कि इनके साथी अभी भी बर्फ में ही दबे हुए हैं, अपने साथियों के बचाव का में लग गए। इस दौरान इन्होंने दुबारा हो सकने वाले और हिम-स्खलनों की वजह से अपनी जान के जोखिम की तनिक भी चिंता नहीं की। इन्होंने अकेले ही उन तीनों पायनियरों को बचा लिया जो गर्दन तक बर्फ में धंस गए थे और एक-एक करके उन तीनों पाइनियरों को अपने कंधे पर लाद कर सड़क से लगभग 500 मीटर ऊंचे सुरक्षित स्थान पर पहुंचाया। उसके तुरन्त बाद एक और भारी हिम-स्खलन होने से बुलडोजर बर्फ के नीचे दब गया किन्तु पूरी तरह से थक जाने के बावजूद इन्होंने एक अन्य मशीन की सहायता से, जो इस बीच घटनास्थल पर पहुंच गई थी, तुरन्त ही बुलडोजर को बाहर निकलवाने का कार्य करवाया। इस प्रकार इन्होंने बहुत ही खतरनाक परिस्थितियों में साहसपूर्ण कार्रवाई कर उसी दिन लगभग 1900 बजे तक खारडुंगला तक की सड़क साफ करवा दी।

इस प्रकार सहायक इंजीनियर (सिविल) राज पाल सिंह राणा ने अपने साथियों और बहुमूल्य उपस्कर को बचाने में अदम्य साहस और असाधारण कर्तव्य-निष्ठा का परिचय दिया।

2. 2671202 नायक प्रकाश चन्द, 15 ग्रिनेडियर्स (मरणोपरांत)

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख : 19 मई, 1990)

नायक प्रकाश चन्द, 15 ग्रिनेडियर एक घात टुकड़ी के कमांडर थे, जिन्हें जम्मू व कश्मीर मुक्ति मोर्चा उग्रवादियों को रोकने के लिए तैनात किया गया था, जो पाकिस्तान अधिकृत कश्मीर से हमारे कुपवारा सेक्टर में घुसपैठ करना चाहते थे। 19 मई, 1990 को 1500 बजे नायक प्रकाश चन्द ने छः सशस्त्र उग्रवादियों का एक दल उनके घात स्थान से आगे 500 मीटर की दूरी पर देखा। नायक प्रकाश चन्द ने जल्दी से अपना घात का स्थान बदला और सशस्त्र उग्रवादियों को ललकारा। उग्रवादियों ने लाइट मशीन गन और स्वचालित राइफलों से भारी मात्रा में गोलियां चलाई, जिनका जवाब घात दल ने दिया। जल्दी ही उग्रवादियों ने पाकिस्तान अधिकृत क्षेत्र की तरफ भागना शुरू कर दिया। नायक प्रकाश चन्द ने अपनी बचाव की जरा-सी परवाह नहीं की और वे स्वचालित शस्त्रों की भारी गोलीबारी में भी उग्रवादियों का पीछा करते रहे तथा उन्होंने एक उग्रवादी को मार दिया। इस गोलीबारी के दौरान नायक प्रकाश चन्द को एक गोली लग गई। गोली गर्दन से पार हो गई। गम्भीर रूप से घायल होने पर भी वे उग्रवादियों का पीछा करते

रहे तथा एक और उग्रवादी को मार दिया। इसके बाद वे गिर पड़े और बेहोश हो गए। गंभीर घावों के कारण बाद में वे वीर गति को प्राप्त हो गए।

नायक प्रकाश चन्द ने उग्रवादियों से लड़ते हुए असाधारण साहस का परिचय दिया और इस तरह अपने जीवन का सर्वोच्च बलिदान किया।

3. 2467756 लांस नायक चरण सिंह, पंजाब रेजिमेंट

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख : 17 जुलाई, 1990)

93 इन्फैंट्री ब्रिगेड कैम्प मुख्यालय के लांस नायक चरण सिंह ने, उन 43 उग्रवादियों को जो नियंत्रण-रेखा को पार करके घाटी में घुसपैठ करने वाले थे, पकड़वाने या मौत के घाट उतारने के उद्देश्य से आयोजित संक्रिया में एक अत्यंत जोखिमपूर्ण मिशन को स्वेच्छा से स्वीकार किया। घुसपैठ करने के पश्चात् उग्रवादी 17 जुलाई, 1990 की रात को जंगल में छिप गए। उग्रवादी दल के नेता ने एक सिविल ट्रक के प्रबंध की मांग की जो उन्हें सुरक्षित स्थान पर ले जा सके जिसके बाद उन्हें अपने आप आगे जाना था। इस सूचना के आधार पर उग्रवादी दल को ले जाए जाने के लिए एक सिविल ट्रक का प्रबंध किया गया। उग्रवादियों ने यह शर्त भी रखी कि ट्रक का ड्राइवर कोई सिख या मुसलमान ही होना चाहिए। लांस नायक चरण सिंह सिविल ट्रक ड्राइवर के रूप में वेश बदल कर ट्रक को उस अभीष्ट स्थान की ओर स्वेच्छा से ले जाने के लिए तैयार हुए जहां से उग्रवादियों को बस में चढ़ना था। नियत स्थान से लगभग एक किलोमीटर की दूरी पर जोखिमपूर्ण स्थिति उत्पन्न हो गई जब ट्रक में कुछ गड़बड़ी उत्पन्न हो गई और वह वहीं रूक गए। लांस नायक चरण सिंह ने धैर्य बनाए रखा और वे चतुराई से उस नियत स्थान की ओर गये और वहां उग्रवादियों के साथ सम्पर्क स्थापित किया। उग्रवादियों का विश्वास जीतकर ये उनमें से चार को उस स्थान पर ले आए जहां ट्रक खराब पड़ा था। उग्रवादियों द्वारा गाड़ी धकेलने के बाद ये उसे चलाने में समर्थ हो गये। इसके बाद ये ट्रक सहित नियत स्थान पर आ गये। उग्रवादियों के नेता ने उनकी नेकनीयती पर संदेह किया परन्तु लांस नायक चरण सिंह ने उन्हें विश्वास दिलाया कि वे स्वयं ट्रक के मालिक के कहने पर अधिक पैसा कमाने के लिए ऐसा कार्य किया करते हैं और ट्रक के मालिक ने पहले भी ऐसी कारवाइयों में उग्रवादियों की मदद की थी। उस कठिन मौके पर लांस नायक चरण सिंह के विश्वासपूर्वक स्थिति को संभालने का अच्छा परिणाम निकला और उग्रवादी बिना किसी संदेह ट्रक में चढ़ गए।

लांस नायक चरण सिंह सावधानी से ट्रक चलाते हुए पूर्व निर्धारित घात स्थान पर पहुंचे। घात स्थान पर जहां सड़क पर एक बड़ा पत्थर रखा हुआ था, लांस नायक चरण सिंह ने अपना ट्रक रोक दिया और वे नीचे उतरे। जब ये उतरने लगे तो दल के नेता ने, जो कि आगे की सीट पर बैठा हुआ था, उनकी बांह पकड़ ली और इनके इरादे के बारे में पूछा। लांस नायक चरण सिंह ने धैर्य रखकर जवाब दिया कि वे सड़क पर पड़े पत्थर को हटाने जा रहे हैं क्योंकि उसके कारण ट्रक आगे नहीं बढ़ सकता। इन्होंने अपने बुद्धिचातुर्य और सूझ-बूझ से ट्रक की बत्तियों का स्विच बन्द कर दिया और उस स्थान पर उसे ले गये जहां घात स्थान बताने के लिए सड़क पर पत्थर रखा हुआ था। इनके साथ ही गाइड भी भागने के लिए ट्रक से नीचे उतरा और तभी ट्रक की छत पर बैठे हुए उग्रवादियों ने इन दोनों पर गोलियां चला दी जिससे घटना स्थल पर ही गाइड की मृत्यु हो गई। इसके तुरन्त बाद कर्नल भगवान सिंह की कमान में 15वें राजपूताना राइफल्स के एक दल ने उस स्थान पर घात लगाकर 21 उग्रवादियों को मौत के घाट उतार दिया और अन्य दो को पकड़ लिया। इस प्रक्रिया में, 14 एके 47 राइफलें, दो सर्वउद्देश्यीय मशीन गनें, चार राकेटों सहित चीन में निर्मित एक 40 एम एम राकेट लांचर, तीन रिवाल्वर, 39 स्टिक ग्रेनेड, 42 कामिकाज़ी सुरंगें और छोटे-छोटे हथियार तथा गोलाबारूद के 2309 गोले बरामद किए गए।

इस कार्रवाई में शुरू से अंत तक लांस नायक चरण सिंह ने अपनी जीवन को गम्भीर खतरे में डालकर असाधारण सूझ-बूझ एवं वीरता का परिचय दिया।

4. मेजर अनुराग नौडियाल (आई० सी-30005), गोरखा राइफल्स (मरणोपरांत)

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख : 23 अक्तूबर, 1990)

23 अक्तूबर, 1990 को आपरेशन रक्षक के दौरान इन्फैंट्री ब्रिगेड के ब्रिगेड मेजर मेजर अनुराग नौडियाल सम्मेलन में भाग लेने के लिए ब्रिगेड के कमांडर के साथ पंजाब में पट्टी (पंजाब) गांव गए। सम्मेलन के पश्चात वे आतंकवादी-ग्रस्त क्षेत्रों का दौरा करने के लिए कमांडिंग अफसर, 14 बिहार के साथ गए। रास्ते में इन्हें मेजर एस के राय से यह रेडियो संदेश मिला कि भूरा करीमपुर गांव के उत्तर-पश्चिम में एक फार्म हाऊस के समीप आतंकवादियों से सामना हुआ है और सूबेदार उमा चरण प्रसाद के साथ एक टुकड़ी एक आतंकवादी को घेरने के लिए भेज दी गई है जो संखतरा गांव की ओर भाग गया था तथा वे स्वयं अन्य दो टुकड़ियों सहित भूरा करीमपुर गांव के समीप अन्य आतंकवादियों पर घेरा डालने के लिए जा रहे हैं। मेजर नौडियाल, ब्रिगेड मांडर तथा 14 बिहार के कमांडिंग आफिसर उसी समय संखतरा गांव की तरफ कूच कर गए जहां 14 बिहार के सूबेदार उमा चरण प्रसाद उस आतंकवादी का सामना कर रहे थे जिसने उस क्षेत्र में शरण ले रखी थी। शीघ्र विचरण देने के

पश्चात् सूबेदार उमा चरण प्रसाद की एक टुकड़ी और दो रक्षक दलों ने आतंकवादी का सामना करने की योजना तैयार की उनमें से एक रक्षक दल का नेतृत्व मेजर नौड़ियाल ने किया। फार्म हाऊस पर पहुंचकर उन्होंने नैब ओम प्रकाश देसवाल की बायीं ओर मोर्चा संभाला जिससे आतंकवादी भाग नहीं पाये। इसी बीच सूबेदार उमा चरण प्रसाद आतंकवादी की ओर बढ़े और गोलीबारी के दौरान उनकी जांघ में गोली लगी। मेजर नौड़ियाल ने यह अनुभव किया कि आतंकवादी को तुरन्त मार डालना आवश्यक है जिससे जूनियर कमीशन प्राप्त अफसर को सुरक्षित स्थान पर पहुंचाया जा सके।

एक हवलदार मनोज कुमार के साथ मिलकर उन्होंने आतंकवादी पर घातक हमला कर दिया। गोलीबारी में मेजर नौड़ियाल की बायीं बांह पर चोट लग गई। घायल अवस्था में भी वे आतंकवादी पर गोली चलाते रहे। आतंकवादी ने यह समझकर कि उसकी राइफल मैगजीन पर प्रहार हुआ है, अपनी पिस्तौल बाहर निकालने की कोशिश की परन्तु उसके पिस्तौल निकालने और गोली चलाने से पहले मेजर नौड़ियाल ने कारबाइन से गोली चला दी जिससे वह आतंकवादी मारा गया। मेजर नौड़ियाल को उन्हें एडवांस ड्रेसिंग स्टेशन हरीके ले जाते हुए अत्याधिक चोट के कारण मृत्यु हो गई।

इस तरह मेजर अनुराग नौड़ियाल ने असाधारण वीरता का परिचय दिया और सेना की सर्वोत्कृष्ट परम्परा का निर्वाह करते हुए अपने प्राणों की आहुति दे दी।

5. कैप्टन राकेश राणा (आई०सी०-43342) बिहार रेजिमैंट

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख : 23 अक्तूबर, 1990)

23 अक्तूबर, 1990 को पंजाब में भूरा करीमपुर गांव में बिहार रेजिमेंट की बटालियन के पैदल गश्ती दल की आतंकवादियों के साथ मुठभेड़ हो गई। जिन खेतों में आतंकवादी छिपे थे उन्हें चारों तरफ से घेर लिया गया। कैप्टन राकेश राणा को तुरन्त मुकाबला करने वाले दल के साथ तत्काल घटनास्थल पर जाने के आदेश दिए गए। कप्तान राणा तुरन्त गये और कुछ ही मिन्टों में गश्ती दल के साथ सम्पर्क स्थापित कर लिया। कमांडिंग अफसर ने निश्चय किया कि आक्रमण करके आतंकवादियों को खेतों से बाहर निकाल लिया जाये। कैप्टन राणा ने स्वेच्छा से आक्रमण का नेतृत्व करना स्वीकार किया। उन्हें आदेश दिया गया कि वे मेजर जॉन सम्पथ कुमार राव और नैब ओम प्रकाश देसवाल के साथ खेतों पर आक्रमण के लिए बाईं ओर से मोर्चा संभालें। इन्होंने अपने साथियों को आतंकवादियों की ओर बढ़ने के लिए उत्साहित किया। इन्होंने आतंकवादियों को बाहर निकालने में सूबेदार हरि नाम सिंह के ग्रुप को फायर सुरक्षा प्रदान की तथा उस आतंकवादी को समाप्त करने में सहायता की जो आतंकवादी आक्रमण का मुख्य केन्द्र बना हुआ था। दूसरी बार ये फिर आक्रमण की बाईं ओर से मोर्चे पर थे। कैप्टन राणा और उनके ग्रुप ने आतंकवादियों को घेरने का बीड़ा उठाया तथा मेजर जे एस० के० राव के ग्रुप ने पीछे से गोलीबारी करके उनकी सहायता की। भारी गोलीबारी से डरे बिना सिपाही दुर्गाचरण ओरांव तथा अन्य साथियों के साथ वह आतंकवादियों के निकट पहुंच गए जबकि गोलियां उनके सिरों के ऊपर से गुजर रही थीं। इनके उदाहरण से प्रोत्साहित होकर इनके साथियों ने आतंकवादियों को घेर लिया। सिपाही दुर्गा चरण ओरांव ने एक आतंकवादी को गोली मार दी। परन्तु जवाबी गोली से उनके सिर पर चोट आ गई और वह गंभीर रूप से घायल होकर गिर गये और खतरे का अभास करते हुए कैप्टन राणा घुटनों के बल रेंगते हुए सिपाही दुर्गा चरण ओरांव के पास पहुंचे और उन्होंने आतंकवादियों की गोलियों की परवाह किए बिना उनकी हल्की मशीन गन उठाई और उससे आतंकवादियों पर गोलियां चलाई।

हालांकि आतंकवादी घायल हो गए थे फिर भी वे भारी गोलीबारी कर रहे थे। कैप्टन राणा हल्की मशीनगन से आतंकवादियों पर गोलियों की बौछार करते हुए घुटनों के बल रेंगते हुए आगे बढ़े और भरी हुई मैगजीन की सारी गोलियां उन पर दाग दी। इन्होंने दो आतंकवादियों को मार गिराया और अपने साथियों को हताहत होने से बचा लिया। उस स्थान से एक ए० के०-47 राइफल और एक 7.12 मि०मी० सेल्फ लोडिंग राइफल तथा भारी मात्रा में गोलीबारूद बरामद किए गये।

इस प्रकार कैप्टन राणा ने अपने जीवन की जरा भी परवाह न करते हुए असाधारण वीरता और कर्तव्य परायणता का परिचय दिया।

6. 13614032 नायक वाई०एम० बनसोदे, 2 पैरा रेजिमेंट (मरणोपरांत)

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख : 4 दिसम्बर, 1990)

4 दसम्बर 1990 को 2, पैरा रेजिमेंट ने मणिपुर में जिला चूड़ा चांदपुर में गांव सियालगिया के पास घने जंगल में पीपुल्स लिबरेशन आर्मी के मुख्य केन्द्र एवं छिपने के महत्वपूर्ण ठिकाने का पता लगाने और उसे नष्ट करने की योजना बनाई और शत्रुजीत नाम से विशेष आप्रेशन शुरू किया। नायक वाई एम बनसोदे को खोजी दस्ते का नेतृत्व करने के लिए चुना गया। लगभग 15 घंटे तक ऊबड़-खाबड़ और दुर्गम घने जंगल में चलते हुए थक कर चूर होने पर खोजी दल 5 दिसम्बर को 0130 बजे संदिग्ध कैम्प स्थल पर पहुंचा। संदिग्ध कैम्प स्थल पर पहुंचते ही खोजी दस्ता भारी मशीन गन और स्वचालित राइफलों की भीषण गोलीबारी की चपेट में आ गया। इस भारी

और अचूक गोलीबारी से उत्पन्न खतरे के बीच नायक बनसोदे अकेले ही तुरन्त आगे बढ़े और कार्रवाई शुरू कर दी। अपनी सुरक्षा की जरा भी परवाह न करते हुए उन्होंने मशीनगन पोस्ट पर आक्रमण कर दिया। इस कार्रवाई के दौरान मशीनगन की गोलियों की बौछार से उनके पेट में गम्भीर चोटें आईं। बुरी तरह घायल होने के बावजूद नायक बनसोदे ने किसी तरह मशीनगन को गिरा दिया और उसके चालक को काबू में कर उसे मार दिया। परन्तु गम्भीर रूप से घायल होने के कारण वे वीर गति को प्राप्त हो गए। नायक बनसोदे की इस बहादुरी से प्रेरित होकर खोजी दल में फिर से उत्साह की लहर दौड़ पड़ी और उन्होंने विशेष आपरेशन शत्रुजीत पूर्णतः सफल बनाया। उस कार्रवाई में दो उग्रवादी मारे गए व चार पकड़े गए, एक मीडियम गन, पांच सेमी आटोमैटिक राइफलें, एक सेमी आटोकारबाइन, भारी मात्रा में गोलाबारूद, विस्फोटक और विविध दस्तावेज बरामद किए गए।

नायक वाई०एम० बनसोदे ने उग्रवादियों का सामना करते हुए असाधारण कर्तव्यनिष्ठा तथा उल्लेखनीय वीरता का परिचय देते हुए अपने जीवन का महान बलिदान किया।

सं० 55-प्रेज/91.—राष्ट्रपति, निम्नलिखित व्यक्तियों को उनके वीरतापूर्ण कार्यों के लिए "वीर चक्र" प्रदान किए जाने का सहर्ष अनुमोदन करते हैं :—

1. 3386270—सिपाही गुरदीप सिंह, सिख रेजिमेंट (मरणोपरांत)

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख : 14 फरवरी, 1989)

14 फरवरी, 1989 को सिख रेजिमेंट की 22वीं बटालियन के सिपाही गुरदीप सिंह को उनकी प्लाटून के साथ उत्तर-पूर्वी श्रीलंका में कुमलामनई-मुमालई सड़क खोलने के लिए तैनात किया गया। जब दल चौकी से लगभग एक किलामीटर की दूरी पर पहुंचा तो उग्रवादियों ने दल के अगले हिस्से पर बहुत नजदीक से अपने स्वचालित हथियारों से भारी गोलीबारी की। इस भारी गोलीबारी के तुरंत बाद उग्रवादियों ने वहां आस-पास बिछाई हुई चार क्लेमोर बारूदों का भी विस्फोट किया। सिपाही गुरदीप सिंह ने पहले कूल्हे की सहायता से और फिर जमीन पर लेट कर उग्रवादियों पर भारी एवं प्रभावशाली फायरिंग की। दोनों तरफ से हुई भारी गोलीबारी के परिणामस्वरूप उनकी प्लाटून के तीन जवान गम्भीर रूप से घायल हो गए। परन्तु उनकी सूझ-बूझ और अचूक गोली-बारी के फलस्वरूप उन्होंने उग्रवादियों को घायल जवानों के हथियार छीनने के लिए आगे नहीं बढ़ने दिया। उन्होंने उग्रवादियों के नेता को, जो अन्य उग्रवादियों को आदेश दे रहा था, मार डाला। इस मुठभेड़ में उनके सिर में गोली लगी और घटनास्थल पर ही उनकी मृत्यु हो गई। परन्तु तब तक वे उग्रवादियों द्वारा घात लगाकर किए गए आक्रमण को विफल कर चुके थे। उन्होंने उग्रवादियों को भारी क्षति पहुंचाई और अपने साथियों के लिए एक उदाहरण प्रस्तुत किया।

इस प्रकार सिपाही गुरदीप सिंह ने उग्रवादियों के साथ मुठभेड़ में असाधारण साहस एवं वीरता का परिचय दिया।

2. 13613007 हवलदार जश ठाकुर, पैराशूट रेजिमेंट (मरणोपरांत)

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख : 12 अप्रैल, 1989)

हवलदार जश ठाकुर 9 पैरा कमांडो की प्रेवाटीम : कमांडर थे। वे अक्तूबर, 1987 से यूनिट द्वारा श्रीलंका में की गई लगभग सभी सैनिक कार्रवाइयों में सम्मिलित थे। 12 अप्रैल, 1989 को जब वे तथा उनकी टुकड़ी 12 जाट प्लाटून के साथ थी तो 20 से 25 उग्रवादियों से उनकी मुठभेड़ हो गई। मुठभेड़ के पहले चरण में उनकी टुकड़ी के कुछ सदस्य घायल हो गए उनकी गाड़ी बिल्कुल बन्द हो गई। इससे विचलित हुए बिना उन्होंने अपने वाहन पर रखी हुई हल्की मशीन गन से उग्रवादियों पर प्रभावशाली गोलीबारी की। उग्रवादी कई बार गाड़ी की ओर झपटे। हवलदार जश ठाकुर ने कैप्टन संजय कुमार थापा के साथ मिलकर उग्रवादियों के ऐसे सभी प्रयासों को विफल कर दिया। चार या पांच उग्रवादी मारे गए और 7 घायल हो गए। जब उनकी हल्की मशीन गन की गोलियां समाप्त हो गईं तो उन्होंने अपनी टुकड़ी के एक घायल सदस्य से हथियार लेकर गाड़ी से बाहर छलांग लगाई और एक उग्रवादी पर प्रहार किया जो एक घायल सैनिक से हथियार छीनने की कोशिश कर रहा था इस कार्रवाई में वे गम्भीर रूप से घायल हो गये तथा अपने बहुमूल्य जीवन का बलिदान कर वे वीर गति को प्राप्त हुए।

इस प्रकार हवलदार जश ठाकुर ने उग्रवादियों के साथ मुठभेड़ में असाधारण साहस एवं वीरता का परिचय दिया।

3. कैप्टन जयनारायण सिंह बिष्ट (आई० सी० 45125-के०), मराठा लाइट इन्फैन्ट्री

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख : 20 अप्रैल, 1989)

20 अप्रैल, 1989 को यह सूचना प्राप्त होने पर कि : श्रीलंका में जाफना के चुलीपुरम क्षेत्र में उग्रवादी छिपे हुए हैं, कैप्टन जयनारायण सिंह बिष्ट ने उनके छिपने के स्थान पर शीघ्रता से छापा मारने की योजना बनाई और पूरी तरह मोर्चा संभाले हुए उग्रवादियों पर हमला करने के लिए गठित सैनिक टुकड़ी का स्वयं नेतृत्व किया। इस

कार्रवाई में उग्रवादियों द्वारा भारी मात्रा में प्रभावी गोली-बारी किए जाने के बावजूद कैप्टन बिष्ट ने लांस नायक एस० चेलप्पन के साथ उन पर बगल से आक्रमण किया और एक उग्रवादी को वहीं पर मार गिराया। इसके बाद अपनी जान की जरा भी परवाह न करते हुए ये, जहां उग्रवादी छिपे हुए थे उस घर में घुस कर गोलियों की बौछार करते रहे। इसी क्रम में एक उग्रवादी ने, जो घायल हो गया था, भागने की कोशिश की। कैप्टन बिष्ट ने भागते हुए उग्रवादी का तब तक पीछा किया जब तक वह घात में नहीं आ गया और इनके द्वारा तैनात एक सिपाही द्वारा मार नहीं गिराया गया। कैप्टन बिष्ट के इस आनन-फानन और निर्भीक हमले में 3 उग्रवादी मारे गए और 2ए०के०-47 स्वचालित राइफलें, एके-47 राइफलों के 4 मैगजीन, 4 हथगोले, गोलाबारूद और सामरिक महत्व के दस्तावेज तथा उग्रवादियों की प्रचार सामग्री बरामद हुई।:

इस प्रकार जयनारायण सिंह बिष्ट ने उग्रवादियों के साथ मुठभेड़ में असाधारण साहस और वीरता का परिचय दिया।

4. 3978845—लांस नायक प्रेम सिंह, 2 डोगरा (मरणोपरांत)

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख : 30 अप्रैल, 1989)

सियाचिन के चुमिक ग्योंगला ग्लेशियर क्षेत्र में 11 अप्रैल, 1989 को "आईबेक्स" नामक सैनिक कार्रवाई शुरू की गई। इस संक्रिया का उद्देश्य एक विशेष बिन्दु क्षेत्र पर कब्जा करना था। इस संक्रिया में एक चौकी स्थापित करना, भू-मार्ग खोलना तथा सहायता चौकी स्थापित करना एंव ग्योंगला ग्लेशियर में सबसे नजदीक के प्रशासनिक कैम्प के आस-पास अनेक पड़ाव कैम्प बनाना शामिल था। लांस नायक प्रेम सिंह से 27 अप्रैल, 1989 को इस बिन्दु क्षेत्र पर सुदृढ़ मोर्चा तैयार करने के लिए कहा गया। उन्होंने अपना निर्धारित कार्य पूरी लगन और उत्साह के साथ प्रारम्भ किया और शीघ्र ही बर्फ के अन्दर एक सुरंग बना डाली। इस सुरंग से वे आगे की ढलान पर होने वाली दुश्मन की गोलीबारी को देख सकते थे।

30 अप्रैल, 1989 की शाम को वे संतरी ड्यूटी पर थे जबकि उनके दल के शेष सदस्य थकने के बाद आराम कर रहे थे। शत्रु के सैनिक धुंधले में अस्पष्ट दिखाई देने की स्थिति का लाभ उठाकर चोरी-चोरी चौकी के नजदीक आ गए। लांस नायक प्रेम सिंह ने धुंध के बीच देखा कि तीन उग्रवादी उनसे मात्र 10 मीटर दूरी पर आ गए हैं। उन्होंने आनन-फानन में अपनी राइफल से फायर करके सबसे आगे आ रहे उग्रवादी को मार गिराया। परन्तु तभी उनका शस्त्र ठंड के कारण नाकाम हो गया। उन्होंने "दुश्मन-दुश्मन चिल्लाकर अपने साथियों को सतर्क किया जो अपने आश्रय स्थान से तेजी से उनकी ओर दौड़े। इसी बीच दुश्मन ने गोलियों की भारी बौछार की जिसमें लांस नायक प्रेम सिंह के पेट और छाती में गहरी चोट लगी। इस घायल अवस्था में भी अंतिम सांस तक उन्होंने ग्रेनेड से पिन बाहर निकालकर दुश्मन पर प्रहार किया। उनके इस वीरतापूर्ण आत्मबलिदान के कारण उनके दल को इतना समय मिल गया कि उन्होंने दुश्मन पर जवाबी हमला कर उन्हें पीछे खदेड़ दिया।

इस प्रकार लांस नायक प्रेम सिंह ने दुश्मन के साथ मुठभेड़ में असाधारण साहस और वीरता का परिचय दिया।

5. 3984434—सिपाही सरदार सिंह, 2 डोगरा रेजिमेंट

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख : 1 मई, 1989)

सियाचिन के चुमिक ग्योंगला ग्लेशियर क्षेत्र में 11 अप्रैल, 1989 को संक्रिया "आइबेक्स आरम्भ की गई। इस संक्रिया का उद्देश्य सालतोरो पहाड़ी के सामरिक महत्व के स्थान को शत्रु से पहले ही कब्जा करना और शत्रु के आक्रामक इरादों को विफल करना था। यह कार्रवाई 15,000 से 22,000 फुट की ऊंचाई पर करनी थी, तापमान बहुत ही कम, करीब–30° सेल्सियस था। करीब 80 किलोमीटर प्रति घंटे की रफ्तार से तेज हवाएं चल रही थी। प्राकृतिक कारणों और दुश्मन की गोलीबारी से हिम-स्खलन होते रहना वहां की आम घटना थी। सिपाही सरदार सिंह को कांमेनम से आंइस वाल तक मार्ग खोलने के लिए गठित विशेष दल का सदस्य चुना गया।

30 अप्रैल/1 मई, 1989 की रात्रि में सिपाही सरदार सिंह अपने एक छोटे दस्ते के साथ दक्षिण-पश्चिम से आने वाले मार्ग की रक्षा कर रहे थे। गश्त से लौटकर ये अपने टैन्ट में अपने जूते उतार कर एक छोटे स्टोव के पास बैठकर अपने अंगों को गरम कर ही रहे थे कि इसी बीच दुश्मन ने आक्रमण कर दिया। अपने साथी संतरी लांस नायक प्रेम सिंह की आवाज सुनकर इन्होंने अपना शस्त्र उठाया और बर्फ में नंगे पांव दौड़ते हुए अपनी चौकी की तरफ गये। इन्होंने देखा कि शत्रु के सैनिक मात्र 10 मीटर की दूरी से संतरी पर झुककर गोली चला रहे हैं। इन्होंने अपनी राइफल से तुरन्त गोली चलानी शुरू की और दुश्मन के तीन सैनिकों को अपना निशाना बना डाला। फिर बायीं ओर मुड़कर देखा कि एक सैनिक पीछे से इन पर गोली चला रहा है। इन्होंने तत्काल उसे भी मार गिराया। इस प्रकार इनकी चौकी पर दुश्मन के इस आक्रमण को विफल करने में इनकी प्रमुख भूमिका रही।

इस कार्रवाई में सिपाही सरदार सिंह ने दुश्मन के साथ मुठभेड़ में असाधारण साहस और वीरता का परिचय दिया।

6. कैप्टन तेजबंस सिंह चहल (आई सी–45060), आर्टिलरी

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख : 7 मई, 1989)

सियाचिन के चुमिक ग्योंगला ग्लेशियर में 11 अप्रैल, 1989 को "आईबैक्स" नामक सैनिक कार्रवाई शुरू की गई। इस कार्रवाई का उद्देश्य महत्वपूर्ण बिन्दु क्षेत्र पर कब्जा करना था। यह कार्यवाई 15,000 से 22,000 फुट की ऊंचाई पर की जानी थी। इस क्षेत्र में तापमान बहुत कम अर्थात 30 डिग्री सेल्सियस था और 80 किलोमीटर प्रति घंटे की गति से तेज हवाएं चल रही थीं।

19 अप्रैल, 1989 को चुमिक ग्योंगला ग्लेशियर क्षेत्र में तीव्र गति से बिगड़ती जा रही स्थिति को देखते हुए विशेष कृतिक बल के साथ एक प्रेक्षण चौकी अफसर को तैनात करना अनिवार्य सा हो गया था। उस समय एक ऐसे अनुभवी अफसर की आवश्यकता थी जो वहां के मौसम को सहन करने की क्षमता रखता हो। इस कार्य के लिए कैप्टन तेजबंस सिंह चहल को सर्वाधिक उपयुक्त पाया गया। कैप्टन चहल 21 अप्रैल से 07 मई, 1989 तक प्रेक्षण चौकी पर बिना सहायता के तैनात रहे। इन्होंने दुश्मन के ठिकानों का पता लगाया। 21 अप्रैल, 1989 को इन्होंने विशेष रूप से चुमिक और मुसा कैम्पों पर कारगर ढंग से गोलीबारी करके दुश्मन के बहुत से सैनिक हताहत कर दिए।

30 अप्रैल/01 मई, 1989 की रात को जब दुश्मन ने कैम्प पर आक्रमण कर दिया तो कैप्टन चहल ने रात भर अपनी प्रेक्षण चौकी पर रहकर कैम्प के दोनों रास्तों पर कागर ढंग से कार्रवाई करके दुश्मन के हमले को नाकाम करने में महत्वपूर्ण योगदान दिया।

7 मई, 1989 को दुश्मन ने लगभग 1020 बजे हवा में फटने वाला अचूक गोलाबारूद छोड़ा। बारूद की किरच से कैप्टन चेहल की जांघ में गम्भीर चोट लग गई और इनकी जांघ की हड्डी चूर-चूर हो गई। फलत: इनकी जांघ से अत्यधिक खून बहा और इन्हें गहरा आघात पहुंचा। गम्भीर रूप से घायल होने और असहनीय दर्द होने के बावजूद इन्होंने रेडियो सेट का प्रचालन यह निश्चय करके जारी रखा कि दुश्मन यह न जान पाए कि प्रेक्षण चौकी अफसर घायल हो गया है। अन्तत: कैप्टन चेहल को उसी दिन वहां से सुरक्षित स्थान पर ले जाया गया।

इस प्रकार कैप्टन तेजबंस सिंह चेहल ने दुश्मन का मुकाबला करते हुए असाधारण साहस और वीरता का परिचय दिया।

7. 4354617—लांस नायक काम्बोलम कुकी, 7 असम

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख : 28 मई, 1989)

28 मई, 1989 को 7 असम के लांस नायक काम्बोलम कुकी मोटर वाहन से पानी लाने के कार्य के लिए तैनात किए गए थे। इनका वाहन जब श्रीलंका में पोत्तुविल कस्बे के आबादी वाले क्षेत्र में पहुंचा तो उग्रवादियों ने घात लगाकर हमला कर दिया। इनका वाहन सबसे आगे होने के कारण इन्हें तथा इनके वाहन पर सवार अन्य व्यक्तियों को उग्रवादियों के सुनियोजित हमले का प्रहार सहन करना पड़ा। उग्रवादियों की गोलीबारी के कारण इनका एक साथी मारा गया और दूसरे साथी का हथियार भी निष्क्रिय हो गया और लांस नायक कुकी भी घायल हो गए। घायल अवस्था में भी अपनी व्यक्तिगत सुरक्षा की चिन्ता किए बिना लांस नायक कुकी ने न केवल उग्रवादियों को अपने मृत साथी का हथियार छीनने से रोका वरन् इस कार्रवाई के दौरान एक दुर्दान्त उग्रवादी को मार गिराया और उसके हथियार पर कब्जा कर लिया तथा एक अन्य उग्रवादी को भी घायल कर दिया।

इस प्रकार, लांस नायक काम्बोलम कुकी ने उग्रवादियों का सामना करते हुए अनुकरणीय साहस, पहलशक्ति और वीरता का परिचय दिया।

8. कैप्टन आशीष सोनाल (आइ सी-44114), 10 पैरा

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख : 9 जून, 1989)

03 नवम्बर, 1987 को एक प्रहार दल, जिसमें 10 पैरा के कैप्टन (तब सेकण्ड लेफ्टिनेंट) आशीष सोनाल भी शामिल थे, को जाफना प्रायद्वीप के मुतई क्षेत्र में उग्रवादियों के एक गढ़ का सफाया करने का काम सौंपा गया। इस दल ने उग्रवादियों की लाइट मशीन गन की एक टुकड़ी को देखा। कैप्टन आशीष सोनाल अपनी सुरक्षा की जरा भी परवाह किए बिना एक अन्य रैंक के साथ उग्रवादियों की टुकड़ी के करीब पहुंचे और एक उग्रवादी को मार गिराया तथा उसकी हल्की मशीन गन कब्जे में कर ली।

01 मई, 1989 को यह सूचना पाकर कि लगभग तीन उग्रवादी उनकी तरफ आ रहे हैं, कैप्टन आशीष सोनाल ने लांस नायक भूप सिंह यादव के साथ तुरन्त एक सुरक्षित स्थान पर मोर्चा संभाल लिया और उग्रवादियों का मुकाबला करने लगे। दोनों तरफ से हुई गोलीबारी में एक उग्रवादी घटनास्थल पर ही मारा गया। अपने एक साथी के मरने पर अन्य दो उग्रवादी भाग गए। कैप्टन आशीष सोनाल ने लांस नायक भूप सिंह यादव के साथ इनका पीछा किया लेकिन दबाव की स्थिति में दोनों उग्रवादी 01 सिख लाइट इन्फैन्ट्री की घात में आ फंसे और मारे गए। इस कार्रवाई में एक–एक–47 राइफल, चार मैगजीन और कुछ महत्वपूर्ण दस्तावेज भी बरामद किए गए।

05 जून, 1989 को य; सूचना मिलने पर कि उग्रवादी बरानी नार्थ में एक मकान में छिपे हुए हैं, कैप्टन आशीष सोनाल चुपके से अपने जवानों के साथ आगे बढ़े और उग्रवादियों को बिना खबर लगे उक्त मकान से 50 मीटर की दूरी तक पहुंच गए। अचानक सैन्य–दल को अपने समीप देखकर उग्रवादी हैरत में पड़ गए और उन्होंने घटनास्थल से भागने का निश्चय किया।

कैप्टन आशीष सोनाल ने भागते हुए उग्रवादियों पर अचूक गोलाबारी करने का आदेश दिया। फलतः चार उग्रवादी मारे गए और दो हथियार बरामद कर लिए गए।

09 जून, 1989 को चवकचारी नार्थ से अपना एक और अभियान सफलतापूर्वक पूरा करने के पश्चात् बेस को वापस आते समय अचानक इनके गश्ती दल की उग्रवादियों से मुठ-भेड़ हो गई। इस मुठभेड़ में कैप्टन आशीष सोनाल हमेशा की तरह बहादुरी का परिचय देते हुए काफी समय तक उग्रवादियों का मुकाबला करते रहे लेकिन उग्रवादियों की गोली उनके सिर में आ लगी।

इस प्रकार कैप्टन आशीष सोनाल ने उग्रवादियों का मुका-बला करते हुए साहस, असाधारण वीरता और अनुकरणीय नेतृत्व का परिचय दिया।

9. 5748878—लांस नायक बाल बहादुर थापा, 8 गोरखा राइफल्स (मरणोपरांत)

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख : 19 जून, 1989)

श्रीलंका में सेवा के दौरान लांस नायक बाल बहादुर थापा एक गश्ती दल के सदस्य थे। उन्होंने, स्वेच्छा से गश्ती दल का नेता बनना स्वीकार किया और वे गश्ती दल में सबसे आगे रहे। 19 जून, 1989 को रस वीथि के साथ साथ गश्त लगाते हुए उन्होंने तीन युवकों को संदेहास्पद स्थिति में बाड़ पार करते हुए देखा। सदा सजग रहने वाले लांस नायक थापा ने उन्हें पकड़ने के लिए उनका पीछा करना शुरु कर दिया। यह देख कर कि गश्ती दल को उनका पता लग गया है संदिग्ध उग्रवादी बाड़ पर से कूद कर अलग-अलग दिशाओं में दौड़ने लगे। उग्रवादियों को पकड़ने का दृढ़ निश्चय करके लांस नायक थापा ने उनमें से एक उग्रवादी का तेजी से पीछा किया। यह देख कर लांस नायक थापा पीछा करते हुए उसके बहुत निकट आ गए हैं, उग्रवादी ने बचने के लिए एक ग्रेनेड फेंका जो लांस नायक बाल बहादुर थापा के सामने फटा। ग्रेनेड के विस्फोट से विचलित हुए बिना लांस नायक थापा उस उग्रवादी का पीछा करते रहे। मार्ग में एक और उग्रवादी मिल गया। तब दोनों उग्रवादियों ने ए के-47 राइफलों से गोलियां चलानी शुरु कर दीं और लांसनायक थापा पर स्वचालित हथियारों से भारी मात्रा में गोलीबारी की। गोलीबारी की चिन्ता किए बिना लांस नायक थापा ने अपनी राइफल से उन पर जबाबी गोलीबारी की और एक उग्रवादी को वहीं मार गिराया। उग्रवादी की तलाशी लेने पर उसके पास से दो सायनाइड कैप्सूल, आपराधिक सामग्री की दो माइक्रो कैसेट तथा श्रीलंका की मुद्रा में 3,14,663 रुपये बरामद हुए। गोलीबारी के दौरान लांस नायक थापा गंभीर रूप से घायल होने के कारण वे वीरगति को प्राप्त हुए।

इस प्रकार लांस नायक बाल बहादुर थापा ने उग्रवादियों के समक्ष अपनी व्यक्तिगत सुरक्षा की चिन्ता किए बिना असाधारण साहस और वीरता का परिचय दिया।

10. 2877302—राइफलमैन मोहन सिंह, 11 राजपूताना राइफल्स (मरणोपरांत)

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख : 29 जुलाई, 1989)

29 जुलाई, 1989 को श्रीलंका के तन्नियुत् कस्बे में उग्र-वादियों की बार-बार आते जाते रहने की सूचना प्राप्त हुई। तदनुसार एक प्लाटून द्वारा घात लगाकर हमला करने की योजना बनाई गई। घात लगाकर हमला करने वाली प्लाटून में राइ-फलमैन मोहन सिंह नम्बर एक लाइट मशीन गनर थे। चूंकि घात आबादी वाले एक इलाके में लगाई गईथी इसलिए, उग्र-वादियों को लोगों से सैनिकों के वहां उपस्थित होने की सूचना मिल गई। लगभग 12.20 बजे 60 से 80 उग्रवादियों ने इस सैनिक दल पर भारी गोलीबारी शुरु करदी। राइफलमैन मोहन सिंह ने इस हमले का तत्काल जबाब दिया और कारगर गोलीबारी करके उग्रवादियों का सामना करना शुरु कर दिया। गोली-बारी के दौरान उन्होंने अचानक उग्रवादियों के एक दल को समीप ही के एक सेक्शन में घायल पड़े सिपाहियों से हथियार छीनने के लिए आगे आते हुए देखा। अपनी जान के जोखिम की परवाह न कर, अदम्य साहस का परिचय देते हुए वे अपनी मशीनगन के साथ उस क्षेत्र की ओर तेजी के साथ बढ़े और उग्रवादियों पर भारी गोलीबारी की जिससे कई उग्रवादी हताहत हो गए। उग्रवादियों को उनके इस आक्रमण के कारण तेजी से पीछे हटना पड़ा। इस कार्रवाई में उन्हें गोली लग गई और वे वीरगति को प्राप्त हो गए। अपने साथी सिपाहियों का जीवन तथा उनके हथियारों को बचाने के लिए वे वीरतापूर्वक लड़े।

इस प्रकार, राइफलमैन मोहन सिंह ने उग्रवादियों का सामना करते हुए असाधारण साहस और वीरता का परिचय दिया।

11. कैप्टन राजेन्द्र सिंह राणा (आई०सी०-42383), मद्रास रेजिमेंट

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि : 30 जुलाई, 1989)

कैप्टन राजेन्द्र सिंह राणा को सक्रिया पवन के मनार सेक्टर में तैनात किया गया था। 30 जुलाई, 1989 को उनकी कम्पनी को नेदुकन्डाल बांध पर अवाम्पन-अन्दाकुलम सड़क के उत्तर और दक्षिण की ओर प्लाटून तैनात करके घात लगाने का कार्य सौंपा गया था। लगभग 11.15 बजे करीब 50 विद्रोहियों को 400 मीटर की दूरी पर बांध की ओर आते देखा जो इनके ठिकानों की तरफ आगे बढ़ रहे थे। इन्होंने मीडियम मशीन गन से विद्रोहियों पर प्रहार किया। इनके प्रहार से विद्रोही बांध से हट गए और वे बांध की आड़ लेकर इनके ठिकाने के निकट पहुंच गए। विद्रोहियों ने लगभग 40-50 स्वचालित हथियारों और 60 एम० एम० मोर्टारों का विभिन्न दिशाओं से एक साथ ही इस्तेमाल करते हुए प्रभावी ढंग से तेज गोलीबारी प्रारम्भ कर दी। गोलीबारी के दौरान इनके कूल्हे और पेट में गोली लग गई। घायल होने और अत्यधिक रक्तस्राव के बावजूद, ये कार्रवाई का संचालन करते रहे और अपने जवानों को उत्साहित करते रहे। कुछ समय तक स्वयं तोप चलाकर इन्होंने विद्रोहियों पर गोले बरसाए जिससे काफी विद्रोही हताहत हो गए। जब इन्होंने 14.30 बजे 35-40 विद्रोहियों को अपने ठिकाने पर हमले की तैयारी करते हुए उत्तर-पूर्व की ओर

बढ़ते हुए देखा तो आर्टिलरी एवं मोर्टार को उन पर गोली बरसाने का आदेश दे दिया और स्वयं तब तक लड़ते रहे जब तक वह बेहोश होकर गिर नहीं गए कुछ समय के बाद होश आने पर इन्होंने देखा कि जूनियर कमीशन अफसर सहित इनके 14 जवान घायल हो गए हैं। 16.30 बजे के आस-पास इनकी प्लाटून उत्तर, पूर्व और दक्षिण की ओर से बुरी तरह से घिर गई और लगभग 80-100 विद्रोहियों ने इनकी प्लाटून पर दोबारा हमला करने के लिए मोर्चा संभाल लिया। हालांकि ये बुरी तरह घायल हो चुके थे फिर भी रेंगते हुए मीडियम मशीन गन तक पहुंचे और कारगर ढंग से गोली-बारी की। यह गोली-बारी 18.30 बजे तक चली जबकि विद्रोही मैदान छोड़ कर भाग खड़े हुए।

उक्त मुठभेड़ में, जो 7 घंटे तक चलती रही, कैप्टन राजेन्द्र सिंह राणा बुरी तरह से घायल हो चुके थे फिर भी इन्होंने विद्रोहियों का मुकाबला करते हुए असाधारण साहस, पहल शक्ति और सूझबूझ का परिचय दिया जिसके परिणामस्वरूप विद्रोहियों को बुरी तरह कुचल दिया गया। इसमें 52 विद्रोही मारे गए और 32 घायल हुए।

12. 2568506—नायक सी० सुब्बैयन, मद्रास रेजिमेंट (मरणोपरांत)

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख : 30 जुलाई, 1989)

नायक सी० सुब्बैयन "सक्रिया पवन" के दौरान 30 जुलाई 1989 को नेदुनकण्डल बन्द में तैनात चार्ली कम्पनी की 07 प्लाटून 02 मद्रास के सेक्शन कमांडर थे। लगभग 11.30 बजे उनका सेक्शन चारों तरफ से एक साथ 40-50 स्वचालित हथियारों की गोलीबारी की चपेट में आ गया। उन्होंने और उनके सेक्शन ने मिलकर तत्काल जवाबी कार्रवाई की। गोलीबारी के दौरान नायक सुब्बैयन के पैर के निचले भाग में और जांघ में गोली लगने से वे घायल हो गए। घावों से भारी मात्रा में खून बहते रहने के बावजूद वे एक-एक सैनिक के पास जाकर उन्हें शत्रु का डटकर मुकाबला करने के लिए प्रेरित करते रहे। इस दौरान उनके कूल्हे में भी गोली लग गई। लेकिन अपने घावों की परवाह किए बिना वे अपने जवानों का हौसला बढ़ाते रहे। लगभग 1500 बजे तक उनके सैन्य दल के नौ जवान घायल हो गए और स्थिति संकटपूर्ण नजर आने लगी। अपने सेक्शन के एक घायल जवान का प्राथमिक उपचार करते समय उनकी छाती पर भी गोली लग गई। तीन बार गम्भीर रूप से घायल होने के बावजूद, नायक सुब्बैयन मरते दम तक दृढ़ निश्चय, साहस एवं निर्भीक नेतृत्व का परिचय देते हुए लड़ते रहे। सात घंटे तक चली इस कार्रवाई के दौरान वे गंभीररूप से घायल होने के बावजूद तनिक भी विचलित नहीं हुए और अदम्य साहस और वीरता के साथ लड़ते रहे।

इस प्रकार नायक सी० सुब्बैयन ने उग्रवादियों का मुकाबला करते हुए असाधारण साहस एवं वीरता का परिचय दिया।

13. 4265785—सिपाही धामा उरांव 4 बिहार।

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख : 4 अगस्त, 1989)

श्री लंका के रूगम क्षेत्र के घने जंगलों में विद्रोहियों की तलाश करने और उन्हें नष्ट करने के लिए आयोजित "सिल्वर फिश" संक्रिया के भाग के रूप में गठित सहायक सैन्य दस्ते के प्रमुख स्काउट के रूप में 4 अगस्त, 1989 को सिपाही धामा उरांव ने घातक हथियारों से लैस चार विद्रोहियों का मुकाबला किया। इस मुठभेड़ में इन्होंने दो खूंखार विद्रोहियों को अत्यधिक चुनौतीपूर्ण परिस्थितियों में मारकर उच्चकोटि की वीरता का परिचय दिया। शेष दो विद्रोहियों की जबावी गोली-बारी का बहादुरी से मुकाबला करते हुए इन्होंने उन्हें भी गंभीर रूप से घायल कर दिया। बाद में घायल विद्रोहियों की मृत्यु हो गई। बहादुरी के इस कार्य में, सिपाही धामा उरांव ने अपनी व्यक्तिगत सुरक्षा की परवाह किए बिना असाधारण पहलशक्ति अदम्य साहस, धैर्य और दृढ़ संकल्प-शक्ति का परिचय दिया।

इस प्रकार, सिपाही धामा उरांव ने विद्रोहियों का सामना करते हुए अदम्य साहस और वीरता का परिचय दिया।

14. 9415167—लांस नायक तिलक बहादुर राय, 11 गोरखा राइफल्स

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख : 18 अगस्त, 1989)

18 अगस्त, 1989 को श्रीलंका में लगभग 40-50 विद्रोहियों ने एक विशेष मिशन गश्ती दल पर घात लगाकर आक्रमण किया। विद्रोहियों द्वारा चारों ओर से की जा रही गोलीबारी में लांस नायक तिलक बहादुर राय ने देखा कि उनके गश्ती दल के आगे के सभी सैनिक घायल हो गए हैं विद्रोही, राइफलमैन विष्णु प्रसाद राय जो गंभीर रूप से घायल हो गए थे, का रेडियो सेट और 9 एम० एम० कारबाइन को ले जाने का प्रयास कर रहे थे। स्थिति की गंभीरता को देखते हुए लांसनायक राय ने धैर्य से काम लिया और उत्कृष्ट कोटि की वीरता का परिचय देते हुए विद्रोहियों पर टूट पड़े और राइफलमैन विष्णु प्रसाद राय को सुरक्षित स्थान पर लाने के लिए आगे बढ़े। इनके इस साहसिक कार्य से विद्रोही हक्के-बक्के रह गए। लांस नायक राय ने केवल अपने घायल साथी को बचा लाए बल्कि भारी संख्या में विद्रोहियों को हताहत भी कर दिया। इन्होंने विद्रोहियों के हमलों को नाकाम ही नहीं किया बल्कि उन्हें भाग निकलने पर भी मजबूर कर दिया।

इस प्रकार लांस नायक तिलक बहादुर राय ने विद्रोहियों का मुकाबला करते हुए असाधारण साहस और पहल शक्ति का परिचय दिया।

15. 2884459—राइफलमैन नेमी चन्द, 11 राजपूताना राइफलस (मरणोपरांत)

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख : 26 अगस्त, 1989)

श्री लंका में ड्यूटी के दौरान राइफलमैन नेमी चन्द को 26 अगस्त, 1989 को मुलाईट्टिवु से नेंडुनकेनी और वापसी की

एक कानवाय के संरक्षण के लिए उनकी प्लाटून सहित तैनात किया गया था। कानवाय नेंदुनकेनी तक सुरक्षित पहुंच गई थी किंतु नेंदुनकेनी से वापस आते समय विद्रोहियों ने कानवाय पर घात लगाकर आक्रमण कर दिया। विद्रोहियों ने स्व-चालित हथियारों और राकेट लांचरों से भारी गोलीबारी करके कानवाय को उलझाए रखा। राइफलमैन नेमी चन्द और अन्य जवान, जो कानवाय के पीछे संरक्षण वाहन पर सवार थे, संकरा मार्ग होने के कारण अपने वाहन के साथ गोलीबारी की दिशा की ओर आगे नहीं बढ़ पाए। संरक्षण दल के सभी जवान वाहन से कूद पड़े और उन्होंने विद्रोहियों पर गोलीबारी शुरू कर दी। अपनी जान को जोखिम में डालकर राइफलमैन नेगी चन्द निर्भीकता से एक ऐसे वाहन की ओर दौड़ पड़े जिसे विद्रोहियों ने अपने राकेट से आग लगा दी थी। विद्रोहियों के स्वचालित हथियार से राइफलमैन नेमी चन्द की जांघों पर चोट आई और वे जमीन पर गिर पड़े। राइफलमैन नेमी ने अपूर्व साहस का परिचय देते हुए रेंगकर उन पर पीछे से गोली चलादी और तीन विद्रोहियों को घायल कर दिया। इस बहादुर सिपाही के साहसिक कार्य को देखकर विद्रोही मैदान छोड़कर जंगल में भाग निकले। राइफलमैन नेमी चन्द को फील्ड ऐम्बुलेंस बाबुनिया में ले जाया गया परन्तु गंभीर चोट के कारण उन्होंने दम तोड़ दिया। राइफलमैन नेमी चन्द की तीव्र और साहसिक कार्र-वाई से कानवाय में बहुत से भारतीय और श्रीलंका के सैनिकों की जानें बच गईं।

इस प्रकार राइफलमैन नेमी चन्द ने विद्रोहियों का सामना करते हुए अदम्य साहस और वीरता का परिचय दिया।

26. 3988349—पैराट्रूपर पवन कुमार, 10 पैरा

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख : 31 अगस्त, 1989)

31 अगस्त, 1989 को श्रीलंका में जाफना के मावतीपुरम गांव के समीप उग्रवादियों के छिपे होने की सूचना मिलने पर मेजर शिवमान सिंह के नेतृत्व में दो दल तीन वाहनों में सवार होकर उग्रवादियों को खोजने और उनका सफाया करने के अभियान पर चल पड़े। कनकेसंतुरई तल्लीपलाई मार्ग पर मवातीपुरम गांव से गुजरते हुए सड़क के किनारे बने पांच मकानों से एक साथ उग्रवादियों ने इस अभियान दल पर भारी गोली बारी शुरू कर दी। पैराट्रूपर पवन कुमार जिस गाड़ी में सवार थे उसके ड्राइवर को गोली लग गई और गाड़ी घातस्थल पर ही रुक गई। जैसे ही गाड़ी रुकी उग्रवादियों ने उस पर हथगोले फेंकने शुरू कर दिए। पैराट्रूपर पवन कुमार के सिर तथा छाती पर हथगोलों की किरच लगने से वे घायल हो गए। परन्तु उन्होंने घात में फंसी गाड़ी के पीछे जाकर मोर्चा ले लिया और गोलियां चलानी शुरू कर दीं। गाड़ी में सवार 8 सिपाहियों में से चार मारे गए तथा तीन सिपाही गंभीर रूप से घायल हो गए। परन्तु इससे पैराट्रूपर पवन कुमार तनिक भी विचलित नहीं हुए और इन्होंने गोलीबारी जारी रखी, तथा उग्रवादियों को नजदीक नहीं आने दिया। अचानक पैराट्रूपर पवन कुमार को एक उग्रवादी दिखाई दिया जिसने एक दीवार के पीछे मोर्चा संभाल लिया रखा था तथा घात में फंसी गाड़ी में इन के सहयोगियों पर गोलियां चला रहा था। अपनी सुरक्षा की बिल्कुल परवाह न करते हुए ये रेंगते हुए दीवार की ओर बढ़े और उग्रवादी को अपने हथियार से मार गिराया और उससे हथियार छीन लिया। इस प्रकार इन्होंने और सैनिकों को हताहत होने से बचा दिया यद्यपि उग्रवादी संख्या में बहुत अधिक थे परन्तु पैराट्रूपर पवन कुमार की आक्रामक कार्रवाई ने उग्रवादियों को पीछे हटने पर मजबूर कर दिया।

इस प्रकार, पैराट्रूपर पवन कुमार ने उग्रवादियों का सामना करते हुए कुशल नेतृत्व, अदम्य साहस और वीरता का परिचय दिया।

17. कैप्टन आलोक सिंह (आई०सी०—47422) जाट रेजिमैंट

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख : 09 सितम्बर, 1989)

12 जाट रेजिमैंट के कम्पनी कमाण्डर कैप्टन आलोक सिंह ने अपनी कम्पनी सहित 8 और 9 सितम्बर, 1989 को निषेधादेश योजना के एक भाग के रूप में श्रीलंका में अनन्तार पुलियान कुलम और पारिया युयारूसन कुलम में घात लगाकर हमला किया। 09 सितम्बर, 1989 को विद्रोहियों के साथ हुई मुठभेड़ के परिणामस्वरूप, एक महत्वपूर्ण एरिया लीडर और विद्रोही संगठन के अर्थ-प्रबंध सदस्य को बन्दी बना लिया गया और 22 विद्रोहियों को मौत के घाट उतार दिया गया। हमारे सैन्य दलों को कोई नुकसान पहुंचाए बिना 27 कैडरों को हताहत कर दिया गया। मुठभेड़ में इन्होंने धैर्य, साहस और मोर्चा बनाने में कुशल नेतृत्व का परिचय दिया तथा अपने सैन्य दल को पुनः तैनात करने और पुनः संघटित करने में उत्कृष्ट सूझ बूझ दिखाई। अपनी सुरक्षा की परवाह न करते हुए कैप्टन आलोक सिंह एक सेक्शन से दूसरे सेक्शन में जाते रहे और सामने मंडराते हुए गंभीर खतरे का मुकाबला करते हुए अपने सैन्य दल का मार्ग निर्देशन करते रहे। इस कार्रवाई में उनके 2 एम० जी० ग्रुप विद्रोहियों के मुख्य निशाने बन गए और उनकी पुनः तैनाती की आड़ लेते हुए वे खुले मैदान में आ गए और प्वाइंट ब्लैंक रेंज पर उन चार विद्रोहियों को गोली मारकर मौत के घाट उतार दिया जो लाइट मशीन गन ग्रुप को पराजित करने के लिए आगे बढ़ आए थे। अपने लीडर की इस बहादुरी पूर्ण कार्रवाही से प्रेरित होकर सैन्य दल ने नई संकल्प शक्ति के साथ युद्ध किया और बहुत से विद्रोहियों को हताहत किया।

इस प्रकार कैप्टन आलोक सिंह ने विद्रोहियों का मुकाबला करते हुए उत्कृष्ट साहस कुशल नेतृत्व और असाधारण वीरता का परिचय दिया।

18. कैप्टन चन्द्र बल्लभ शर्मा (आई० सी०— 1411) से०मे० इन्फैन्ट्री

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख : 13 सितम्बर, 1989)

13 सितम्बर, 1989 को 10.00 बजे सूबेदार तेजासिंह की ओर से संदेश प्राप्त हुआ कि श्रीलंका में कडाइपरिच्छन के दक्षिण में उनकी प्लाटून की उग्रवादियों से मुठभेड़ हो गई है।

13 सिख लाइट इन्फैन्ट्री की अल्फा कम्पनी के द्वितीय कमान अफसर कैप्टन चन्द्र बल्लभ शर्मा को उनके कम्पनी कमाण्डर से आदेश मिला कि वे अपने तुरन्त कार्रवाई दल के साथ उग्रवादियों पर पूर्व की ओर से आक्रमण करें। जैसे ही कैप्टन शर्मा अपने दल के साथ उग्रवादियों के समीप पहुंचे, उनको पश्चिम दिशा से भारी गोलीबारी का सामना करना पड़ा किन्तु यह बहादुर अफसर भारी गोलीबारी का सामना करते हुए तब तक आगे बढ़ता रहा जब तक उसने उग्रवादियों को देख नहीं लिया। कैप्टन शर्मा ने एक उग्रवादी को भारतीय शांति सेना के एक घायल सिपाही से उसका हथियार छीनने के लिए उसकी ओर बढ़ते हुए देखा। इन्होंने बगल में ही खुले स्थान पर मोर्चा ले लिया जहां से ये उग्रवादी का सामना कर सकते थे। अपनी व्यक्तिगत सुरक्षा की तनिक भी परवाह किए बिना ये बिजली की गति से कार्रवाई करते हुए आगे बढ़े और घायल सिपाही तक पहुंचने का प्रयास कर रहे उग्रवादी को गोली से उड़ा दिया। एक उग्रवादी को मारने के बाद इन्होंने अन्य उग्रवादियों पर गोलीबारी शुरू कर दी जिससे उग्रवादियों पर पूर्व दिशा से भारी दबाव पड़ा। इसके बाद अपनी जगह चार अन्य रैंक के कार्मिकों को तैनात करके स्वयं अन्य रैंक के तीन कार्मिकों के साथ तत्परता से उस घर के पीछे पहुंचने का प्रयास करने लगे जो उग्रवादियों के कब्जे में था। इस कार्रवाई के दौरान इन पर भारी गोलाबारी की गई। एक बार फिर अपनी सुरक्षा की परवाह किए बिना कैप्टन शर्मा आगे बढ़ते रहे और उन उग्रवादियों का सामना करते रहे जो अब हतोत्साहित होकर अपने मृतक और घायल साथियों को वहां से हटाने के प्रयास में अंधा धुंध गोलाबारी कर रहे थे। कैप्टन शर्मा और उनके साथियों की निर्भीक और अविलम्ब कार्रवाई से विद्रोही अपने जीवन की रक्षा के लिए भागने पर मजबूर हो गए।

कैप्टन शर्मा ने वाटर चैनल पार करके भाग रहे उग्रवादियों का साहसपूर्वक पीछा किया जिससे उग्रवादियों को और नुकसान पहुंचा। इस कार्रवाई में सात उग्रवादी मारे गए और छह से अधिक घायल हुए। दो स्वचालित राइफलें और एक रेडियो सेट बरामद किया किया।

इस प्रकार कैप्टन शर्मा ने उग्रवादियों का सामना करते हुए अदम्य साहस और वीरता का परिचय दिया।

19. कर्नल केशव–पिल्लै परमेश्वरन–पिल्लै शशिकुमार (आई० सी०–26641–के), 8 गोरखा राइफल्स (मरणोपरांत)

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख : 21 जनवरी, 1990)

ब्रिगेडियर ए०के० सन्याल, कमांडर 167 इन्फैंट्री ब्रिगेड ने 21 जनवरी, 1990 को कर्नल केशव–पिल्लै परमेश्वरन–पिल्लै शशिकुमार कमांडिंग अफसर 7/8 गोरखा राइफल्स को श्रीलंका में मुख्यालय 2 मद्रास की एक कम्पनी मुहैया कराने का आदेश दे दिया था। उक्त मुख्यालय के आस पास सेना की बहुत से विद्रोहियों के साथ मुठभेड़ हो गई थी और दोनों ओर से भारी गोलीबारी हो रही थी। अपने सैन्य दलों पर आए आसन्न संकट को कम करने और उन विद्रोहियों का सफाया करने, जिन्होंने उस क्षेत्र में स्थित अनेक सिविल मकानों में अपना मोर्चा संभाल रखा था, कर्नल के० पी० शशिकुमार चार्लि कम्पनी 7/8 गोरखा–राइफल के साथ आगे बढ़े। चार्लि कम्पनी 7/8 गोरखा राइफल के अग्रिम पंक्ति के जवानों को 10 से 20 मीटर की दूरी पर स्थित मकानों की पहली लाइन से ही भारी गोलीबारी का सामना करना पड़ा जिसके परिणामस्वरूप दो अन्य रैंकों की घटनास्थल पर ही मृत्यु हो गई और आगे बढ़ने की गति रुक गई। ऐसी स्थिति में कर्नल के० पी० शशिकुमार आगे आए और अपने ग्रुप के साथ धीरे धीरे आगे बढ़ते हुए ऐसे एक मकान के बिल्कुल निकट पहुंच गए जहां से विद्रोही उनके जवानों पर अंधाधुंध गोली बरसा रहे थे और उनके आगे बढ़ने के मार्ग में रुकावट डाल रहे थे। कर्नल के० पी० शशिकुमार अपनी व्यक्तिगत सुरक्षा की बिल्कुल परवाह न करते हुए अपने मुठ्ठीभर जवानों के साथ फौरन विद्रोहियों के ठिकानों तक पहुंच गए। परन्तु जब वे मकान से 2–3 मीटर की दूरी पर थे तो उन पर स्वचालित हथियारों से भारी गोलीबारी हुई और वे मारे गए। अपने कमांडिंग अफसर की साहसिक कार्रवाई से चार्लि कम्पनी 7/8 गोरखा राइफल के जवान बहुत प्रेरित हुए और उन्होंने विद्रोहियों के ठिकाने पर तुरन्त हमला किया जिससे विद्रोही मैदान छोड़कर भागने पर विवश हो गए।

इस प्रकार, कर्नल केशव–पिल्लै परमेश्वरन–पिल्लै शशिकुमार ने विद्रोहियों का मुकाबला करते हुए अदम्य साहस और वीरता का परिचय दिया।

नई दिल्ली, दिनांक 26 जनवरी, 1991

सं० 56–प्रेज/91—राष्ट्रपति, निम्नलिखित व्यक्तियों को उनके वीरतापूर्ण कार्यों के लिए "शौर्य चक्र" प्रदान किए जाने का सहर्ष अनुमोदन करते हैं :—

1. चौधरी हरिमोहन सिंह यादव, कानपुर, उत्तर प्रदेश।

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख : 1 नवम्बर, 1984)।

31 अक्तूबर, 1984 को तत्कालीन प्रधान मंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी की हत्या के बाद जिन शहरों में बड़े पैमाने पर लूटमार, आगजनी और हिंसा हुई उनमें से कानपुर भी एक था। 31 अक्तूबर, 1984 को लगभग 8 बजे कुछ बंगाइयों ने एच० आई० जी० कालोनी रतन लाल नगर को घेर लिया और तोड़फोड़ शुरू कर दी। बंगाइयों का शोर-गुल सुनते ही चौधरी हरिमोहन सिंह यादव अपने घर की छत पर चढ़ गए और बंगाइयों को डराने की दृष्टि से हवाई फायर करने लगे। इनके द्वारा किए गए हवाई फायरों के कारण बंगाइयों को वहां से भागना पड़ा।

01 नवम्बर, 1984 को लगभग 500 सशस्त्र बंगाइयों की भीड़ ने एच० आई० जी० कालोनी, रतनलाल नगर को दुबारा घेर लिया। चौधरी हरिमोहन सिंह यादव अपने पुत्र के साथ अपने घर के सामने वाले मकान की छत पर चढ़ गए और पुनः हवा में गोलियां चलानी शुरू कर दी जिससे निवासियों को कोई क्षति पहुंचाए बिना बंगाई वहां से भाग गए।

इस प्रकार चौधरी हरिमोहन सिंह यादव ने अनुकरणीय साहस और सूझबूझ का परिचय दिया तथा दंगों में लिप्त असामाजिक तत्वों के प्रयासों को विफल करके कई निर्दोष व्यक्तियों के जीवन की रक्षा की और उनकी सम्पत्ति को लूटने से बचाया।

2. श्री मोतीराम रायसिंह सोनावाने, महाराष्ट्र (मरणोपरान्त)

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख : 23 जनवरी, 1988) ।

23 जनवरी, 1988 को महाराष्ट्र के धूले जिले में मांगवी रेंज के वन आरक्षी श्री मोती राम रायसिंह सोनावाने को उस रेंज के आरक्षित क्षेत्र में अनधिकृत रूप से पेड़ काटे जाने की सूचना प्राप्त हुई । वन विभाग का एक छापामार दल, जिसमें श्री रायसिंह भी शामिल थे, कुछ पुलिस कर्मियों के साथ अपराधियों को गिरफ्तार करने के लिए बुपकी गांव के निकट घटनास्थल के लिए चल पड़े । अपराधीगण झाड़ियों और आस-पास के खेतों में खड़ी फसलों में छिपे हुए थे । जैसे ही छापामार दल घटनास्थल पर पहुंचा अपराधी बाहर निकल आए तथा उन्होंने छापामार दस्ते पर चारों ओर से पत्थर फेंकने के साथ-साथ लाठियों और तीरों से हमला कर दिया । यह आक्रमण अचानक एवं अप्रत्याशित था और इसलिए छापामार दस्तों में घबराहट फैल गई । छापामार दस्ते के सभी सदस्यगण जिसमें पुलिस कर्मी भी शामिल थे, अपनी सुरक्षा के लिए भागने लगे किन्तु श्री मोती राम रायसिंह सोनावाने ने दृढ़ता के साथ अपराधियों का मुकाबला किया । संख्या में बहुत कम रहने के कारण अपराधियों ने उन्हें दबोच लिया और उनके पूरे शरीर पर मिट्टी का तेल छिड़क कर उन्हें जीवित जला दिया । जब तक अतिरिक्त सहायता घटनास्थल पर पहुंची तब तक उनकी मृत्यु हो चुकी थी ।

इस प्रकार श्री मोती राम रायसिंह सोनावाने ने जंगल की चोरी करने वालों से मुकाबला करते हुए अदम्य साहस का परिचय दिया और मूल्यवान सरकारी संपत्ति बचाने के लिए अपने जीवन का सर्वोच्च बलिदान किया ।

3. श्री हरनाम सिंह,
कुरुक्षेत्र, हरियाणा ।

4. श्रीमती जसवन्त कौर,
कुरुक्षेत्र, हरियाणा ।

5. श्री खुशदेव सिंह, (मरणोपरान्त)
कुरुक्षेत्र, हरियाणा ।

6. श्रीमती गुरप्रीत कौर, (मरणोपरान्त)
कुरुक्षेत्र, हरियाणा ।

7. श्री गुरदीप सिंह, (मरणोपरान्त)
कुरुक्षेत्र, हरियाणा ।

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख : 9 अप्रैल, 1988) ।

09 अप्रैल, 1988 की रात लगभग 8 बजे एक आतंकवादी ने श्री हरनाम सिंह के घर के मुख्य द्वार से उनके घर में प्रवेश किया और उन्हें आवाज दी । श्री हरनाम सिंह अपनी पत्नी श्रीमती जसवन्त कौर के साथ मकान के आंगन में आए तो उन्होंने देखा कि एक युवा आतंकवादी रिवाल्वर से उनकी ओर निशाना साध रहा है । श्री हरनाम सिंह तुरन्त ही कथित आतंकवादी से भिड़ पड़े और श्रीमती जसवन्त कौर ने उसके केश पकड़ लिए । उसी समय एक और आतंकवादी आंगन में आ गया और उसने ए० के०-47 राइफल से गोलियां चलानी शुरू कर दीं । दो गोलियां श्री हरनाम सिंह के बाएं हाथ में लगी और चार गोलियां श्रीमती जसवन्त कौर के पेट में बाईं ओर लगी । गोलियों की आवाज सुनकर श्री खुशदेव सिंह (श्री हरनाम सिंह के पुत्र), श्रीमती गुरप्रीत कौर (श्री हरनाम सिंह की पुत्र-वधू) और गुरदीप सिंह (श्री हरनाम सिंह के मामे का पुत्र) कमरे से निकल कर आंगन में आ गए और वे उस आतंकवादी से भिड़ पड़े जो ए के-47 राइफल से गोलियां चला रहा था । इस कार्रवाई में श्री गुरदीप सिंह को दो गोलियां उनके पेट में और एक गोली बाएं हाथ की कलाई में लगी । वे मकान के मुख्य द्वार पर ही गिर पड़े और घटनास्थल पर ही उनकी मृत्यु हो गई । श्री खुशदेव सिंह और उनकी पत्नी श्रीमती गुरप्रीत कौर ने भी ए के-47 राइफल से सैस आतंकवादी के साथ हाथापाई की । हाथापाई के के दौरान श्री खुशदेव सिंह और श्रीमती गुरप्रीत कौर आतंकवादी के साथ भिड़ते हुए गली में आ गए । श्री हरनाम सिंह और श्रीमती जसवन्त कौर ने जिस आतंकवादी को पकड़ा हुआ था वह श्रीमती कौर को घसीटता हुआ गली में ले आया । इतने में मकान के मुख्य द्वार पर खड़े तीसरे आतंकवादी ने अपनी ए०के०-47 राइफल से कई बार गोलियां चलाईं । तीसरे आतंकवादी द्वारा चलाई गई गोलियों से श्री खुशदेव सिंह तथा श्रीमती गुरप्रीत कौर के अलावा वह आतंकवादी जिसे श्री हरनाम सिंह एवं श्रीमती जसवन्त कौर ने पकड़ रखा था गंभीर रूप से घायल हो गए जिसके परिणामस्वरूप एक आतंकवादी (जिसे श्री हरनाम सिंह ने पकड़ रखा था) की घटनास्थल पर ही मृत्यु हो गई । बाद में, सिविल अस्पताल, शाहबाद में श्री खुशदेव सिंह व श्रीमती गुरप्रीत कौर की भी चोटों के कारण मृत्यु हो गई ।

इस प्रकार श्री गुरदीप सिंह, श्री खुशदेव सिंह व श्रीमती गुरप्रीत कौर ने बिना किसी हथियार के कट्टर आतंकवादियों से वीरतापूर्वक मुकाबला करते हुए अपने जीवन का सर्वोच्च बलिदान दे दिया । श्रीमती जसवन्त कौर और हरनाम सिंह ने वृद्ध होते हुए भी आतंकवादियों का सामना करते हुए असाधारण सूझबूझ एवं बहादुरी का परिचय दिया और गोलियों से घायल होने के बावजूद इन दोनों ने आतंकवादियों में से एक को दबोचे रखा ।

8. श्री राकेश कुमार, शकूर बस्ती, दिल्ली ।

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख : 8 मई, 1989) ।

08 मई, 1989 को लगभग 8.00 बजे श्री राजेन्द्र सिंह और श्री हरि प्रकाश नामक दो कुख्यात अपराधी राजौरी गार्डन में आभूषणों की एक दुकान में घुस आए तथा उन्होंने 4 व्यक्तियों को घायल कर दिया जिनमें से एक की घटनास्थल पर ही और दूसरे की अस्पताल में मृत्यु हो गई । इससे वहां बहुत शोर-गुल हो गया जिसकी वजह से दोनों अपराधी उस दुकान से बिना कुछ लिए वहां से भाग निकले । श्री राकेश कुमार ने, जो एक निकटवर्ती दुकान पर सेल्समैन के रूप में नौकरी करते हैं, भाग रहे डकैतों का पीछा करना शुरू कर दिया और वे नजफगढ़ रोड के बस स्टाप तक उनके पीछे-पीछे आये । जैसे ही अपराधी दिल्ली परिवहन निगम की एक बस में चढ़े, वे भी उनके पीछे चुपचाप उसी बस में चढ़ गये और दोनों अपराधियों पर नजर रखे रहे । अपराधियों को पकड़वाने के लिए उन्होंने कुछ सहयात्रियों से मदद मांगी किन्तु कोई भी इनकी सहायता के लिए आगे नहीं बढ़ा । तब श्री राकेश कुमार तिलक नगर पुलिस थाने पर बस से उतर गए और इन्होंने ड्यूटी पर तैनात पुलिस कर्मियों से सहायता मांगी । एक हैड कांस्टेबल, एक सिपाही और दो होम गार्ड के जवान श्री राकेश कुमार के साथ चल पड़े और इस दल ने एक जीप में अपराधियों का पीछा किया । जब दोनों अपराधी तिलक नगर में बस से उतर कर एक और बस में चढ़ने का प्रयास कर रहे थे उसी समय श्री राकेश कुमार ने उन्हें धर दबोचा । श्री राकेश कुमार और पुलिस कर्मी उन पर झपट पड़े । श्री राकेश कुमार ने उन अपराधियों में से एक का बैग पकड़ लिया जिसमें से दूसरा अपराधी अपनी पिस्तौल निकालने का प्रयास कर रहा था और इस प्रकार इन्होंने उसके गोली चलाने के प्रयास को विफल कर दिया । अन्ततः इन लोगों ने दोनों अपराधियों पर काबू पा लिया ।

इस प्रकार अपनी जान के गंभीर खतरे के बावजूद इन्होंने दोनों अपराधियों को पहचानने और पकड़वाने में अनुकरणीय साहस और सूझबूझ का परिचय दिया ।

9. 2881613—राइफलमैन सुन्दर सिंह, 15 राजपूताना राइफल्स ।

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख : 19 मई, 1989) ।

18/19 मई, 1989 की रात्रि को विद्रोही नागाओं ने अरुणाचल प्रदेश के तिरप जिले के गांव नोगलों के एक व्यक्ति को जान से मार दिया था । यह सूचना मिलने पर भारत और म्यानमार के बीच अन्तर-राष्ट्रीय सीमा को बन्द करने और सम्देहास्पद गांवों तथा आसपास के क्षेत्रों की पूरी तरह से छानबीन करने के लिए "गहरी चाल" नामक एक विशेष संक्रिया की तैयारी की गई ताकि नागा विद्रोहियों को पकड़ा जा सके ।

उस क्षेत्र में विद्रोहियों की तलाश करने वाली टुकड़ी के कमांडर हवलदार हुकुम सिंह ने राइफलमैन सुन्दर सिंह को प्रधान स्काउट के रूप में कार्य करने के लिए तैनात किया । इस टुकड़ी ने 0530 बजे प्रस्थान किया । जब वे उन विद्रोहियों के ठिकाने के समीप पहुंचे तो विभिन्न दिशाओं से उन पर भारी मात्रा में स्वचालित हथियारों से विद्रोहियों द्वारा प्रभावी एवम् अचूक गोलीबबारी की गई । टुकड़ी के कमांडर को अपने साथियों की जानों के खतरे का आभास होने पर उसने अपने साथियों को विद्रोहियों के घात-स्थान पर टूट पड़ने का आदेश दिया । परन्तु आक्रमण के दौरान राइफलमैन सुन्दर सिंह की बाईं जांघ पर विरोधी की गोली लग गई । इतनी गंभीर चोट लगने के बावजूद इन्होंने विरोधी की घात पर वीरतापूर्वक धावा किया । जब यह टुकड़ी अपनी प्लाटून के साथ जाकर मिली तो राइफलमैन सुन्दर सिंह का प्रथमोपचार किया गया और इन्होंने प्लाटून के साथ फिर से आक्रमण करने का निश्चय किया । जब प्लाटून ने विरोधियों की घात पर दुबारा आक्रमण किया तो राइफलमैन सुन्दर सिंह ने घायल होते हुए भी प्लाटून के साथ फिर आक्रमण में भाग लिया ।

राइफलमैन सुन्दर सिंह ने, जिनकी सेवा के मुश्किल से पांच वर्ष पूरे हुए थे, उग्रवादियों का सामना करने में उच्चकोटि की कर्तव्य-परायणता, बहादुरी तथा अदम्य साहस का प्रदर्शन किया ।

10 श्री मोहित सर्राफ, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली ।

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख : 25 मई, 1989) ।

25 मई, 1989 को दिल्ली विश्वविद्यालय के विधि छात्र श्री मोहित सर्राफ अपने मित्रों के साथ नई दिल्ली रेलवे स्टेशन पर ट्रेन की प्रतीक्षा कर रहे थे । तभी इन्होंने एक अकेली नाबालिग लड़की को प्रथम श्रेणी के प्रतीक्षालय के बाहर बैठे देखा । श्री मोहित अपनी मित्र तलाशा के साथ यह जानने के लिए उस लड़की के पास गए कि वह स्टेशन पर अकेली क्यों बैठी है । उसने बताया कि उसके अपने माता-पिता से कुछ मतभेद हैं तथा वह एक औरत के साथ बम्बई जा रही है जिसे वह "बम्बई वाली आंटी" कह रही थी । उस आंटी ने उसे बम्बई में काम दिलवाने का आश्वासन दिया है । उस लड़की ने यह भी बताया कि बम्बई वाली आंटी उससे कुछ दूर प्लेटफार्म पर सो रही है । इन लोगों को देखकर "बम्बई वाली आंटी" ने उन्हें धमकी दी और उन्हें धमकाने के लिए कुछ गुंडे बुलवा लिए । परन्तु जब मोहित ने पुलिस बुलाने की धमकी दी तो वह आंटी वहां से खिसक गई । मोहित को उस गिरोह के अपराधियों ने धमकी दी कि यदि उसने उस लड़की की सहायता की तो उसे जान से मार दिया जाएगा । परन्तु इन्होंने उन धमकियों की परवाह नहीं की और अपने कुछ मित्रों की सहायता से उस अवयस्क लड़की को इन्द्रप्रस्थ एस्टेट के निकट शंकरपुर में उसके माता-पिता के घर पहुंचा दिया ।

24 जून, 1990 को एक अन्य घटना में श्री सर्राफ ने अपनी होशियारी से पेशेवर धोखेबाजों के एक गिरोह को पकड़वाने में सहायता की जिसके लिए उन्हें पुलिस उपायुक्त, नई दिल्ली द्वारा प्रशस्ति-पत्र प्रदान किया गया ।

पुनः श्री सर्राफ ने 31 अक्तूबर, 1990 को अपनी जान को जोखिम में डालकर चोरों के गिरोह का सफाया करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई ।

इस प्रकार श्री मोहित सर्राफ ने न केवल उत्कृष्ट वीरता का ही परिचय दिया वरन् अनेक अवसरों पर सामाजिक उत्तरदायित्व का एक अनुकरणीय उदाहरण प्रस्तुत किया है ।

11. जी—159885 ओ० ई० एम० सेवा सिंह ।

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख : 10 जुलाई, 1989)

15/16 जून, 1989 को मूसलाधार वर्षा के कारण चान्दुअर सवांग सड़क को भारी क्षति हुई जिससे अग्रिम क्षेत्रों के साथ आवागमन बुरी तरह से प्रभावित हो गया । ऐसी परिस्थितियों में भूस्खलन में दब जाने की संभावना के कारण शिलाखण्ड हटाने का कार्य बहुत जोखिमपूर्ण था । यह सड़क सैन्य संचालन की दृष्टि से महत्वपूर्ण थी, अतः इसे बहुत समय तक बन्द नहीं रखा जा सकता था ।

गम्भीर जोखिम एवं खतरे के बावजूद सीमा सड़क संगठन की 178वीं फार्मेशन कटिंग प्लाटून, वर्तक परियोजना के ओ० ई० एम० सेवा सिंह ने अपने बुलडोजर से सड़क स्वयं साफ करने का स्वेच्छा से निश्चय किया । इन्होंने लगातार वर्षा, गहरी धुंध और ऊपर से गिरते हुए शिलाखण्डों के बीच प्रतिदिन 16 से 18 घन्टे तक काम किया। 10 जुलाई, 1989 को दुर्भाग्यवश फिर एक भारी भूस्खलन हुआ जिससे सड़क अवरुद्ध हो गई । एक विशाल शिलाखण्ड सड़क पर गिरा जिसे विस्फोट के उपरांत ही डोजर से साफ किया जा सकता था । लगातार वर्षा तथा विस्फोट के झटकों के कारण पहाड़ों से और अधिक शिलाखण्डों के गिरने की आशंका थी ।

गम्भीर जोखिम के बावजूद सड़क को साफ करने की कारवाई शुरू की गई । दुर्भाग्यवश एक भारी भूस्खलन हुआ जिसमें सारा दल दब गया । ओ० ई० एम० सेवा सिंह को मलबे से बाहर निकाला गया क्योंकि ये आंशिक रूप से दबे हुए थे । बचाव के तुरन्त बाद इन्हें ध्यान आया कि इनके अन्य सहयोगी अभी भी मलबे में दबे पड़े हैं । उन्होंने एक क्षण भी नष्ट किए बिना न केवल डोजर को बाहर निकाला वरन् डेढ़ घंटे तक कार्य कर मलबे में दबे लोगों को भी बाहर निकाल लिया ।

इस प्रकार ओ० ई० एम० सेवा सिंह ने अपनी जान को जोखिम में डालकर अपने डोजर और कई सहयोगियों के प्राणों की रक्षा कर उत्कृष्ट वीरता और कर्तव्य के प्रति असाधारण निष्ठा का परिचय दिया ।

12. श्री जुरन कुमार बनर्जी, ईसापुर, पश्चिम बंगाल ।

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख : 6 अगस्त, 1989) ।

तीन डकैतों का एक गिरोह 6 अगस्त, 1989 को 9 अप डून एक्सप्रेस में डकैती करने के उद्देश्य से उस पर सवार हुआ। डून एक्स-प्रेस के हावड़ा स्टेशन से रवाना होने के तुरन्त बाद इस गिरोह ने प्रथम श्रेणी के डिब्बे में बैठे यात्रियों पर हमला बोल दिया । उस डिब्बे में मेटल एण्ड स्टील फैक्ट्री, ईसापुर के कर्मचारी श्री जुरन कुमार बनर्जी सपरिवार यात्रा कर रहे थे । डकैतों ने बन्दूक की नोक पर यात्रियों का कीमती सामान लूटना शुरू किया ही था कि श्री बनर्जी अनुकरणीय साहस प्रदर्शित करते हुए अपने दोनों पुत्रों की सहायता से सशस्त्र डकैतों पर झपटे और अपनी चोटों की परवाह किए बिना उनसे निरन्तर लड़ते रहे । अंततः ये उनमें से एक डकैत पर काबू पाने में सफल रहे जिसे इन्होंने स ाथ रेलवे सुरक्षा बल, श्रीरामपुर के हवाले कर दिया

श्री जुरन कुमार बनर्जी ने अपने प्राणों को गम्भीर खतरे में डालते हुए चलती गाड़ी में एक सशस्त्र डकैत को पकड़कर अदम्य साहस का परिचय दिया ।

13. 14328128—हवलदार रतन लाल राजबंगशी, आर्टिलरी (मरणोपरान्त)

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख : 31 अगस्त, 1989) ।

31 अगस्त, 1989 को प्रातः करीब 08.30 बजे एक जंगली दुष्ट हाथी सोलमारघाट छावनी क्षेत्र में घुस गया और रास्ते में आने वाले सभी व्यक्तियों का पीछा करने लगा । वह तीन अन्य हाथियों के साथ जंगल से बाहर आया था और उसने सोलमारघाट तेजपुर की मुख्य सड़क पर चलना शुरू कर दिया ।

हवलदार रतन लाल राजबंगशी भी इसी सड़क पर एक हल्के सैन्य वाहन से दो स्त्रियों और दो बच्चों को चिकित्सा उपचार के लिए 155 बेस अस्पताल ले जा रहे थे । इस वाहन को देखते ही हाथी इसकी ओर दौड़ा । हवलदार राजबंगशी ने तुरन्त अपना वाहन रोक दिया और हाथी का ध्यान अपनी तरफ आकर्षित करने के लिए वे वाहन से बाहर आ गए । तत्पश्चात् उन्होंने हाथी को किसी तरह वाहन से दूर ले जाने के लिए वहां से भागना शुरू कर दिया ताकि हाथी से स्कूल के बच्चों, और वाहन में बैठी स्त्रियों की जान बचाई जा सके । हाथी का ध्यान हवलदार राजबंगशी की तरफ चला गया और हाथी ने उनके पीछे दौड़ना शुरू कर दिया । अपने जीवन और व्यक्तिगत सुरक्षा की परवाह किए बिना हवलदार राजबंगशी ने सड़क पर दौड़ना जारी रखा और भागते-भागते कभी-कभी पीछे मुड़कर इस आशा में देखते रहे कि हाथी उनकी तरफ दौड़ते-दौड़ते छावनी क्षेत्र से बाहर हो जाएगा । दुर्भाग्य से यह प्रयास कुछ ही दूरी तक सफल रहा और जल्दी ही हाथी ने हवलदार राजबंगशी को अपनी सूंड में पकड़ लिया और उन्हें जोर से जमीन पर पटक दिया और अपने पैरों तले कुचल दिया । उन्होंने तत्काल दम तोड़ दिया । उसके बाद हाथी क्रोधोन्माद में छावनी क्षेत्र से दूर भाग गया ।

इस प्रकार हवलदार रतन लाल राजबंगशी ने अपनी सूझबूझ और उत्कृष्ट बहादुरी का परिचय दिया तथा दूसरे के जीवन की रक्षा के लिए अपने जीवन का बलिदान किया ।

14. 731119559—हैड कांस्टेबल कुनीहो सेमा, सीमा सुरक्षा बल (मरणोपरान्त)

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख : 01 सितम्बर, 1989) ।

01 सितम्बर, 1989 को 02.45 बजे स्वयंभू मेजर रामकार्थिंग के नेतृत्व में 50 भूमिगत उग्रवादियों ने मणिपुर के उखरूल जिले में सीमा सुरक्षा बल की "लानिये ब्रिज" चौकी पर हमला कर दिया । हैड कांस्टेबल कुनीहो सेमा कंपनी हवलदार मेजर की ड्यूटी कर रहे थे। गोलाबारी की आवाज सुनने पर वे अपने बिस्तर से उठ बैठे और उन्होंने जोर से आवाज देकर अपने जवानों को सुरक्षात्मक मोर्चा लेने और उग्रवादियों पर गोली चलाने का आदेश दिया । सिपाहियों को अपने अपने मोर्चों पर तैनात कर वे स्वयं शस्त्रागार की तरफ दौड़ कर गए तथा गोलाबारूद बंकर का दरवाजा खोलने में शस्त्रागार के पदाधिकारी की सहायता की, इसके बाद उन्होंने अपने सिपाहियों को शस्त्र/गोला-बारूद दिए । उन्होंने गोला-बारूद का एक बक्सा स्वयं उठाया और शस्त्रागार तक रेंग कर पहुंचे और एक राइफल उठाई तथा अपने सिपाहियों को उग्रवादियों का खात्मा होने तक लड़ते रहने का आदेश दिया। उग्रवादियों पर गोली चलाते-चलाते अपनी जान की परवाह किए बिना वे भारी गोलाबारी में भी बंकर की ओर दौड़ पड़े । जब वे बंकर से दो गज की दूरी पर थे तो उनके पेट में गोली लग गई जिससे वे गिर गए और वीर गति को प्राप्त हुए ।

इस प्रकार हैड कांस्टेबल कुनीहो सेमा ने उग्रवादियों से लड़ने में अदम्य साहस का परिचय दिया अपने जीवन का बहुमूल्य बलिदान दिया ।

15. श्री एच० बासवानी, जिला—शिमोगा, कर्नाटक । (मरणोपरान्त)

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख : 29 अक्तूबर, 1989) ।

कर्नाटक के शिमोगा मंडल में वन रक्षक श्री एच० बासवानी अपनी जान को भारी जोखिम में डालकर और अन्ततः अपने प्राण गंवाकर चन्दन की लकड़ी के अनेक तस्करों को रोकने में सहायक सिद्ध हुए । 29 अक्तूबर, 1989 को दिन में लगभग 01.00 बजे पूर्व सूचना पाकर श्री बासवानी ने चन्दन की लकड़ी के तस्करों को पकड़ने के लिए शिरालोफा रेंज में सुब्राडकोप्पा चिकजम्बूर सड़क पर एक अवरोध खड़ा कर दिया । जब तस्करों की कार तेजी से चिकजम्बूर की तरफ जा रही थी तो श्री बासवानी ने कार रोकने के लिए चेतावनी स्वरूप गोली चलाई परन्तु वे दुःसाहसी तस्कर नहीं रुके । यह देख श्री बासवानी बाहर निकल आये तथा गाड़ी को रोकने के लिए अवरोध के पास खड़े हो गए । लेकिन उनकी बहादुरी काम नहीं आई क्योंकि तस्करों ने अवरोधक को गाड़ी से तोड़ दिया तथा श्री बासवानी के ऊपर से कार चला दी । गम्भीर रूप से घायल होने के कारण बाद में 06 नवम्बर, 1989 को श्री बासवानी की अस्पताल में मृत्यु हो गई ।

इस प्रकार श्री बासवानी ने अपने प्राणों की आहुति देकर अनुकरणीय साहस एवं उत्कृष्ट कर्तव्य-परायणता का परिचय दिया ।

16. कैप्टन वीरेन्द्र कुमार यादव (आई० सी०—35527), आर्टिलरी

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख : 11 नवम्बर, 1989) ।

कैप्टन वीरेन्द्र कुमार यादव 11 नवम्बर, 1989 को नार्थ-ईस्ट एक्सप्रेस द्वारा नई दिल्ली से रंगिया जा रहे थे । फाकुंव के निकट करीब 4000 कालेज छात्रों की उत्तेजित भीड़ ने रेलगाड़ी को रोक कर उसका घेराव कर लिया । उत्तेजित भीड़ ने रेलगाड़ी पर हमला कर दिया और 2 टीयर वातानुकूल कक्ष को क्षति पहुंचानी शुरू कर दी, जिसमें कैप्टन वीरेन्द्र कुमार यादव यात्रा कर रहे थे । अपनी सुरक्षा की परवाह किए बिना ये अपने कक्ष से बाहर आए और बड़े धैर्य से भीड़ को शांत किया तथा डब्बे को क्षति पहुंचाने से रोका । अचानक एक सिख युवक डिब्बे में बाहर आ गया । भीड़ सिख व्यक्ति को देखकर फिर आक्रोश में आ गई तथा उस पर हमला कर दिया । वह व्यक्ति जमीन पर गिर गया । कैप्टन वीरेन्द्र कुमार यादव घटनास्थल की ओर दौड़े और उसको उत्तेजित भीड़ से बचाया । बाद में पता चला कि वह व्यक्ति सीमा सुरक्षा बल का हवलदार था। इस घटनाक्रम में स्वयं कैप्टन यादव को भी चोटें आईं । तत्पश्चात् इन्होंने इसी गाड़ी में यात्रा करने वाले चार अन्य सैन्य कार्मिकों को एकत्र किया और उन्हें बुरी तरह से घायल उस व्यक्ति की रक्षा के लिए सन्तरी के रूप में तैनात कर दिया । उसके बाद उत्तेजित भीड़ ने रेल के एक डिब्बे में आग लगा दी जिसमें एक विशेष सम्प्रदाय से सम्बद्ध फलसेना के कार्मिकों सहित बीस व्यक्ति फंस गये । यह देखकर कैप्टन यादव अपने घावों की परवाह किए बिना यात्रियों को बचाने का प्रयास करने लगे । भीड़ इन्हें डिब्बे में घुसने नहीं दे रही थी, लेकिन अपने अदम्य साहस और दृढ़ संकल्प के कारण, बलपूर्वक ये जलते डिब्बे में घुस गए । इन्होंने फंसे हुए व्यक्तियों की मदद से उस डिब्बे की छत तोड़ दी और ऊपर की टंकी से पानी को जलते हुए डिब्बे में बहा दिया । पानी के तेज प्रवाह के कारण अन्ततः आग बुझ गई । इसीबीच पुलिस घटनास्थल पर पहुंच गई और कैप्टन यादव ने पुलिस की मदद से भीड़ को तितर बितर कर दिया । तत्पश्चात्, इन्हों

घायलों के लिए चिकित्सा की व्यवस्था की । बुरी तरह से घायल सेना के पांच कार्मिकों को भी स्वयं कानपुर के एयर फोर्स बेस अस्पताल में पहुंचाया । सिविलियनों को भी सिविल अस्पताल में पहुंचाया गया।

इस प्रकार कैप्टन वीरेन्द्र कुमार यादव ने अपने जीवन को भारी जोखिम में डालते हुए प्रदम्य साहस का परिचय दिया ।

17. जी–58052—ओ ई एम भैरों कोहरी

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख : 19 जनवरी, 1990)

सीमा सड़क संगठन की हिमांक परियोजना की 168वीं फार्मेशन कटिंग प्लाटून केयर 113 सड़क निर्माण कम्पनी के ओ० ई० ए० भैरों कोहरी को जनवरी 1990 में लद्दाख क्षेत्र में लेह–खलसार मार्ग पर बर्फ हटाने का काम सौंपा गया । यह मार्ग सामरिक एवं युद्ध की दृष्टि से अति महत्वपूर्ण है । यह मार्ग 18,380 फुट की ऊंचाई पर खारडुंगला से होकर जाता और मोटरगाड़ियों के आने-जाने के लिए विश्वभर में सबसे अधिक ऊंचाई पर है। इसे शरद ऋतु में भी खुला रखना पड़ता है जब इस पर 30 फुट गहरी बर्फ जम जाती है और तापमान शून्य से 40 सें० तक नीचे गिर जाता है ।

18–19 जनवरीर 1990 की रात को लेह और खारडुंगला के बीच के मार्ग में मौसम का सर्वाधिक हिमपात हुआ जिससे मार्ग अवरुद्ध हो गया। ऐसी स्थिति में ओ० ई० एम० भैरों कोहरी पर बर्फ हटाने की जिम्मेवारी सौंपी गई। बर्फ पड़ते रहने और कम प्रकाश से भी इन्होंने बर्फ हटाने का काम शुरू किया । ये जानते थे कि सड़क पर भारी भू-स्खलन और हिमस्खलन का खतरा है फिर भी वे निर्भीक होकर अपना काम करते रहे। जब ये 25 फुट से अधिक मोटी बर्फ हटाने में लगे हुए थे तो पहाड़ी से एक भारी हिमखण्ड गड़गड़ाहट करता हुआ नीचे आ गिरा और उसके नीचे भैरों कोहरी तथा डोजर समेत पूरा दल दब गया। कठिन परिश्रम और असाधारण साहस के बल पर ये सहायक इंजीनियर (सिविल) राजपाल सिंह राणा के साथ बर्फ से बाहर निकल आए । इन्होंने सड़क से नीचे गर्दन तक बर्फ में फंसे कुछ अन्य पाइनियरों को भी बचा लिया । इसके अलावा इन्होंने अपना डोजर भी बचा लिया और समय नष्ट किए बिना सड़क साफ करने के लिए तत्काल डोजर चलाने में लग गए। भीषण बर्फानी तूफान और प्रतिकूल मौसम का मुकाबला करते हुए और सड़क पर निरन्तर अपनी जान को जोखिम में डालकर इन्होंने उसी दिन 1700 बजे तक सड़क से बर्फ हटाने के असंभव कार्य को कर दिखाया ।

इस प्रकारर ओ०ई० एम० भैरों कोहरी ने अपनी जान भारी जोखिम में डालकर यातायात व्यवस्था बनाए रखने में असाधारण साहस, दृढ़ निश्चय, धैर्य और उच्च कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

18. 628814-के—कारपोरल संतोष कुमार वाजपेयी, (मरणोपरान्त) यांत्रिक परिवहन ड्राईवर

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख : 30 जनवरी 1990)

30 जनवरी, 1990 को कारपोरल संतोष कुमार वाजपेयी को, जो वायुसेना की सिगनल यूनिट में थे, एक अन्य वायुसेना स्टेशन पर अस्थायी ड्यूटी के लिए भेजा गया था। काम पूरा होने के बाद रंगपाड़ा लौटने के लिए वह एक बस पर 1330 बजे सवार हुए । उसी दिन लगभग उसी समय उग्रवादियों के एक सशस्त्र गिरोह ने स्टेट बैंक आफ इंडिया, रंगपाड़ा से लगभग एक करोड़ रुपए लूट लिए । इन उग्रवादियों को रंगपाड़ा से लगभग तीन किलोमीटर दूर बरजुल्ली पी० डब्ल्यू० डी० रोड पर अपने लूट के सामान के साथ रुकना पड़ा क्योंकि जिस वाहन से वे वहां से भागे थे वह वहां खराब हो गया था। इसी समय कारपोरल वाजपेयी और अन्य यात्री जिस बस में सवार थे वह उस स्थल पर पहुंची। सशस्त्र उग्रवादियों ने जिनकी संख्या लगभग सात थी बन्दूक के बल पर बस रुकवा दी और ड्राइवर को वापिस चलने को कहा तथा यात्रियों को भी बस से नीचे उतरने के लिए कहा । कारपोरल वाजपेयी उग्रवादियों का अभिप्राय समझ गए कि वे बस का प्रयोग भाग निकलने के लिए करना चाहते हैं। वह साहसपूर्वक आगे आए और उन्होंने बस से नीचे उतरने से अस्वीकार कर दिया जबकि अन्य यात्री डर कर उतर गए। उन्होंने ड्राइवर को बस रंगपाड़ा ले जाने के लिए कहा । कारपोरल वाजपेयी ने सशस्त्र उग्रवादियों की बात मानने से इन्कार कर दिया जबकि अन्य सभी यात्री मूक दर्शकों की भांति देखते रहे और उग्रवादियों के आदेशों का अनुपालन करते रहे परन्तु कारपोरल वाजपेयी द्वारा आज्ञा का पालन न किए जाने के कारण क्रोधित होकर एक उग्रवादी ने बिल्कुल नजदीक से गोली चलाकर उनको मार दिया। दूसरे उग्रवादी ने बस के अन्दर अन्धाधुन्ध गोलियां चला दीं । इसी बीच दुर्घटना स्थल से एक मोटर साइकिल और एक मोपेड गुजर रही थी । इसी भगदड़ के बीच उग्रवादियों ने बन्दूक की नोक पर रोक कर इन दोनों वाहनों को छीन लिया और पांच उग्रवादी उन पर बैठकर भाग गए जबकि बाकी दो वाय प्रागानों के बीचों-बीच होकर भाग गए। पुलिस ने दुर्घटना स्थल पर खराब हुई कार में से 73 लाख रुपए बरामद किए । घायल यात्रियों और कारपोरल वाजपेयी के शव को उसी बस से रंगपाड़ा रेलवे अस्पताल लाया गया।

यदि कारपोरल वाजपेयी अपने जीवन को खतरे में डालकर उग्रवादियों का बहादुरी से मुकाबला न करते तो उग्रवादी लूट का माल लेकर चम्पत हो जाने में सफल हो जाते । अतः, कारपोरल संतोष कुमार वाजपेयी ने उत्कृष्ट वीरता का प्रदर्शन करते हुए जनहित में अपने प्राणों का बलिदान दिया ।

19. श्रीमती साधना पवार, महाराष्ट्र

20. श्रीमती नीला सावंत, महाराष्ट्र

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख : 14 फरवरी, 1990)

14 फरवरी, 1990 को श्रीमती साधना पवार (कुमारी साधना चारस्कर) और श्रीमती नीला सावंत (कुमारी नीला पाटिल) बम्बई से बंगलौर तक जाने वाले विमान आई० सी० 605 में वायुयान परिचारिका के रूप में कार्यरत थी । उतरते समय विमान जमीन को छू गया और साधना और नीला बाहर नहीं देख पाई । उन्हें लगा कि विमान सामान्य रूप से उतर रहा है। इसके तुरन्त बाद जमीन पर दूसरी बार भारी टक्कर होने की आवाज आई । विमान उस समय भी गतिशील था, अतः साधना ने अपनी जगह से बाहर देखने की कोशिश की । तब तक विमान तीसरी बार जमीन से टकराया और दलदल में आकर रुक गया । श्रीमती साधना ने देखा कि धुएं का गुब्बार उठ रहा है और विमान के अगले हिस्से में आग लगी है । जमीन पर विमान में हुए धमाके के कारण उसके पास बैठी उसकी सहयोगी नीला अपनी सीट से अलग गिर गई । साधना ने नीला से चिल्लाकर यात्रियों को बाहर निकालने के लिए कहा क्योंकि विमान पूरी तरह से आग और धुएं की चपेट में आता जा रहा था । इसी बीच साधना ने विमान के बाईं ओर का पिछला दरवाजा खोल दिया । साधना और नीला ने विमान के इस दरवाजे से बाहर निकलने में यात्रियों की मदद की । यात्री डर और घबराहट के कारण शिथिल पड़ गए थे । साधना और नीला के बार–बार चिल्लाने पर यात्री खुले दरवाजे तक पहुंच पाए । यात्रियों को चोटें आई थीं और वे घायल हो गए थे इसलिए दोनों विमान परिचारिकाओं ने बाहर निकालने में उनकी मदद की । साधना ने पानी के लिए चीख रहे घायल यात्रियों को पानी पिलाया और अन्य यात्रियों की भी सहायता की ।

बाद में स्थानीय व्यक्तियों की सहायता से घायल यात्रियों को अस्पताल ले जाया गया । साधना और नीला जो स्वयं भी घायल थीं यह सुनिश्चित करने के पश्चात् ही कि सभी यात्री आकर बस में बैठ गए हैं, बस में चढ़ी ।

इस प्रकार श्रीमती साधना पवार और श्रीमती नीला सावंत ने अपनी जान को भारी जोखिम में डालकर अनुकरणीय कर्तव्यपरायणता एवं साहस का परिचय दिया ।

21. 2683938-ग्रेनेडियर रमेश सिंह, 15 ग्रेनेडियर्स (मरणोपरांत)

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख : 3 अक्तूबर, 1990)

03 अक्तूबर, 1990 को "ए" कम्पनी के ग्रेनेडियर रमेश सिंह को एक संयुक्त दल के सदस्य के रूप में तैनात किया गया था जिसे जुमागुंड (जम्मू और कश्मीर) के जंगलों में छिपे राष्ट्रविरोधी तत्वों को पकड़ने/समाप्त करने का काम सौंपा गया था। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए संयुक्त दल को सहायक और आक्रमणकारी नामक दो ग्रुपों में बांट दिया गया। ग्रेनेडियर रमेश सिंह आक्रमणकारी ग्रुप में थे। इस ग्रुप को, आगे बढ़ने की कार्रवाई के दौरान सहायक ग्रुप के सभी ठिकाने में पहुंचने तक उसे संरक्षण प्रदान करने का अतिरिक्त काम भी सौंपा गया था ताकि वह राष्ट्रविरोधी तत्वों को कारगर ढंग से उलझाए रख सके। सही ठिकाने की ओर आगे बढ़ने की कार्रवाई के दौरान सहायक ग्रुप राष्ट्रविरोधी तत्वों की भारी व प्रभावी गोलीबारी की चपेट में आ गया। जब ग्रेनेडियर रमेश सिंह ने यह देखा कि सहायक ग्रुप का आगे बढ़ना बहुत ही मुश्किल हो गया है तो वे राष्ट्रविरोधी तत्वों को समाप्त करने की उत्कृष्ट लालसा से अपनी जान की बिल्कुल परवाह किए बिना अपनी लाइट मशीन गन सहित एक ठिकाने से दूसरे ठिकाने की ओर बढ़ते रहे। इस कार्रवाई में उन्होंने दो राष्ट्रविरोधी तत्वों को मार गिराया और एक को घायल कर दिया। इसी दौरान जब वे एक ठिकाने से दूसरे ठिकाने की ओर जा रहे थे तो उन्हें एक गोली लग गई तथा उनकी मृत्यु हो गई। इस प्रकार उन्होंने देश की सेवा में अपने प्राणों को न्यौछावर कर दिया।

ग्रेनेडियर रमेश सिंह ने असाधारण साहस और उच्चकोटि के साहचर्य का परिचय दिया।

22. 4251263-हवलदार चन्द्रमा सिंह बिहार रेजिमेंट (मरणोपरान्त)

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख : 23 अक्तूबर 1990)

एक इन्फैन्ट्री ब्रिगेड के अधीन कार्यरत 14 बिहार का 19 अक्तूबर, 1990 से पूरा करीमपुर सामान्य क्षेत्र में प्रशिक्षण चल रहा था। 23 अक्तूबर, 1990 को बटालियन में एक पैदल गश्ती दल की आतंकवादियों से मुठभेड़ हो गई। आतंकवादियों के विरुद्ध कार्रवाई प्रारम्भ की गई और अंत में उनका सफाया कर दिया गया। हवलदार चंद्रमा सिंह, कैप्टन राकेश राणा के नेतृत्व वाली द्रुत कार्रवाई टीम में शामिल थे। आतंकवादियों को बाहर निकालने के लिए किए गए हमले के दूसरे चरण में इस वीर गैर-कमीशन-प्राप्त अफसर ने, व्यक्तिगत उदाहरण प्रस्तुत कर अपने साथियों को आगे बढ़ने के लिए प्रेरित किया। लड़ाई के दौरान हवलदार चन्द्रमा सिंह ने देखा कि दो आतंकवादी पूर्व की ओर भागने का प्रयास कर रहे हैं। उसी समय उन्होंने सायक सूबेदार देवेन्द्र सिंह को भी घायल होते देखा। वे तत्काल आगे की ओर झपटे और कुछ भागते हुए और कुछ रेंगते हुए घायल कनिष्ठ कमीशन-प्राप्त अफसर के पास पहुंचे। उन्होंने लाइट मशीनगन को अपने कब्जे में ले लिया तथा कनिष्ठ कमीशन-प्राप्त अफसर को सुरक्षित स्थान पर धकेल दिया। इसके बाद अपनी अचूक गोलीबारी से उन्होंने आतंकवादियों की बचकर भाग निकलने की योजना को विफल कर दिया। गोलीबारी के दौरान गोली चलाने के लिए उपयुक्त स्थान पर पहुंचने के प्रयास में हवलदार चन्द्रमा सिंह की कमर में गोली लगी। घायल अवस्था में भी वे अद्भुत साहस के साथ अचूक गोलियां दागते रहे। इसी बीच आतंकवादी एक नम्बर कुटीर तक पहुंच गए जहां कमान अफसर की गोली से आतंकवादी का हथियार गिर गया था। हमसे पहले कि आतंकवादी उस हथियार को दुबारा उठाए कमान अफसर उसे अपने कब्जे में लेना चाहते थे। उसी समय हवलदार चन्द्रमा सिंह ने अपने साथी सिपाही दुर्गा चरण उरांव को हथियार उठाकर लाने के लिए प्रोत्साहित किया तथा घावों की असहनीय पीड़ा के बावजूद वे तब तक अचूक गोलियां चलाते रहे जब तक कि सिपाही दुर्गा चरण उरांव ने अपना काम पूरा न कर लिया। अंततः 27 अक्तूबर, 1990 को हवलदार चन्द्रमा सिंह की मृत्यु हो गई।

इस प्रकार हवलदार चन्द्रमा सिंह ने आतंकवादियों के आयोजित हमले का सामना करते हुए अपने उत्कृष्ट साहस से अपने साथियों को जीवन के अंतिम क्षण तक प्रेरित किया तथा अपने जीवन का बलिदान कर दिया।

23. 4261170-सिपाही दुर्गा चरण उरांव, 14 बिहार (मरणोपरांत)

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख : 23 अक्तूबर, 1990)

एक इन्फैन्ट्री ब्रिगेड के अधीन, 14 बिहार का 19 अक्तूबर, 1990 से बल्टोहा सामान्य क्षेत्र में प्रशिक्षण चल रहा था। 23 अक्तूबर 1990 को पूरा करीमपुर गांव में बटालियन के गश्ती दल की आतंकवादियों से मुठभेड़ हो गई। सिपाही दुर्गा चरण उरांव अफसर मेस में ड्यूटी पर थे। उन्होंने जब सुना कि आतंकवादियों का मुकाबला करने के लिए द्रुत कार्रवाई टीम को सतर्क किया गया है, सो वे भी तुरन्त अपना हथियार उठाकर ट्रक में चढ़ गए। वे कैप्टन राकेश राणा के नेतृत्व वाली द्रुत कार्रवाई टीम में शामिल थे। आतंकवादियों को बाहर निकालने के लिए किए गए हमले के दूसरे चरण में जब सिपाही उरांव उत्तरी-पूर्वी क्षेत्र की ओर से आगे बढ़ने की कोशिश कर रहे थे तो आतंकवादियों ने भाग निकलने का प्रयास किया। उन्होंने देखा कि हवलदार चन्द्रमा सिंह और नायब सूबेदार देवेन्द्र कुमार, जो उनकी दायीं तरफ से लाइट मशीनगन चला रहे थे, घायल हो गए हैं। सिपाही उरांव घायल कनिष्ठ कमीशन प्राप्त अफसर के पास पहुंचे, उसके हाथ से लाइट मशीनगन ले ली और आतंकवादियों पर गोली चलानी प्रारम्भ कर दी ताकि वे भाग न सकें। इसी बीच कमान अफसर की अचूक गोलीबारी के कारण एक आतंकवादी के हाथ से उसका हथियार नीचे गिर गया। कमान अफसर के संकेत पर सिपाही उरांव रेंगते हुए आतंकवादी की एके-47 राईफल तक पहुंचे और उसे उठा लिया। वे शेष कार्रवाई में शामिल होने के अवसर से चूकना नहीं चाहते थे, इसलिए अपनी लाइट मशीन गन के साथ पुनः वे राकेश राणा के दल में शामिल हो गए। जब सिपाही उरांव उस ग्रुप में शामिल हुए तब केवल दो आतंकवादियों को खत्म करना शेष था। यद्यपि उनके सिर के ऊपर से गोलियां चल रही थीं, सिपाही उरांव अफसर के साथ आगे बढ़ते रहे और बार-बार आतंकवादियों पर गोलियों की बौछार भी करते रहे। उन्होंने अपनी सुरक्षा की चिन्ता न करते हुए, सावधानी पूर्वक निशाना साध कर गोली चलाई और एक आतंकवादी को वहीं ढेर कर दिया। जब वे अपनी बन्दूक की मैगजीन बदल रहे थे, तो एक गोली उनके सिर में आ लगी और वे वीर गति को प्राप्त हुए।

सिपाही दुर्गा चरण उरांव ने आतंकवादियों का मुकाबला करने में, अदम्य साहस का परिचय देते हुए अपने साथियों को प्रेरणा प्रदान की तथा अपने जीवन का बहुमूल्य बलिदान दिया।

सं० 57-प्रेस/91—राष्ट्रपति निम्नलिखित कार्मिकों को उनकी अति असाधारण सेवा के लिए "परम विशिष्ट सेवा मैडल" प्रदान करने का सहर्ष अनुमोदन करते हैं :—

1. लेफ्टिनेन्ट जनरल विपिन चन्द्र जोशी (आई० सी०-7011) अ० वि० से० मे०, कवचित कोर।
2. लेफ्टिनेन्ट जनरल रविन्द्र नाथ महाजन (आई० सी०-6482)—वि० से० मे०, इन्फैन्ट्री।
3. लेफ्टिनेन्ट जनरल भर्तृहरि विनायक पंडित (आई० सी०-7320)—वीर चक्र, इंजीनियर्स।
4. लेफ्टिनेन्ट जनरल रंगास्वामी नरसिम्हन (आई० सी०-7384)—शौर्य चक्र, वि० से० मे०, इन्फैन्ट्री।

5. लेफ्टिनेंट जनरल अशोक मोंगलिक (आई० सी०–6161) से० मे०, आर्टिलरी ।

6. लेफ्टिनेंट जनरल यशपाल खुराना (आई० सी०–6170), इंजीनियर्स ।

7. लेफ्टिनेंट जनरल क्रिस्टोफर एन्थोनी बरेटो (आई० सी०–6602), इंजीनियर्स ।

8. लेफ्टिनेंट जनरल मोहम्मद अहमद जाकी (आई० सी०–7613) अ० वि० से० मे०, वीर चक्र, इन्फैंट्री ।

9. लेफ्टिनेंट जनरल विनोद कुमार सिंह (आई० सी०–7709), इन्फैंट्री ।

10. लेफ्टिनेंट जनरल राजेन्द्र पाल अग्रवाल (आई० सी०–6770), वि० से० मे०, सेना आयुध कोर ।

11. लेफ्टिनेंट जनरल राजेन्द्र कुमार उपाध्याय (एम० आर०–965), वि० से० मे० सेना चिकित्सा कोर ।

12. लेफ्टिनेंट जनरल हरभजन सिंह (आई० सी०–6115), सिगनल्स ।

13. लेफ्टिनेंट जनरल आशिस बैनर्जी (आई० सी०–6436), आर्टिलरी (सेवानिवृत्त) ।

14. वाइस एडमिरल विजय सिंह शेखावत, अ० वि० से० मे०, वीर चक्र (00189–बी)

15. सर्जन वाइस एडमिरल ओम प्रकाश चावला, अ० वि० से० मे० (75048–एन) (सेवानिवृत्त) ।

16. एयर मार्शल परदुमन कुमार जैन, वि० से० मे० (4366), प्रशासनिक ।

17. एयर मार्शल राजेन्द्र कुमार धवन, अ० वि० से० मे०, वा० से० मे० (4736), उड़ान (पायलट) ।

18. एयर मार्शल शशि कुमार सैमुअल रामदास, अ० वि० से० मे०, वा० से० मे०, वि० से० मे०, (4930), वैमानिकी इंजीनियरी (यांत्रिक) ।

19. एयर वाईस मार्शल त्रिलोचन सिंह, अ० वि० से० मे०, वीर चक्र, वा० से० मे० (5043), उड़ान (पायलट) ।

सं० 58–प्रेज/91–राष्ट्रपति निम्नलिखित कार्मिकों को उनकी असाधारण सेवा के लिए "उत्तम युद्ध सेवा मेडल" प्रदान करने का सहर्ष अनुमोदन करते हैं :–

1. मेजर जनरल वमन्था राव राघवन (आई० सी०–10150), अ० वि० से० मे०, इन्फैन्ट्री ।

2. मेजर जनरल रविन्द्र नाथ भल्ला (आई० सी०–10414), वि० से० मे०, इन्फैन्ट्री ।

3. ब्रिगेडियर रूस्तम फैखुसरू नानावती (आई० सी०–13878), इन्फैन्ट्री ।

सं० 59–प्रेज/91–राष्ट्रपति निम्नलिखित कार्मिकों को उनकी असाधारण सेवा के लिए "अति विशिष्ट सेवा मेडल" प्रदान करने का सहर्ष अनुमोदन करते हैं :–

1. लेफ्टिनेंट जनरल धीरेन्द्र कृष्ण खन्ना (आई० सी०–10013), इन्फैन्ट्री ।

2. मेजर जनरल सतीश नाम्बियार (आई० सी०–10018), वीर चक्र, मैकनाइज्ड इन्फैन्ट्री ।

3. मेजर जनरल सतीश चन्द्र आहूजा (आई० सी०–7022), सिगनल्स ।

4. मेजर जनरल रमेश चन्द्र चोपड़ा (आई० सी०–7046), आसूचना कोर ।

5. मेजर जनरल निर्विकार स्वरूप भटनागर (आई० सी०–7711), सेना सेवा कोर ।

6. मेजर जनरल अशोक कल्यान वर्मा, (आई० सी०–7783), इन्फैंट्री ।

7. मेजर जनरल शशी भूषण शर्मा (आई० सी०–7784), सिगनल्स ।

8. मेजर जनरल विनोद कृष्णा (आई० सी०–8131) सिगनल्स ।

9 मेजर जनरल अशोक जोशी (आई० सी०–8142), इंजीनियर्स

10. मेजर जनरल सुरीन्दर नाथ (आई० सी०–8525), आर्टिलरी ।

11. मेजर जनरल सुरेश नाथ अम्बगे (आई० सी०–10107), इंजीनियर्स ।

12. मेजर जनरल निर्मल चन्द्र महाजन (आई० सी०–10432), आर्टिलरी ।

13. मेजर जनरल प्रनब वत्त, (आई० सी०–10495), वि० से० मे०, इन्फैंट्री ।

14. मेजर जनरल मदन मोहन लिखेरा (आई० सी०–10497), वि० से० मे०, इन्फैंट्री ।

15. मेजर जनरल वैंकटेश माधव पाटिल, (आई० सी०–11885) आर्टिलरी ।

16. मेजर जनरल चन्द्र कैलाश कपूर (आई० सी०–12169), इन्फैंट्री ।

17. मेजर जनरल रणजीत सिंह (आई० सी०–6782), आर्टिलरी (सेवानिवृत्त) ।

18. मेजर जनरल युधिष्ठिर कुमार कपुर (आई० सी०–7317), आर्टिलरी (सेवानिवृत्त), ।

19. ब्रिगेडियर मदनजीत सिंह धैम्म (आई० सी०–12467), ई० एम० ई० ।

20. ब्रिगेडियर रणजीत सिंह माथी (आई० सी०–12637), शौर्य चक्र, इन्फैंट्री ।

21. ब्रिगेडियर प्रकाश गोकर्न (आई० सी०–12855), सिगनल्स ।

22. ब्रिगेडियर इन्दर पाल मल्ला (एम० आर०–1370), वि० से० मे० सेना चिकित्सा कोर (सेवानिवृत्त) ।

23. ब्रिगेडियर सुरेन्द्र कुमार जैन (एम० आर०–01711), सेना चिकित्सा कोर (सेवानिवृत्त) ।

24. रियर एडमिरल राज बहादुर सूरी, वि० से० मे० (00375–ए)

25. रियर एडमिरल जग मोहन सिंह सोढी, वि० से० मे०, (00425–आर०) ।

26. रियर एडमिरल देश बन्धु कपिला, वि० से० मे० (50104–वाई०) ।

27. एक्टिंग रियर एडमिरल थेक्कमपचेक विला जॉन्सन जेकब, वि० से० मे० (00511–के०) ।

28. कमोडोर अरविन्द रामचन्द्र कबीर, वि० से० मे० (00514–टी) (मरणोपरान्त) ।

29 कमोडोर राजिन्द्र सिंह चौधरी, वि० से० मे० (40139-डब्ल्यू०) ।

30. कमोडोर गुप्तेश्वर राय, नौ० मे०, वि० से० मे० (00528-जेड) ।

31. एयर वाइस मार्शल अमल कुमार मुखोपाध्याय (5237), वैमानिकी इंजीनियरी (यांत्रिकी) ।

32. एयर वाइस मार्शल सुबरामनियम रतनम (5921) (शिक्षा) ।

33. एयर वाइस मार्शल विष्णु मूर्ति रैना (5382), उड़ान (पायलट) ।

34. एयर कमोडोर शरद कुमार रामाकृष्ण वेशपाण्डे, वा० से० मे० (5694), उड़ान (पायलट) ।

35 एयर कमोडोर ट्रेवोर रेमंड जोसेफ ओसमान (6005), उड़ान (पायलट) ।

36 एयर कमोडोर रणजीत कुमार मल्होत्रा, वा० से० मे० 6513 उड़ान (पायलट) ।

37. एयर कमोडोर शैलेन्द्र सिंह कौशिक (6766), उड़ान (पायलट) ।

38 एयर कमोडोर तेशतेर जाल मास्टर (7224), उड़ान (पायलट) ।

39. ग्रुप कैप्टन जसवन्त सिंह कुमार, वि० से० मे० (6186), (लाजिस्टिक्स) ।

40 ग्रुप कैप्टन अजील भवनामी, वा० से० मे० (10440), उड़ान (पायलट) ।

दिनांक 15 अप्रैल 1991

स० 60-प्रेज/91—राष्ट्रपति, निम्नलिखित व्यक्तियों को "सर्वोत्तम जीवन रक्षा पदक" प्रदान करने का सहर्ष अनुमोदन प्रदान करते हैं :—

1. श्री मोहम्मद अब्बास (मरणोपरान्त)
मकान नं० 9-40, शरम बावड़ी,
देवरकोंडा-508248
जिला-नलगोण्डा,
आंध्र प्रदेश ।

16 जुलाई, 1989 को आंध्र प्रदेश सड़क परिवहन निगम की एक बस उप्पुवगु नदी की बाढ़ की चपेट में आ गई और कुछ महिला यात्री व कर्मचारी बस के अन्दर फंस गए । जल-स्तर बहुत तेजी से बढ़ रहा था और स्थिति भयावह थी । इसे देखते हुए श्री मोहम्मद अब्बास उफनते पानी को चीरते हुए इस अभागी बस में घुसे और श्रीमती सौसिल्या को बचा लिया । इसी दौरान जल-स्तर और अधिक बढ़ गया और बस पानी में बह गई । श्री अब्बास ने ग्यारह अन्य यात्रियों के साथ अपने प्राण गंवा दिए ।

श्री मोहम्मद अब्बास ने श्रीमती सौसिल्या की जान बचाने में उच्च कोटि के अदम्य साहस का परिचय दिया और अन्य लोगों की जान बचाने के प्रयास में सर्वोच्च बलिदान दिया ।

2. श्री अर्जन सिंह, (मरणोपरान्त)
बी-IV-490, मोहल्ला फतेहगंज,
लुधियाना, पंजाब ।

29 मई, 1988 को श्री आत्मा राम आर्य की बेकरी की दुकान पर श्री आत्मा राम आर्य तथा श्री अर्जन सिंह का आतंकवादियों से सामना हुआ । उन्होंने अपनी बन्दूक श्री आर्य पर तान दी । श्री अर्जन सिंह श्री आर्य को बचाने के लिए आगे आए और उनके तथा आतंकवादियों के बीच में खड़े हो गए । इन बदमाशों ने उन्हें एक तरफ हट जाने को कहा और धमकी दी कि यदि वह श्री आर्य को बचाने की कोशिश करेंगे तो उन्हें मार दिया जाएगा । किन्तु श्री अर्जन सिंह ने हटने से इन्कार कर दिया । आतंकवादियों ने श्री आर्य को गोली मारने से पहले उन्हें गोली से उड़ा दिया ।

श्री अर्जन सिंह ने श्री आर्य की जान बचाने में अत्यन्त साहस का परिचय दिया और ऐसा करते हुए उन्होंने अपने जीवन की आहुति दे दी ।

3. श्री राजवन्त सिंह, (मरणोपरान्त)
गांव व पो० कण्डिला,
तहसील बटाला,
जिला गुरदासपुर,
पंजाब ।

4. श्री अवतार सिंह (मरणोपरान्त)
गांव हकीमपुर,
पो०ओ० कलानौर,,
तहसील व जिला गुरदासपुर (पंजाब) ।

6 जून, 1988 को छह बन्दूकधारी आतंकवादियों ने अमृतसर से पठानकोट जाने वाली एक निजी बस को जिसमें 65 यात्री सवार थे, जबरन तलवन्डी गांव की ओर मोड़ दिया । उन्होंने बस को एक छोटी सी नहर के किनारे रुकवा दिया और बस में से सात यात्रियों को बाहर आने का हुक्म दिया । बस में सफर कर रहे दो सिक्ख युवक, सर्वश्री राजवन्त सिंह तथा अवतार सिंह इस स्थिति से अत्यन्त व्यथित हुए । वे आगे बढ़े और उन्होंने उन सशस्त्र बदमाशों से बेकसूर यात्रियों को न मारने की याचना की । उनकी दखलअन्दाजी से उत्तेजित हो कर आतंकवादियों ने उन्हें गोली से उड़ा दिया । इन बहादुर लेकिन भाग्यहीन युवकों के प्रतिरोध ने आतंकवादियों को असमंजस में डाल दिया और वे खेतों में भाग निकले ।

सर्वश्री राजवन्त सिंह तथा अवतार सिंह के अनुकरणीय साहस तथा आत्म-बलिदान से एक ऐसी बड़ी दुर्घटना होने से टल गई जिसमें कई लोगों की जान जा सकती थी ।

5. श्री जी० एस० गिल,
अपर मुख्य खनन इंन्जीनियर,
ईस्टर्न कोल फील्ड्स लि०,
सेंक्टोरिया, पो०ओ० बोसरगढ़,
जिला बर्दवान, पश्चिम बंगाल ।

13 नवम्बर, 1989 को रानीगंज के निकट महाबीर कोयला खान में बाढ़ आ गई और कई श्रमिक अन्दर फंस गए । ईस्टर्न कोल फील्ड्स लि० के अपर मुख्य खनन इंन्जीनियर श्री जी० एस० गिल ने पूर्ण समर्पित भावना से बचाव कार्य चलाया । उन्होंने दो ड्रिलिंग रिग किराये पर लिए और कुछ ही घंटों में दो छेद खोद डाले । एक छेद खाना, पेयजल, दवाइया इत्यादि पहुंचाने के लिए तथा दूसरा फंसे हुए श्रमिकों को एक-एक करके बाहर निकालने के लिए प्रयोग में लाया गया, छेद में एक कैपसूल डाला गया और श्री गिल कैपसूल में बैठकर छेद के रास्ते खान के अन्दर चले गए । वह बाढ़ग्रस्त खान के अन्दर रह कर तब तक बचाव कार्य चलाते रहे जब तक कि कैपसूल की मदद से अंतिम जीवित श्रमिक को बाहर नहीं निकाल लिया गया ।

श्री गिल ने ऐसी विकट स्थिति में अनुकरणीय साहस का परिचय दिया और खान में फंसे अनेक श्रमिकों के प्राण को बचाने में सहायक सिद्ध हुए ।

सं० 61 प्रेज/91 —राष्ट्रपति निम्नलिखित व्यक्तियों को "उत्तम जीवन रक्षा पदक" प्रदान करने का सहर्ष अनुमोदन करते हैं :—

1. श्री गुरदेव सिंह (मरणोपरान्त)
मकान नं० बी/29-355,
सरहिन्द गेट,
पटियाला, पंजाब ।

3/4 जुलाई, 1988 की रात्रि को जब पटियाला शहर में अभूतपूर्व बाढ़ आई हुई थी, श्री गुरदेव सिंह ने तेजी से बहते हुए पानी से 16 व्यक्तियों की जान बचायी और अधिक लोगों को बचाने के प्रयास में उन्होंने अपने जीवन का बलिदान कर दिया ।

श्री गुरदेव सिंह ने 16 व्यक्तियों की जान बचाने में अनुकरणीय साहस और वीरता का परिचय दिया तथा और अधिक व्यक्तियों को बचाने के प्रयास में सर्वोच्च बलिदान दे दिया ।

2. श्री जगन्नाथ साथी, (मरणोपरान्त)
ग्राम व डाक कुलसारी,
जिला चमोली,
उत्तर प्रदेश ।

10 सितम्बर, 1989 को ग्राम बनौली के श्री मोहम्मद इरफान खान बहते हुए कुछ लट्ठों को पकड़ने के लिए पिंडर नदी में नीचे उतर गए । नदी के बीच से लट्ठों को उठा लाने के पश्चात् लौटते समय वह घबरा गए और सहायता के लिए चिल्लाए तथा डूबने लगे । यह देखकर श्री जगन्नाथ साथी डूबते हुए उस व्यक्ति को बचाने के लिए तत्काल नदी में कूद पड़े । लेकिन वह भंवर में फंस गए और डूब गए ।

श्री जगन्नाथ साथी ने एक डूबते हुए व्यक्ति की जान बचाने में बहादुरीपूर्वक प्रयास करके अनुकरणीय साहस का परिचय दिया और ऐसा करते हुए वह अपनी जान से हाथ धो बैठे ।

3. 1056030 दफादार भासकरम बदलामणी,
44, आर्मर्ड रेजीमेंट,
मार्फत 56 ए० पी० ओ० ।

5 अप्रैल, 1989 को ड्यूटी से लौटते समय, दफादार भासकरम बदलामणी ने एक वर्जी की दुकान में आग की लपटें देखीं और वह दर्जी, जो एक विकलांग व्यक्ति था, सहायता के लिए बेतहाशा चीख-पुकार कर रहा था । यह बहादुर जवान इस जलती हुई दुकान में घुस गया तथा बेसहारा पीड़ित व्यक्ति को उठा लिया । जब वह बाहर आ रहा था तो दुकान की छत गिर गई तथा लकड़ी की जलती हुई एक शहतीर उसकी पीठ पर आ गिरी जिससे उसके कपड़ों में आग लग गई । बुरी तरह से जल जाने के बावजूद, दफादार बदलामणी उस पीड़ित व्यक्ति को सुरक्षित स्थान पर ले आए और इस प्रकार उसकी जान बचा ली ।

दफादार भासकरम बदलामणी ने अपने जीवन को गंभीर खतरे की परवाह किए बिना एक अपंग व्यक्ति की जान बचाने में अदम्य साहस का परिचय दिया ।

4. कुमारी निर्मला,
सुपुत्री श्री रामपत,
ग्राम अहीरका, तहसील जींद,
जिला जींद, हरियाणा ।

4 सितम्बर, 1989 को एक तीन वर्षीय बालक, मास्टर योगेश अपनी चार वर्षीय चचेरी बहन कुमारी मोनिका के साथ नहर के नजदीक खेलते समय फिसल गया तथा नहर में जा गिरा और एक झाड़ी में फंसने से पहले लगभग 300 फीट तक बहता चला गया । यह देखकर कुमारी मोनिका ने शोर मचाया जिसे सुनकर कुमारी निर्मला (8 वर्षीय) घटनास्थल पर दौड़ी आई । वह तत्काल नहर में कूद पड़ी तथा तैरकर उस असहाय बालक के पास जा पहुंची । वह उसे झाड़ी से निकाल कर नहर के किनारे पर ले आई । पास से गुजर रही एक महिला की मदद से, वह उसे सुरक्षित स्थान पर ले आई और इस प्रकार उसकी जान बचा ली ।

कुमारी निर्मला ने अपने जीवन के प्रति खतरे की परवाह न करते हुए डूबते हुए एक चालक की जान बचाने में अनुकरणीय साहस का परिचय दिया।

5. श्री पाथरोज लेजर, (मरणोपरान्त)
वालियापारम बिल पुलीमेल,
पात्तूर, डाकघर नूरानाडू,
अलेप्पी जिला, केरल।

29 जून, 1989 को, एक देसी नाव, जिसमें 10 स्कूली बच्चे सवार थे, पेरूवेलीचल पुन्चा में उल्ट गई और उस पर सवार सभी बच्चे गिर पड़े। ये बच्चे अपने जीवन के लिए संघर्ष कर रहे थे और डूबने लगे थे। नाविक श्री पाथरोज लेजर ने स्थिति की गंभीरता को समझा और बाढ़ग्रस्त पुन्चा में गोता लगाया। उन्होंने एक एक करके बच्चों को निकाला और उन्हें नाव में पहुंचाया। इस प्रकार उन्होंने नौ बच्चों को बचा लिया। जब वह दसवें बच्चे को निकालकर ऊपर लाए तब तक नाव बहकर थोड़ी दूर निकल गई थी। थक कर चूर हुआ यह नाविक उस बच्चे के साथ नाव तक नहीं पहुंच सका। नाविक तथा बच्चा पुन्चा में डूब गए तथा उनकी मृत्यु हो गई।

श्री पाथरोज लेजर ने नौ बच्चों को डूबने से बचाने में अनुकरणीय साहस का परिचय दिया और दसवें बच्चे की जान बचाने के प्रयास में उन्होंने सर्वोच्च बलिदान दे दिया।

6. मास्टर वी० सम्पत कुमार,
कूथापाडी ग्राम,
पेन्नागराम तालुक,
नार्थ आरकोट जिला,
तमिलनाडु।

13 दिसम्बर, 1988 को दो बालक, जिनकी उम्र दो वर्ष थी, कूथापाडी ग्राम के नजदीक एक गहरे कुएं में गिर गए और डूबने लगे। यह देखकर 14 वर्षीय मास्टर वी० सम्पत कुमार ने फौरन कुएं में छलांग लगा दी तथा असहाय बालकों को बचा लिया।

मास्टर वी० सम्पत कुमार ने अपने जीवन के प्रति खतरे की परवाह न करते हुए दो बालकों की जान बचाने में अदम्य साहस तथा तत्परता का परिचय दिया।

7. श्री आर० वडियाप्पन,
गुट्टुर ग्राम,
आमपाली (डा० घ०) कृष्णागिरी तालुक,
धरमापुरी जिला,
तमिलनाडु।

21 दिसम्बर, 1986 को कुमारी सरोजा तथा कुमारी सेलवी ग्राम की दो बालिकाएं कुएं में जा गिरीं और संयोगवश एक बालक ने उन्हें देखकर शोर मचाया। इस शोर को सुनकर श्री आर० वडियाप्पन घटनास्थल पर दौड़े आए तथा बालिकाओं को बचाने के लिए तत्काल कुएं में कूद पड़े। पहले उन्होंने कुमारी सरोजा को पानी से बाहर निकाला तथा दूसरी बालिका को, जो लगभग डूबने वाली थी, बचाने के लिए फिर कुएं में कूद पड़े। वह कुमारी सेलवी को गहरे पानी से बाहर निकालने में सफल हुए।

श्री आर० वडियाप्पन ने अपने स्वयं के जीवन को खतरे की परवाह न करते हुए दोनों बलिकाओं की जान बचाने में अदम्य साहस तथा तत्परता का परिचय दिया।

8. कुमारी माया
ग्राम हुसैनपुर,
डाकघर रामरज,
जिला मुजफ्फरनगर,
उत्तर प्रदेश।

पहली मई, 1989 को ग्राम हुसैनपुर में एक विनाशकारी आग लग गयी तथा एक जलते हुए मकान में चार बच्चे फंस गए। कुमारी माया, जो संयोगवश उस वक्त घटनास्थल के पास थी, जलते हुए मकान में घुस गई तथा उसने सभी चारों बच्चों को बचा लिया। ऐसा करते हुए उनका हाथ बुरी तरह से जल गया।

कुमारी माया ने अपने जीवन की परवाह न करते हुए उन चार असहाय बालकों की जान बचाने में अनुकरणीय साहस तथा तत्परता का परिचय दिया।

9. श्रीमती सुमिरता देवी, (मरणोपरान्त)
ग्राम रेवान,
डाक पुरवा रेवान,
थाना महमूदाबाद,
जिला सीतापुर,
उत्तर प्रदेश।

10 सितम्बर, 1988 को तीन बच्चे एक तालाब में डूब रहे थे। श्रीमती सुमिरता देवी ने, जो पास ही अपने मवेशियों को चरा रही थी, उनकी यह दशा देखी तथा सहायता के लिए दौड़ पड़ी। वह तत्काल तालाब में कूद पड़ी तथा उनमें से दो बच्चों को बचा लिया। तीसरे बालक को बचाने के लिए वह फिर तालाब में कूद पड़ी। हालांकि वह तीसरे बालक को बचाने में सफल हो गई थी, लेकिन इस प्रक्रिया में वह स्वयं तालाब के गहरे हिस्से में फिसल गई तथा डूब गई।

श्रीमती सुमिरता देवी ने असहाय बालकों की जान बचाने में अनुकरणीय साहस व मानव जीवन के प्रति चिन्ता का प्रदर्शन किया और ऐसा करते हुए उनकी खुद की जान चली गई।

10. टी/नं० 4404 कारपोरल सुदर्शन प्रधान, (मरणोपरान्त)
ग्राम रेवबहार, डाकघर सिमडेगा,
जिला गुमला,
बिहार।

10 दिसम्बर, 1988 को अरुणाचल प्रदेश में चांगलिंटी बालोंग नामती सड़क पर सीमा सड़क संगठन के प्रोजेक्ट वारतक के तहत 116 रोड कन्स्ट्रक्शन कम्पनी के कारपोरल सुदर्शन प्रधान, विस्फोटन के लिए विस्फोटक पदार्थों की सहायता से ड्रिल किए गए सुराखों को चार्ज करने के लिए ड्रिलरों की सहायता कर रहे थे। अचानक लटकी हुई चट्टान का एक हिस्सा ढह गया तथा हर कोई अपनी जाने बचाने के लिए इधर उधर दौड़ पड़ा। चूंकि श्री प्रधान नीचे आ रहे थे उन्होंने देखा कि चट्टान का एक बहुत बड़ा हिस्सा सुपरवाइजर इंचार्ज तथा सी पी मेट को अपनी चपेट में लेने वाला है। वह तत्काल उनकी तरफ दौड़े तथा उन्हें धक्का देकर गिरती हुई चट्टान से दूर कर दिया। ऐसा करते हुए वह स्लाइड में फंस गए तथा बोल्डरों से आघात पहुंचा जिससे वह पहाड़ी के लगभग 150 मीटर नीचे चले गए तथा उन्हें गंभीर चोटें आईं। इन चोटों के कारण तत्काल उनकी मृत्यु हो गई।

श्री सुदर्शन प्रधान ने अपने दो वरिष्ठ अधिकारियों की जान बचाने में अनुकरणीय साहस, सूझ-बूझ तथा उच्च कोटि की कर्तव्यनिष्ठा का परिचय दिया और ऐसा करते हुए अपने जीवन का बलिदान कर दिया।

11. टी/नं० 505 सी पी एल तेसरिंग डोलकर,
डेट साउथ पुल्लू,
359 आर०एम०पी०एल०,
सी० ए० आर०ई० 113 आर०सीसी (जी० आर० ई० एफ०)
मार्फत 56 ए०पी०ओ०।

31 दिसम्बर, 1988 को लेह खालसर मार्ग पर बर्फ साफ करने वाला दल अभूतपूर्व हिम स्खलन में फंस गया। डोजर जमीन में धंस गया तथा डोजर आपरेटर तथा ओवरसीयर लगभग 1000 फीट तक बर्फ से ढकी घाटी में लुढ़क गए। आपरेटर बाहर आने में सफल हो गया परन्तु ओवरसीयर बेहोश हो गया। इस घटना की जानकारी मिलने पर श्रीमती तेसरिंग डोलकर बेलचे लेकर घटना-स्थल पर दौड़ी और बर्फ को हटाया जिसमें असहाय ओवरसियर दबा पड़ा था। उसने उस व्यक्ति को बचाया और बहुत ही कठिन परिस्थिति में उसे पीठ पर लाद कर सुरक्षित स्थान तक पहुंचाया।

श्रीमती डोलकर ने असहाय व्यक्ति की जान बचाने में अनुकरणीय साहस तथा कर्तव्यनिष्ठा का परिचय दिया।

12. जी-47166 व्हीकल/मैकेनिक (मरणोपरान्त)
श्री एल० जेम्स,
जे०जे० भवन,
ग्राम व डाकघर पूथिया थुरा,
तहसील नेटयातिनकारा,
जिला त्रिवेन्द्रम,
केरल-695526।

25 दिसम्बर, 1989 को, व्हीकल मैकेनिक श्री एल० जेम्स 24 अन्य व्यक्तियों के साथ कोवालय अन्तर्राष्ट्रीय पर्यटक केन्द्र गए। वह टूरिस्ट बोट, जिसमें वे सफर कर रहे थे, पालम के निकट खुले समुद्र में उलट गई तथा सभी पर्यटक नाव पर से गिर पड़े। वे अपनी जिन्दगी के लिए संघर्ष कर रहे थे। एक निपुण तैराक होने के नाते श्री जेम्स उनके बचाव के लिए आए। वह कई घंटे तक उस खुले समुद्र में लगातार तैरते रहे तथा कुछ सह-यात्रियों का जीवन बचा सके। ऐसा करते हुए वह बहुत थक गए तथा किनारे पर वापस आने के लिए वह पर्याप्त साहस नहीं जुटा सके तथा इस प्रकार सह-यात्रियों के जीवन को बचाने के प्रयास में अपने जीवन का बलिदान कर दिया।

श्री जेम्स ने डूबने से अनेक व्यक्तियों की जान बचाने में अनुकरणीय साहस तथा मानव जीवन के प्रति चिन्ता का प्रदर्शन किया और ऐसा करते हुए अपनी जान दे दी।

सं० 62-प्रेज/91—राष्ट्रपति, निम्नलिखित व्यक्तियों को "जीवन रक्षा पदक" प्रदान करने का सहर्ष अनुमोदन करते हैं :—

1. श्री नरेश कुमार चोपड़ा (मरणोपरान्त)
दलिची मोहल्ला,
सरहिंद शहर,
तहसील फतेहगढ़ साहेब,
जिला पटियाला,
पंजाब।

13 सितम्बर, 1988 को चार आतंकवादी सरहिन्द मंडी में आए और लोगों पर अंधा-धुंध गोली चला दी जिससे कई लोग मारे गए। वे रास्ते में लोगों को मारते हुए सरहिन्द शहर की तरफ बढ़ रहे थे। श्री नरेश कुमार चोपड़ा, जो अपनी साइकिल पर थे, ने इत्फाक से इन हत्याओं को देखा और रास्ते में लोगों को सावधान करने के लिए दौड़ पड़े। इस तरह से उन्होंने कई लोगों की जानें बचा लीं। बाद में उन्होंने आतंकवादियों को पकड़ने की कोशिश की और ऐसा करते हुए अपने प्राणों की आहुति दे दी।

श्री नरेश कुमार चोपड़ा ने कठिन परिस्थितियों में महान साहस का परिचय दिया और ऐसा करते हुए अपने जीवन को बलिदान कर दिया।

2. 4166240 हवलदार पूरण राम (मरणोपरान्त)
ग्राम तायल, डाकघर बंगा चायना,
टी०ओ०—पिथौरागढ़,
जिला—पिथौरागढ,
उत्तर प्रदेश ।

10 नवम्बर, 1988 को लांस नायक जसराम की पत्नी ने अपने किचन गार्डन में एक नंगी तार को छू लिया और तार से चिपक गई । हवलदार पूरण राम ने, जो इत्फाक से उस समय वहां थे, उनकी उस दशा को देखा और तुरन्त उनकी सहायता के लिए दौड़ पड़े । उन्होंने तुरन्त उसको पकड़ से नंगी तार को हटा दिया और उनके जीवन की रक्षा की । परन्तु, दुर्भाग्य वश, ऐसा करते हुए स्वयं उन्हें करंट लग गया और उनके प्राण चले गए ।

हवलदार पूरण राम ने स्वयं के जीवन को जोखिम में डाल कर एक निःसहाय महिला की जान बचाने में अनुकरणीय साहस का परिचय दिया ।

3. श्री तेकलकोट मुरलीधर राव,
मकान नं०-4-7-142, इसमिया बाजार,
हैदराबाद-500027,
आन्ध्र प्रदेश ।

26 अप्रैल, 1989 को एक 25 वर्षीय औरत अपनी घरेलू परेशानियों की वजह से अपने जीवन का अंत करने के लिए एक तालाब में कूद गई । काफी चीख पुकार हुई और श्री तेकलकोट मुरलीधर राव, जो अपने स्कूटर पर उसी रास्ते से जा रहे थे उस स्थान की तरफ भागे । वह तुरन्त तालाब में कूद पड़े और उन्होंने उस औरत को बचा लिया ।

श्री राव ने अपने जीवन की परवाह किए बिना, एक डूबती हुई औरत की जान बचाने में अदम्य साहस एवं तत्परता का परिचय दिया ।

4. श्री जान के० जोस,
कल्लिदुविकल, कल्याणतमी,
अलेकोट, थोड़पुझा,
इडुक्की जिला, केरल ।

27 दिसम्बर, 1989 को 3 वर्ष का एक बच्चा खेलते हुए कुएं में जा पड़ा और डूबने लगा था । तुरंत शोर मच गया । हालांकि, काफी लोग कुएं के चारों तरफ एकत्रित हो गए थे, परन्तु कोई भी बच्चे को बचाने का साहस नहीं कर रहा था । श्री जान के० जोस बच्चे को बचाने के लिए आगे आए । उन्होंने कुएं में छलांग लगा दी और दर्शकों द्वारा दी गई रस्सी की सहायता से बच्चे को बचा लिया । उनकी बहादुरी एवं समय पर की गई कार्रवाई से, एक बहुमूल्य जान बचा ली गई ।

5. कुमारी सजिनी, के०एस०
कलुथरा हाउस, डाकघर-तुरुथी,
चंगानाशेरी, जिला कोट्टायम,
केरल ।

12 अगस्त, 1989 को, एक 3 1/2 वर्ष का बच्चा नहाते समय कुएं में फिसल गया । कुछ बच्चों ने यह देखा और चीखना-चिल्लाना शुरू कर दिया । उनकी चीख-पुकार सुनकर कुमारी सजिनी, जो अस्वस्थ थी और अपने घर में आराम कर रही थी, उस स्थान पर आई । वह फौरन कुएं में कूद गई और बच्चे को कुएं की तल से बाहर निकाल लिया । इस बीच उस स्थान पर और लोग आ गए और उन्होंने बच्चे को और उसे बचाने वाले को कुएं से बाहर निकाल लिया । कुमारी सजिनी के साहस पूर्वक कार्य की ही वजह से बच्चे को बचा लिया गया ।

6. श्री चमकोर सिंह,
ग्राम-एवं-डाकघर लीलन माझ सिंह,
वाया सिवयन बेट,
जिला-लुधियाना,
पंजाब

25 सितम्बर, 1988 को बाढ़ के कारण, दो महिलाओं समेत सात व्यक्ति एक वृक्ष की चोटी पर असहाय शरण लिए पड़े थे । पानी के तेज बहाव के साथ वृक्ष सहित उनके बह जाने का खतरा था । श्री चमकोर सिंह केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के 3 जवानों सहित एक नाव में उनकी सहायतार्थ दौड़े । उन्होंने बाढ़ में घिरे व्यक्तियों को सफलता-पूर्वक बचा लिया लेकिन जब वे लौट रहे थे तो मुसीबत ने उन्हें आ घेरा क्योंकि उनकी नाव उलट गई थी । उनमें से एक व्यक्ति बाढ़ के पानी में गिर गया और पानी में बह बह गया । बचाव पार्टी ने एक वृक्ष को पकड़ लिया और अपनी नाव वृक्ष से बांध दी । तब वहां 14 घन्टे से ज्यादा समय तक मूसलाधार वर्षा हुई और नाव वृक्ष के साथ बहती जा रही थी । बचाव पार्टी ने पुनः एक दूसरे वृक्ष को पकड़ लिया और नाव को उससे बांध दिया । 33 घन्टों से भी ज्यादा समय के बाद, सेना की एक नाव उन तक पहुंची और वह बचाव पार्टी तथा बाढ़ में फंसे छः व्यक्तियों को बचा लाई ।

के चमकोर सिंह ने उच्च कोटि के साहस का परिचय दिया और अपने जीवन के प्रति खतरे की परवाह किए बिना बाढ़ में घिरे छः व्यक्तियों की जान बचाई ।

7. श्री मनमोहन सिंह,
ग्राम—जोगेवाल,
तहसील समाना,
जिला—पटियाला,
पंजाब

8. श्री कुलवंत राम,
ग्राम—जोगेवाल,
तहसील समाना,
जिला पटियाला,
पंजाब।

23 सितम्बर, 1988 को दिल्ली जाने वाली एक बस खनौरी ग्राम के नजदीक भाखड़ा नहर में गिर गई और उसकी सभी सवारियां नहर में डूबने लगी थीं। सर्व/श्री मनमोहन सिंह एवं कुलवंत राम जो सौभाग्यवश वहां थे, असहाय पीड़ितों के बचाव के लिए दौड़ पड़े। उन्होंने अपनी जान को जोखिम में डालकर 13 व्यक्तियों की जान बचाई।

9. के गोपाल सिंह नेगी,
ग्राम—कंडी,
पोस्ट—थंगार,
जिला—पौड़ी गढ़वाल,
उत्तर प्रदेश।

27 दिसम्बर, 1988 को एक 72 वर्षीय वृद्ध/बुजुर्ग व्यक्ति गंगा नदी में गिर पड़ा और नदी में डूबने लगा था। श्री गोपाल सिंह जो यह देख रहे थे उसकी सहायतार्थ दौड़ आए। वह तुरन्त नदी में कूद पड़े और अपनी जान की जोखिम की परवाह किए बगैर उस अभागे को पानी मे बाहर निकाल लाए।

10. मास्टर कौशल किशोर उर्फ बाबू,
ग्राम लालपुर,
पुलिस थाना कोसी कलां,
जिला मथुरा,
उत्तर प्रदेश।

17 मार्च, 1990 को ग्राम लालपुर के एक मकान में भीषण आग लग गई और एक बुजुर्ग औरत आग में घिर गई। इस घटना के बारे में सुनकर, मास्टर कौशल किशोर उर्फ बाबू उस स्थान पर दौड़े आए और अपनी सुरक्षा को बिल्कुल परवाह किए बगैर आग की भयंकर लपटों के बीच जलते हुए मकान में प्रवेश कर गए और उस बुजुर्ग महिला को बचा लाए।

11. श्री राज कुमार जैन,
संस्कृत महाविद्यालय,
सादूमल, जिला ललितपुर,
उत्तर प्रदेश।

7 अप्रैल, 1988 को एक चार वर्षीय बच्चा ललितपुर के श्री महावीर दिगम्बर जैन संस्कृत महाविद्यालय में एक 40 फुट गहरे कुएं में अकस्मात गिर गया और काफी शोर मच गया। महाविद्यालय का ही एक छात्र श्री राज-कुमार जैन उसकी सहायतार्थ दौड़ा आया। उसने तत्काल कुएं में छलांग लगादी और डूबते हुए बच्चे को पकड़ लिया। उसने बच्चे को अपने कंधों पर मजबूती से पकड़ लिया और स्वयं कुंए की अन्दरूनी दीवार की ईंटों को थामे हुए दीवार से तब तक सटा रहा जब तक कि वहां इकट्ठे हुए लोगों ने कुएं में एक रस्सी नहीं डाल दी। इस रस्सी की सहायता से उस बच्चे सहित उसे भी कुएं से बाहर निकाला जा सका।

12. श्री के०पी० शशि कुमार
ड्राइवर, लोक निर्माण विभाग,
माहे।

5 अप्रैल, 1990 को एक पन्द्रह वर्षीय बालक खेलते हुए नदी के मुहाने में गिर गया और ज्वारीय लहरें उसे अपने साथ बहाकर ले जाने लगी। बहुत से लोगों ने इस दृश्य को देखा लेकिन किसी ने भी डूबते हुए बालक को बचाने का साहस नहीं किया। बालक की दशा से द्रवित होकर श्री शशि कुमार अपनी जान की परवाह किए बिना समुद्र में कूद पड़े और अभागे बालक को बचा लिया।

13. मास्टर शमशेर सिंह,
निवासी रिन्डाना,
तहसील गुहाना,
रोहतक, हरियाणा।

28 दिसम्बर, 1989 को एक दो वर्षीय बालक उस समय फिसल कर कुएं में गिर पड़ा जब उसकी मां कुएं से पानी निकाल रहीं थी। महिला ने सहायता के लिए शोर मचाया। उसका शोर सुनकर 13 वर्षीय शमशेर सिंह उस स्थान की ओर दौड़ आया। वह तुरन्त कुएं में कूद पड़ा और डूबते हुए बालक को पकड़ लिया। कुएं में डाली गई रस्सी की सहायता से वह असहाय बालक को गहरे कएं से बाहर निकाल लाया। मास्टर शमशेर सिंह ने अपनी जान की परवाह किए बिना बच्चे को बचाने में अदम्य साहस तथा तत्परता का परिचय दिया।

14. कुमारी मंजू बाला,
पुत्री श्री केहर सिंह पठानिया,
ग्राम व पोस्ट पनियाली,
तहसील पालमपुर,
जिला कांगड़ा,
हिमाचल प्रदेश।

16 अगस्त, 1989 को कुमारी मंजू बाला तथा उनकी बड़ी बहिन श्रीमती सुमन राणा ने अपनी गाय को बांधने के लिए अपनी गौशाला में प्रवेश किया और वहां एक चीते को बैठा देखकर सकते में आ गई। उन्हें देखकर चीते ने उन पर आक्रमण कर दिया। छोटी बहिन ने मजबूती से चीते की पूंछ पकड़ ली। इस बीच बड़ी बहिन ने एक लकड़ी के डन्डे, पत्थर से चीते के सिर पर वार किया। और सिर पर गम्भीर चोटें लगने से चीता मर गया। इस प्रक्रिया में दोनों लड़कियां जख्मी हो गई। छोटी बहिन द्वारा ठीक समय पर की गई कार्रवाई तथा साथ ही उनके मानसिक सन्तुलन, साहस तथा तत्परता की वजह से ही दोनों बहिनों की जान बच सकी।

15. श्री रविन्द्र कुमार
पुत्र श्री रघुनाथ,
ग्राम—टकरेरा, तहसील—सरकाघाट,
जिला—मण्डी, हिमाचल प्रदेश ।

13 अगस्त, 1988 को चार लड़कियां व्यास नदी के तट पर अपने पशुओं को चराने गई । जब उनके पशु चर रहे थे तो लड़कियां नदी में नहाने चली गई । एक लड़की नदी के किनारे पर ही रही जबकि अन्य तीन गहरे पानी की तरफ बढ़ीं और डूबने लगी । इस पर जोरों से शोर होने लगा । शोर सुनकर, श्री रविन्द्र कुमार, जो कुछ दूरी पर अपने पशुओं को चरा रहे थे, डूबती हुई लड़कियों की सहायता के लिए दौड़े आए। वे हाथ में एक बांस की लम्बी बल्ली लेकर नदी में कूद पड़े और तैरते हुए लड़कियों की तरफ बढ़े । उन्होंने विपत्ति में पड़ी लड़कियों को बल्ली पकड़ने का इशारा किया । दो लड़कियों ने बल्ली तथा एक दूसरे का हाथ पकड़ा और बहादुर बालक उन्हें तट पर ले आया । इस प्रकार उन्होंने अपनी जान पर आए जोखिम की परवाह किए बिना दो युवा लड़कियों की जान बचा ली ।

16. मास्टर भाषा मोहम्मद हनीफ (मरणोपरान्त)
पुत्र श्री के० इब्राहीम,
शारदानगर, साजापामुन्नौर,
ग्राम—बनतावाला तालुक,
दक्षिण कन्नड़ जिला,
कर्नाटक ।

6 अप्रैल, 1989 को मास्टर भाषा मोहम्मद हनीफ तथा उनके छः मित्र सीपियां एकत्र करने नेत्रवती नदी में गए । जब अन्य लड़के सीपियां एकत्र करने में व्यस्त थे, एक बड़े ज्वार ने उन्हें नदी की चपेट में ले लिया । यह देखकर मास्टर हनीफ तुरन्त नदी में कूद पड़े और तीन डूबते हुए लड़कों को बचा लिया । अन्य लड़कों को बचाने की कोशिश में वह स्वयं डूब गए और अपने जान की आहुति देकर सर्वोच्च बलिदान किया ।

17. श्री रचप्पा यामवन्त हार्टी,
मकान नं० 50, सोमवारपेट,
तिलकवाड़ी, बेलगांव, कर्नाटक ।

2 जून, 1989 को एक 14 वर्षीय बालिका अपने सायं भ्रमण के समय एक करंट वाले बिजली के खम्भे से टकरा गई और उससे चिपक गई । यह देखकर श्री रचप्पा उसकी सहायता के लिए दौड़े । एक लकड़ी की बल्ली की मदद से उन्होंने उस असहाय लड़की को बिजली के खम्भे से दूर धकेला और इस प्रकार उसकी जान बचाई । इस प्रक्रिया में स्वयं उन्हें बिजली का झटका लगा और वे कुछ समय तक बेहोश रहे।

18. श्री कोट्टयकल इत्तियाचन थोमाचन,
कोट्टाकल हाउस, मकान नं० VI/110,
नेडुम्बासेरी, पंचायत,
अलवाये तालुक, एर्नाकुलम् जिला,
केरल ।

13 जून, 1989 को एक तीन वर्षीय बच्चा एक कुएं में गिर पड़ा और बड़े जोरों से शोर मचाने लगा। श्री कोट्टाकल इत्तियाचन थोमाचन जो वहां पास ही में थे, शोर सुनकर उस स्थान की ओर दौड़े । वह तुरन्त कुएं में कूद पड़े और बच्चे को बचा लिया । इस प्रक्रिया में उनकी कलाई की हड्डी उतर गई ।

19. मास्टर प्रदीप कुमार,
पुत्र श्री रामकृष्णन, अन्थाली, चेराभमंगलम,
मेलारकोड, अलाथुर, पालकाड़ जिला, केरल ।

पहली अप्रैल, 1989 को 7–10 वर्ष आयु समूह की तीन लड़कियां एक तालाब के पास खेल रहीं थीं । तालाब से लगा हुआ, एक आठ फीट गहरा गढ्ढा था जो पानी से भरा हुआ था । तालाब से कमल तोड़ने की कोशिश में एक लड़की फिसल गई और डूबने लगी । डूबती हुई लड़की को बचाने के लिए अन्य दो लड़कियां एक-एक कर गढ्ढे में कूद पड़ी और डूब रही लड़की ने बचाने वाली लड़कियों को मजबूती से पकड़ लिया । इस प्रक्रिया में सभी तीन लड़कियों को डूबने का खतरा हो गया । एक लड़के ने उनकी दुर्दशा देखी और शोर मचाया जिसे सुनकर मास्टर प्रदीप जो वहां से गुजर रहे थे, उनके बचाव के लिए वहां आये । वह तुरन्त गढ्ढे में कूद पड़े और लड़कियों ने उनके हाथ पकड़ने की कोशिश की लेकिन उन्होंने सफलतापूर्वक उन्हें हटा दिया । उन्होंने लम्बा एक डंडा लिया और उसका एक सिरा गढ्ढे में डाला और लड़कियों को इसे पकड़ने को कहा । उन्होंने एक-एक कर लड़कियों को गढ्ढे से बाहर निकाला और उनकी जान बचा ली ।

20. मास्टर एम० एम० सुधीर
पुत्र श्री एम० ए० शंकरनकुट्टी,
मिलयाट्टिल हाउस, चेन्तरापन्नी–680007,
त्रिसुर जिला, केरल ।

17 दिसम्बर, 1989 को एक नौ वर्षीय लड़का बिजली की करंट-युक्त तार से छू गया और इससे चिपक गया । उसके साथी मास्टर सुधीर ने उसे बिजली की तार से दूर खींचने का प्रयास किया लेकिन उसे भी बिजली का झटका लगा और वह दूर जा गिरा । तत्पश्चात उसने लड़के की पतलून से उसे खींचने की कोशिश की लेकिन पतलून फट गई तथा उसके प्रयास विफल हो गए । बिना घबराए हुए, वह एक लकड़ी का डंडा लाया जिससे उसने असहाय लड़के को बिजली की तार से अलग किया और उसकी जान बचा ली । मास्टर सुधीर ने अदम्य साहस तथा सूझबूझ का परिचय दिया और एक अमूल्य जीवन को बिजली से नष्ट होने से बचा लिया ।

21. मास्टर जेवियर शिबु
पुत्र श्री जेवियर, वेलियापराम्बिल थेक्काथिल,
पुलिमो, पट्टूर, पो० ओ० पट्टूर
ग्राम—नूरनाड, जिला—अलेप्पी,
केरल ।

22. कुमारी वर्गीज रीना,
पुत्री श्री वर्गीज,
पलाविलायिल पुठन वीडू,
पो० ओ०—पुलिमेल पट्टूर, नूरनाड,
जिला—अलेप्पी, केरल ।

29 जून, 1989 को एक देसी नाव, जिसमें 10 स्कूली बच्चे सवार थे, पेरुवेलियाचल पंचा में उलट गई और सभी बच्चे नाव से पानी में जा गिरे । बच्चे अपनी जान बचाने के लिए संघर्ष कर रहे थे और डूब रहे थे । नाव वाले ने बहुत साहस दिखाया तथा बाढ़ग्रस्त पंचा में गोता लगाया । उसने एक-एक कर बच्चों को उठाया तथा उन्हें नाव में रखा । इस प्रकार उसने नौ बच्चों को बचा लिया । जब उसने दसवें बच्चे को उठाया और पानी के ऊपर आया नाव इतनी दूर चली गई थी कि बुरी तरह थके नाव वाले के लिए बच्चे सहित नाव तक तैर पाना सम्भव न था । नाव वाला तथा दसवां बच्चा पंचा में डूब गए तथा मर गए ।

बचाए गए बच्चों में से दो बच्चों मास्टर जेवियर शिबु तथा कुमारी वर्गीज रीना ने नाव वाले की उसके प्रयासों में हर सम्भव सहायता की । उन्होंने नाव को नियन्त्रित करने तथा इससे पूर्व कि वे तट पर पहुंच सकें, अन्य बच्चों को नाव को पकड़ाए रखने में अत्यन्त साहस का परिचय दिया ।

23. श्री सिवयचान कुरूकिल्ला,
थोट्टाइकलम पुलिनकुशु, कुट्टानड तालुक,
अलापुझा जिला, केरल ।

11 नवम्बर, 1988 को एक देसी नाव जिसमें 15 से ज्यादा यात्री सवार थे पम्पा नदी में उलट गई और सभी यात्री नाव से पानी में गिर पड़े । जबकि अन्य सभी यात्री बदहवासी में निकटतम तट तक तैर कर पहुंचने की कोशिश कर रहे थे, दो भयभीत लड़कियां तैर नहीं सकी और डूब रही थीं । नाव के यात्रियों में से एक श्री सिवयन कुरूकिल्ला ने स्वयं सुरक्षित बाहर निकलने के लिए तैरते हुए उनकी दुर्दशा को देखा और उनके बचाव के लिए दौड़ा । उन्होंने कुछ लोगों की सहायता से असहाय लड़कियों को सफलतापूर्वक सुरक्षित बाहर निकाला और इस प्रकार उनकी जान बचाई ।

24. श्री के० एम० थंकप्पन,
कुट्टुपारम्बन हाउस, मुनिप्पारा, परियारम ग्राम,
पो० ओ०—कनकिरापल्ली, चलकुड्डी,
त्रिसुर जिला, केरल ।

16 नवम्बर, 1988 को श्रीमती चन्द्रिका कुएं से पानी निकालने के लिए बाल्टी बांधने का प्रयास करते हुए फिसल गई और कुएं में गिर पड़ी और अपनी जान बचाने के लिए संघर्ष कर रही थीं क्योंकि वह तैरना नहीं जानती थी । श्री के० एम० थंकप्पन, जो कई लोगों के साथ वहां, उसको बचाने के लिए दौड़े । वह परन्त कुएं में कूद पड़े और डूबती हुई महिला को अपने कन्धे पर उठा लिया । वह एक सीढ़ी, जिसे कुएं के पास जमा लोगों ने कुएं में डाला था, की सहायता से कुएं से बाहर आए और इस प्रकार उस महिला की जान बचाई गई ।

25. मास्टर दवल सक्सेना
पुत्र श्री परवीन सक्सेना,
एम० ओ०—73, एम० पी० ई० बी० कालोनी,
रामपुर, जबलपुर ।

19 फरवरी, 1989 को एक चार वर्षीय बालक अपने मित्रों के साथ खेलते हुए एक पानी के टैंक में गिर पड़ा और अपनी जान बचाने के लिए संघर्ष कर रहा था । सौभाग्यवश टैंक के ऊपरी किनारे उसकी पकड़ में आ गए जो उसके लिए एक अनिश्चित सा सहारा बना हुआ था । इतने में उसका एक मित्र, मास्टर दवल सक्सेना उस असहाय बालक को पकड़ने में सफल हो सके और दूसरे लड़कों की सहायता से उसे सुरक्षित बाहर निकाल पाए । मास्टर दवल सक्सेना के साहस तथा सूझबूझ से ही एक असहाय बालक की जान बच सकी ।

26. श्री रामचन्द्र केरू सतपुते,
नवनाड़ को० अप० हाउसिंग सोसाइटी,
प्रथम तल, सन्त नामदेव पथ,
शान्ताबाई नाका, मनपाड़ा रोड,
डोम्बिवली (पूर्व) जिला थाणे,
महाराष्ट्र ।

23-7-1988 को एक तिमंजिली इमारत "संजय निवास" का एक किरायदार श्री रामचन्द्र केरू सतपुते को उसके पड़ोसी द्वारा सूचित किया गया कि इमारत ध्वंस रही है। बारिश बड़े जोरों से हो रही थी और इमारत के दूसरे निवासी सो रहे थे । इमारत ढहने के खतरे का अनुभव कर, श्री सतपुते पहले और दूसरे तलों की ओर दौड़ा, सभी किराएदारों को जगाया और उनके इमारत से बाहर निकलने में मदद की। संयोगवश जैसे ही सभी किराएदार बाहर आए, इमारत ढह गई । श्री सतपुते द्वारा ठीक समय पर की गई कार्रवाई की वजह से ही अनेक जाने बच सकीं।

27. श्री संजय बैजनाथ ताते,
वर्मा कालोनी, परभनी,
महाराष्ट्र ।

4 जून, 1989 को एक यात्री गाड़ी बड़ा गांव के रेलवे फाटक से गुजर रही थी और फाटकवाला कर्मचारी सिगनल देने में व्यस्त था । इसी समय एक 3 वर्ष की बालिका फाटक से लगभग 30 फीट की दूरी से लाइन को पार कर रही थी । रेलवे लाइन पार करते हुए लड़की को किसी ने नहीं देखा और इस दृश्य को देखकर फाटक वाला कर्मचारी घबरा गया । श्री संजय बैजनाथ ताते ने जो वहां से गुजर रहे थे लड़की को देखा और खतरे को भांप गए । वे बालिका को बचाने के लिए तुरंत दौड़ कर आए और रेलगाड़ी के वहां से गुजरने से कुछ ही क्षण पहले उसे वहां से हटा लिया। श्री संजय बैजनाथ ताते ने अदम्य साहस का परिचय देते हुए एवं अपने जीवन को जोखिम में डालते हुए बालिका की जान बचा ली ।

28. श्री भेरू भील,
थाना बशाल, भीलवाड़ा,
जिला भीलवाड़ा,
राजस्थान ।

28 जनवरी, 1989 को एक 15 माह का बच्चा गहरे कुएं में गिर गया और उसकी बहुत सहायता के लिए चीखी-चिल्लाई । उसकी चीख पुकार सुनकर श्री भेरू एवं दो अन्य व्यक्ति फौरन वहां पहुंचे । श्री भेरू भील ने अपनी कमर में रस्सी बांधी एवं कुएं में कूद गए । इस प्रकार उन्होंने उस बच्चे को कुएं से निकाल कर उसकी जान बचा ली ।

29. श्री चुन्नी लाल आगरी,
सहायक,
गृह विभाग, राजस्थान सरकार,
जयपुर ।

30 जुलाई, 1989 को राजस्थान राज्य परिवहन निगम की एक बस जो दिल्ली से जयपुर जा रही थी एक मेटाडोर से टकरा गयी । फलस्वरूप बस के चालक एवं संवाहक, सहित दो यात्रियों की दुर्घटना स्थल पर ही मौत हो गयी और अन्य कई घायल हो गए । बहुत से जख्मी यात्री उस दुर्घटनाग्रस्त बस के अन्दर फंसे हुए सहायता के लिए चिल्ला रहे थे । उनमें से एक घायल बस यात्री चुन्नी लाल आगरी किसी तरह खिड़की से बस से बाहर निकल आए, परन्तु अपने सह-यात्रियों की कारूणिक चीत्कार को सुनकर उनकी सहायता के लिए पुनः बस में घुस गए । । श्री आगरी ने अपने घावों की परवाह न करते हुए बस में फंसे सभी यात्रियों को बाहर निकाला एवं बहुत से व्यक्तियों की जान बचा ली ।

30. श्री गिरिराज प्रसाद गुप्ता,
पी/आर-5, पंचायत समिति कालोनी,
मनटाउन, सवाई माधोपुर,
राजस्थान ।

19 दिसम्बर, 1989 को एक अधेड़ आयु की महिला अचानक । कुएं में गिर गई और डूबने लगी । श्री गिरिराज प्रसाद गुप्ता जो कि दुर्घटना स्थल के आस-पास ही थे तुरंत सहायता के लिए दौड़े आए । अपनी जान की जोखिम की परवाह न करते हुए उन्होंने फौरन कुएं में छलांग लगा दी और महिला को सुरक्षित कुएं से बाहर निकाल लाए ।

31. श्री राजेन्द्र कुमार शर्मा, (मरणोपरान्त)
मकान नं० 779 प्रेम भवन,
अखाड़ों का रास्ता,
किशन पोल बाजार, जयपुर,
राजस्थान ।

16 अक्तूबर, 1989 को चार सशस्त्र लुटेरे राजस्थान परिवहन निगम की बस में मेरठ के निकट से चढ़े और यात्रियों का कीमती सामान लूटना शुरू कर दिया । उन्होंने महिला यात्रियों से दुर्व्यवहार भी किया । राजेन्द्र कुमार शर्मा जो उसी बस में यात्रा कर रहे थे निहत्थे लुटेरे के सामने आ खड़े हुए और उन्होंने यात्रियों से गुंडों का विरोध करने को कहा । वे अकेले ही सशस्त्र लुटेरों पर झपट पड़े और उन चारों को पकड़ लिया । परन्तु अन्य यात्रियों से किसी प्रकार की सहायता न मिलने के कारण डाकुओं ने उन्हें दबोच लिया। उनसे अपने को छुड़ा लेने में सफल हुए एक लुटेरे ने गोली मारकर श्री शर्मा की हत्या कर दी । बबराहट में लुटेरे बस रुकवाकर जंगल में भागने में सफल हो गए । इस प्रकार, श्री राजेन्द्र कुमार शर्मा ने अत्यन्त उच्च कोटि के साहस का परिचय दिया। अनेक यात्रियों को लुट जाने तथा मारे जाने से बचा लिया । ऐसा करते हुए श्री शर्मा ने अपना सर्वोच्च बलिदान दे दिया ।

32. श्री रमेश कुमार मंडवाल (मरणोपरान्त)
वार्ड नं० 15, कूचामन सिटी,
जिला नागौर,
राजस्थान ।

6 अगस्त, 1989 को पंबोघा ग्राम की श्रीमती संतोष देवी सोमी स्नान करते समय कुंड में आ गिरी और डूबने लगीं । श्री रमेश कुमार मंडवाल ने उन्हें डूबते हुए देखा और उनकी सहायता के लिए दौड़ आए। वह तुरंत कुंड में कूद पड़े और महिला को बचाने का प्रयत्न करने लगे । परन्तु, दुर्भाग्यवश उस महिला ने उन्हे मजबूती से जकड़ लिया जिसके कारण वे अपने हाथ पैर ठीक से नहीं मार पाए । परिणाम-स्वरूप वे दोनों कुंड में बने कुएं की तरफ खिंचते चले गये और डूब गए ।

33. श्रीमती राधा देवी,
ग्राम मनसुमा,
डाकघर मनसुमा,
तहसील उर्गीमठ,
जनपद चमोली,
उत्तर प्रदेश ।

7 नवम्बर, 1988 को श्रीमती राधा देवी और कुछ अन्य स्त्रियां अपने मवेशियों के लिए जंगल में घास काट रही थीं । अकस्मात एक भालू श्रीमती शारदी देवी पर आ झपटा (कूदा) और उसने उन्हें पकड़ कर 40–50 फुट गहरे तालाब में फेंक दिया । इसपर वह महिला बहुत जोर से चीखी चिल्लायी, जिसके फलस्वरूप भालू डर के मारे वहां से भाग गया । अन्य स्त्रियां तुरन्त ही उस महिला की सहायता करने के लिए तालाब के निकट वहां पहुंची जहां महिला अपनी जान बचाने के लिए जूझ रही थी । श्रीमती राधा देवी अपनी जान की परवाह न करते हुए तालाब में कूद पड़ीं और उस डूबती हुई महिला को बचा कर बाहर ले आयीं । इस प्रकार उस महिला की बहुमूल्य जान बचा ली गयी ।

34. मास्टर सूरज पाल सिंह (मरणोपरान्त)
सुपुत्र श्री जसवन्त सिंह, ग्राम भारौली (सेवाली),
डाक घर काडोला,
जिला पौड़ी गढ़वाल, उत्तर प्रदेश ।

11 दिसम्बर, 1988 को 6 पाड़ा बटालियन का वाटर कैरियर आगरा कैन्ट के ओल्ड डेयरी फार्म में पानी की सप्लाई करने के उपरान्त पीछे मुड़ रहा था । अकस्मात एक 15 माह की बच्ची घर से बाहर निकली और गाड़ी के पिछले पहिए के नीचे आने लगी थी । यह देखकर 8 वर्ष का बच्चा मास्टर सूरज पाल सिंह उस बच्ची की सहायता के लिए दौड़ा आया । उसने उस बच्ची को पहिए के नीचे कुचले जाने से बचाने का प्रयास किया, किन्तु सफल नहीं हो पाया । बच्ची को बचाने का यत्न करते हुए वह स्वयं उसी पहिए के नीचे आ गया और उस बच्ची के साथ उसके प्राण पखेरू उड़ गए ।

35. कुमारी याचना चन्दोला,
शेलनिरम, मली ताल,
नैनीताल,
उत्तर प्रदेश ।

16 मई, 1989 को एक पांच वर्ष का बच्चा नियंत्रण से बाहर हुई एक मारुति कार से कुचले जाने वाला था । इस दृश्य को देखकर कुमारी याचना चन्दौला, जो अपने स्कूल जा रही थी, उस तेज रफ्तार कार से कुचले जाने का जोखिम उठाकर उस बच्चे को बचाने दौड़ी । वह बच्चे को धक्का देकर कार से कुचलने से बचाने में सफल हो गयी और उस प्रकार उसे जीवन दान दिया । ऐसा करते हुए कुमारी चन्दोला की स्वयं की टांग में गम्भीर चोटें आयीं ।

36. श्री प्रणव मजूमदार,
हास्पिटल, पाड़ा, डाकघर व थाना मैना गुडी,
जिला जलपाई गुड़ी,
पश्चिम बंगाल ।

29 सितम्बर, 1988 को श्री प्रणव मजूमदार ने स्कूल जाते हुए जारदा पुल को पार करते समय देखा कि एक लड़का नदी की तेज धारा में बह रहा था और डूबने वाला था जबकि बहुत से व्यक्ति चुपचाप उस बच्चे की दशा देख रहे थे परन्तु कोई भी उसकी सहायता के लिए आगे नहीं आया । केवल मजूमदार ही उसकी सहायता के लिए आगे आए । वह तुरंत ही नदी में कूद पड़े और कठिन परिस्थितियों में जूझते हुए उस लड़के की जान बचा ली । इस प्रकार उन्होंने अपनी जान को जोखिम में डालकर डूबते हुए उस लड़के की जान बचायी ।

37. श्री कृष्ण तुकाराम कदम (मरणोपरान्त)
40, नारवीर तानाजी वाडी,
शिवाजी नगर,
पुणे–411005 ।

15 जनवरी, 1990 को एक गूंगी बहरी लड़की रेल पटरी पार कर रही थी और एक रेलगाड़ी तेज गति से उनकी ओर चली जा रही थी। श्री कृष्ण तुकाराम कदम ने, जो अपने काम पर जा रहे थे, इस दृश्य को देखा और उस असहाय लड़की की जान बचाने के लिए दौड़ पड़े । वह उस लड़की तक पहुंचने में तो कामयाब हो गए परन्तु इससे पहले कि वह लड़की को बचा पाते, गाड़ी आ पहुंची और वे दोनों कुचल कर मर गए । श्री कदम ने एक लड़की की जान बचाने के साहसिक प्रयास में अपनी जान की कुर्बानी दे दी ।

38. जी/39533 वाई पायनीर नैना बहादुर,
518 इंजीनियर स्टोर्स एण्ड सप्लाई कम्पनी,
भाफत 99 ए० पी० ओ० ।

21 अगस्त, 1988 को अरूणाचल प्रदेश में तेजु हयूलियांग सड़क पर "यान नाला" में भारी बाढ़ आ गई थी और "यान" स्थित सीमा सड़क संगठन का शिविर जलमग्न हो गया था । कई व्यक्ति बाढ़ में घिर गए थे और यूनिट आवास में बाढ़ के पानी के घुसने का खतरा था जिससे मानव जीवन को गंभीर खतरा पैदा हो सकता था । प्रोजेक्टवर्तक के पायनीर नैना बहादुर ने, जो बचाव दल के एक सदस्य थे, बाढ़ से घिरे हुए लोगों को बचाने में प्रशंसनीय कार्य किया । उन्होंने बच्चों और औरतों को एक-एक करके अपने कन्धों पर उठाकर उन्हें सुरक्षित स्थान पर पहुंचाने के लिए कई बार उफनते हुए नाले को पार किया । अगर वे समय रहते प्रयास न करते तो कई लोगों की जान चली जाती ।

39. एन० सी० ई० एल० ए० आर० 11 (097000 एफ)
(मरणोपरान्त)
बेंज्जम धानम जया,
क्वार्टर न० 80—जे, वरुणापुरी,
मगुर हिल, वास्को-डी-गामा,
गोवा—403802 ।

15 अप्रैल, 1989 को श्री बेंज्जम धानम जया कुछ अन्य नाविकों और नागरिकों के साथ झुंसा बीच पर तैर रहे थे और उन्हें ऊंची लहरें तथा तेज समुद्री धारा गहरे पानी में बहा ले गई । तैरने वालों में से एक 16 साल का लड़का डूब रहा था और वह सहायता के लिए चिल्लाया। चिल्लाने की आवाज सुनकर श्री जया उसकी सहायता के लिए दौड़े । वह तैर कर उस लड़के तक पहुंचे और उसे मजबूती से पकड़कर अपने कन्धों पर बैठा लिया परन्तु वह पानी की तेज धारा के कारण तैर कर वापिस किनारे पर नहीं पहुंच सके । इस बीच उनकी ऐसी हालत देखकर एक दूसरा नाविक उनकी ओर लपका और दोनों को किनारे पर ले आया । जब तक श्री जया थकान के कारण बेहोश हो गए और उनकी मृत्यु हो गई । श्री जया ने डूबते हुए लड़के की जान बचाने के लिए साहसिक प्रयास करते हुए अपने प्राण गवां दिए ।

40. श्री वईकृष्ण बाजपेयी,
असिस्टेंट वर्क्स मैनेजर,
आर्डनेंस इक्यूपमेंट फैक्ट्री,
कानपुर ।

41. श्री हरजीत सिंह,
ओवरसियर,
आर्डनेंस इक्यूपमेंट फैक्ट्री,
कानपुर ।

17 अप्रैल, 1989 को, आर्डनेंस इक्यूपमेंट फैक्ट्री, कानपुर के 5 कर्मचारी चर्मशोधन अनुभाग बहिःस्राव एकत्रित करने की होदी में सफाई के लिए गए और अन्दर की जहरीली गैस के कारण बेहोश हो गये। अन्दर फंसे पांचों व्यक्तियों की जान खतरे में थी। खतरनाक परिस्थिति से डरे बिना सर्व श्री वईकृष्ण बाजपेयी और हरजीत सिंह होदी में नीचे उतर गए और संकटग्रस्त व्यक्तियों को बाहर ले आए । परन्तु दुर्भाग्यवश उनमें से तीन को अस्पताल ले जाते समय मृत्यु हो गई और अन्य दो की अस्पताल में इलाज के दौरान मृत्यु हो गई ।

42. जी/157564 डब्ल्यू० एल०/हैंड (एन/टी)/ जयसिंह,
1581 पायनीर कम्पनी, प्रोजेक्ट वरतक,
जी० आर० ई० एफ०, मार्फत 99 ए० पी० ओ० ।

अगस्त, 1988 के दौरान अरुणाचल प्रदेश में तेजू ह्यूलियांग स्थित यान नाला में भारी बाढ़ आ गई थी और यान शिविर, जहां सीमा सड़क संगठन की तीन यूनिटें स्थित थी, पूर्णतया बाढ़ के पानी में डूब गया था। बाढ़ में घिरे कार्मिकों को निकाला जा रहा था और लीडिंग हैंड जयसिंह निकासी कार्य के इंचार्ज थे । उन्होंने सभी व्यक्तियों को तेजी से बहते पानी को पार करने के लिए प्रोत्साहित किया । पार करते समय, पायनीर मिल्खा सिंह फिसल गए और लगभग डूबने को हो गए । श्री जयसिंह तत्काल बाढ़ के पानी में कूद पड़े और तैरते हुए उनके पास पहुंचे । उन्होंने उसे मजबूती से पकड़ा और बचाकर सुरक्षित स्थान पर ले आए । इस प्रकार उन्होंने अपनी जान जोखिम की परवाह किए बिना एक असहाय व्यक्ति की जान बचाई ।

43. जी/156313—ए सुपरवाईजर नान-टैक्नीकल ग्रेड—II,
प्रदीप कुमार मैती,
1072 फील्ड वर्कशाप (जी० आर० ई० एफ०),
मार्फत 99 ए० पी० ओ० ।

22 जून, 1989 को ड्राईवर देशराज दुर्घटनावश कैम्पबैल बे जेटी पर समुद्र में गिर पड़े और डूबने लगे क्योंकि वह तैरना नहीं जानते थे। इस दृश्य को देखकर, श्री मैती तत्काल समुद्र में कूद पड़े और तैरकर उस तक पहुंच गए । उन्होंने डूबते हुए व्यक्ति को मजबूती से पकड़ लिया, उसे पानी के ऊपर तैराए रखा और धीरे-धीरे उसे जेटी सीढ़ियों के पास ले आए । वहां एकत्रित अन्य लोगों ने उन्हें पानी से खींचकर बाहर निकाला ।

44. श्री अनिल कुमार,
निवासी कुल्लू, तहसील—मूरांग,
जिला—कल्पा स्थित किन्नौर,
हिमाचल प्रदेश ।

45. श्री रघुबीर सिंह,
निवासी कुल्लू तहसील—मूरांग,
कल्पा, जिला—किन्नौर,
हिमाचल प्रदेश ।

अगस्त, 1987 में तीन व्यक्ति रणारिक खड्ड में गिर गए और अपने जीवन के लिए संघर्ष कर रहे थे । सर्व श्री अनिल कुमार और रघुबीर सिंह ने, जो स्कूल जा रहे थे, उनकी दशा देखी और सहायता के लिए दौड़ पड़े । वे अपनी जान के जोखिम की परवाह किए बिना तत्काल खड्ड में कूद पड़े और डूबते हुए व्यक्तियों को बचा लिया ।

46. श्री अरुण कुमार,
पुत्र श्री मेहर चन्द,
गवर्नमेंट मिडिल स्कूल, नैना देवी जी,
उप तहसील—बिलासपुर,
हिमाचल प्रदेश ।

3 जुलाई, 1989 को, एक सात वर्षीय लड़की खेलते हुए बिजली के खम्भे से जुड़ी एक नंगी तार छू गई और उससे चिपक कर रह गई। परिणामस्वरूप उसकी चीख पुकार सुनकर श्री अरुण कुमार घटनास्थल की ओर दौड़े और कार्रवाई के लिए हरकत में आ गए । वे तत्काल एक बांस की डंडी ले आए और उसकी सहायता से असहाय लड़की को जानलेवा तार से अलग किया और उसकी जान बचाई ।

47. जी० ओ० 2079 सहायक अभियंता,
(सिविल) श्री ज्ञान सिंह,
1416, रोसी सर्वे एण्ड ट्रेस कट,
मार्फत मुख्यालय 14 बी० आर० टी० एफ०,
मार्फत 99 ए० पी० ओ० ।

23 जनवरी, 1990 को विशेष सुरक्षा ब्यूरो का एक वाहन 100 फुट गहरी एक घाटी में लुढ़क गया और छह व्यक्ति जिन्हें गंभीर चोटें आई थी उस दुर्घटनाग्रस्त वाहन के भीतर फंस गए थे । वाहन में फंसे व्यक्ति सहायता के लिए चिल्ला रहे थे । श्री ज्ञान सिंह ने जो अपनी जीप में वहां से गुजर रहे थे, उन्हें सहायता के लिए चिल्लाते हुए सुना और उनकी सहायता के लिए दौड़ पड़े । उन्होंने अपने एक आदमी को अन्य सहायता लाने के लिए भेज दिया तथा दूसरे श्री पदमनाथन की सहायता से बचाव कार्य शुरू कर दिया । काफी कोशिशों से वे तीन जख्मी व्यक्तियों को अपने कंधों पर उठाकर बाहर ले आए । इसी बीच, बचाव दल पहुंच गया और फंसे हुए अन्य सभी व्यक्तियों को बाहर निकाल लिया गया । अगर श्री ज्ञान सिंह ने साहसपूर्ण प्रयास न किया होता तो कई लोगों की जान चली जाती ।

48 श्री गुलाम मोहम्मद हुसैन,
गांव अफानी, डाक अथोड,
तहसील—किश्तवार,
जिला—डोडा,
जम्मू एवं कश्मीर ।

9 फरवरी, 1990 को गलहार सल्लारी मार्ग पर भारी चट्टान स्खलन हुआ और दो मजदूर और उनके तीन बच्चे मर गए और एक अन्य बच्चा मलबे में फंस गया। एक टी स्टाल के मालिक श्री गुलाम मोहम्मद हुसैन जी० आर० ई० एफ० कार्मिक दल के साथ बचाव कार्य के लिए दुर्घटना स्थल पर गए। बचाव दल ने मलबे के बीच से बच्चे के रोने चिल्लाने की आवाज सुनी और उसकी जान बचाने के लिए अथक प्रयास किए। श्री हुसैन ने श्रिमर लाल बहादुर की सहायता से भारी शिला के नीचे से पत्थरों को हटाया और एक छोटी सी सुरंग बनाई और फंसे हुए बच्चे को बाहर निकाला। इस प्रकार वह एक असहाय बच्चे की जान बचाने में सहायक सिद्ध हुए।

ए० के० उपाध्याय,
निदेशक

(इलैक्ट्रॉनिकी विभाग)

नई दिल्ली-110003, दिनांक 22 मार्च 1991

संकल्प

सं० 2(11)/89-एम०वी०—त्रिवेन्द्रम, कलकत्ता, लखनऊ, मोहाली तथा पुणे तथा इलेक्ट्रॉनिकी अनुसंधान तथा विकास केन्द्रों की स्थापना की गई है जिसका मुख्य उद्देश्य ग्रामीण अनुप्रयोग सहित इलेक्ट्रॉनिकी प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में अद्यतन तकनीकी जानकारी का अनुप्रयोग उन्मुख, क्षेत्र विशेष में अनुसंधान, डिजाइन तथा विकास करना है ताकि तकनीकी जानकारी तैयार की जा सके और देश के विभिन्न विनिर्माणकारी एककों में उत्पादन कार्य करने के लिए उनकी डिलीवरी की जा सके। ये पांचों इलेक्ट्रॉनिकी अनुसंधान तथा विकास केन्द्र संस्था पंजीकरण अधिनियम के अन्तर्गत अपने-अपने क्षेत्र में पंजीयक, सहकारी संस्था के पास पंजीकृत स्वायत्त वैज्ञानिक संस्थाएं हैं।

भारत सरकार ने अब इन सभी इलेक्ट्रॉनिकी अनुसंधान तथा विकास केन्द्रों के लिए एक ही प्रकार के नियम तथा विनियम तैयार करने का निर्णय किया है। इस उद्देश्य को हासिल करने के लिए दिनांक 10 फरवरी 1989 के संकल्प सं० 4(1)/88-वित्त II के जरिए इलक्ट्रॉनिकी अनुसंधान तथा विकास केन्द्र, त्रिवेन्द्रम के लिए गठित अधिशासी ढांचे में नीचे दिए अनुसार संशोधन किया जाता है, जो तत्काल प्रभावी होगा :—

इलेक्ट्रॉनिकी अनुसंधान तथा विकास केन्द्र, त्रिवेन्द्रम की अधिशासी परिषद्

(i)	सचिव, इलेक्ट्रॉनिकी विभाग, भारत सरकार अथवा उनके द्वारा नामित अधिकारी (पदेन)	अध्यक्ष
(ii) तथा (iii)	सचिव, इलेक्ट्रॉनिकी विभाग, भारत सरकार द्वारा नामित दो सदस्य	सदस्य
(iv)	निदेशक, इलैक्ट्रॉनिकी अनुसंधान तथा विकास केन्द्र, त्रिवेन्द्रम	सदस्य
(v)	केरल राज्य इलेक्ट्रॉनिकी विकास निगम लि० के प्रतिनिधि।	सदस्य
(vi)	प्रायोगकर्ता उद्योग अथवा संबंधित उद्योग संघ के प्रतिनिधि	सदस्य
(vii)	केरल सरकार के प्रतिनिधि	सदस्य
(viii)	संयुक्त सचिव तथा वित्तीय सलाहकार, इलैक्ट्रॉनिकी विभाग अथवा उनके द्वारा नामित अधिकारी (पदेन)	सदस्य–वित्त

इलैक्ट्रॉनिकी अनुसंधान तथा विकास केन्द्र, त्रिवेन्द्रम की कार्यकारी समिति

(i)	दक्षिणी क्षेत्र में राज्य स्तरीय इलैक्ट्रॉनिकी विकास निगम द्वारा नामित अधिकारी (बारी-बारी से)	अध्यक्ष
(ii)	संयुक्त सचिव तथा वित्तीय सलाहकार, इलैक्ट्रॉनिकी विभाग, भारत सरकार अथवा उनके द्वारा नामित अधिकारी (पदेन)	सदस्य
(iii)	इलैक्ट्रॉनिकी विभाग द्वारा नामित अधिकारी	सदस्य
(iv)	निदेशक, इलैक्ट्रॉनिकी अनुसंधान तथा विकास केन्द्र, त्रिवेन्द्रम	सदस्य

इलैक्ट्रॉनिकी अनुसंधान तथा विकास केन्द्र, त्रिवेन्द्रम के रजिस्ट्रार अधिशासी परिषद तथा कार्यकारी समिति के सचिव होंगे।

प्रबंध बोर्ड को समाप्त किया जाता है। नई अधिशासी परिषद को सलाह दी जाती है कि भारत सरकार द्वारा अन्य इलैक्ट्रॉनिकी अनुसंधान तथा विकास केन्द्रों के लिए यथा अनुमोदित नियमों के अनुसार इलैक्ट्रॉनिकी अनुसंधान तथा विकास केन्द्र, त्रिवेन्द्रम के नियमों तथा विनियमों और उप-विधियों में संशोधन करने की दिशा में तत्काल कार्रवाई करें।

आदेश

आदेश दिया जाता है कि इस संकल्प को भारत के राजपत्र में प्रकाशित किया जाए।

आदेश दिया जाता है कि इस संकल्प की एक-एक प्रतिलिपि सभी संबंधित व्यक्तियों/संगठनों को भेज दी जाए।

अमित किरण देब, संयुक्त सचिव

गृह मंत्रालय

नई दिल्ली-110001, दिनांक 27 मार्च 1991

स० यू-13019/2/89-जी० पी०—राष्ट्रपति, गृह मंत्री से संबद्ध संघ शासित क्षेत्र दादरा तथा नगर हवेली के निम्नलिखित गैर सरकारी सदस्यों को वर्ष 1990-91 के लिए मनोनीत करते हैं :—

(1) श्रीमती कोकिलाबेन डी० खण्डया, महिला सदस्य
(2) श्री पंजुस वंगद, सरपंच, मंडोनी (अ० जा०)
(3) श्री देवजी राजू गौड-सरपंच, दुधानी (अ० जा०)
(4) श्री धीरज सिंह यू० सोलंकी, सरपंच, नरोली।

ए० पी० शर्मा, निदेशक

वाणिज्य मंत्रालय

नई दिल्ली, दिनांक 22 जनवरी, 1991

सं० 3/2/73-एफ० टी० जैड (टी)—इस मंत्रालय की दिनांक 24-5-1973 की समय-समय पर यथासंशोधित अधिसूचना सं० 3/2/73 एफ० टी० जैड (टी०) में आंशिक संशोधन करते हुए केन्द्र सरकार एतद्द्वारा काण्डला मुक्त व्यापार जोन प्राधिकरण का निम्नानुसार पुनर्गठन करती है।

1. सचिव/विशेष सचिव वाणिज्य मंत्रालय, भारत सरकार।	अध्यक्ष
2. मुख्य सचिव, गुजरात सरकार।	सदस्य
3. सचिव औद्योगिक विभाग और या श्रम विभाग और या विद्युत विभाग, गुजरात सरकार।	सदस्य
4. सचिव, आर्थिक कार्य विभाग, वित्त मंत्रालय, भारत सरकार।	सदस्य
5. सचिव, राजस्व विभाग, वित्त मंत्रालय, भारत सरकार।	सदस्य
6. सचिव, शहरी विकास मंत्रालय, भारत सरकार।	सदस्य
7. सचिव, उद्योग मंत्रालय, औद्योगिक विकास विभाग, भारत सरकार।	सदस्य
8. अध्यक्ष, काण्डला पोर्ट ट्रस्ट।	सदस्य
9. अपर सचिव और वित्तीय सलाहकार वाणिज्य मंत्रालय, भारत सरकार।	सदस्य
10. अपर सचिव, प्रभारी ई० पी० जैड प्रभाग वाणिज्य मंत्रालय, भारत सरकार।	सदस्य
11. विकास आयुक्त काण्डला मुक्त व्यापार जोन।	सदस्य सचिव

2. काण्डला मुक्त व्यापार जोन (काफटज) प्राधिकरण, काण्डला मुक्त व्यापार जोन के त्वरित सृजन, वृद्धि और विकास के लिए सभी प्रमुख नीति मुद्दों को देखेगा। प्राधिकरण की बैठक वर्ष में एक बार होगी।

3. प्राधिकरण का अध्यक्ष किसी अन्य विभाग/एजेन्सी से तदर्थ आधार पर सहयोग कर सकता है यदि वह उसका सहयोग जोन की कार्यप्रणाली के लिए आवश्यक समझता है और यथापेक्षित उप समितियां नियुक्त कर सकता है।

सं० 4/1/73-ई० पी० जेड—इस मंत्रालय की दिनांक 15/2/1973 की समय-समय पर यथासंशोधित अधिसूचना सं० 4/1/73 ई० पी० जैड० में आंशिक संशोधन करते हुए केन्द्र सरकार एतद्द्वारा सांताक्रुज इलेक्ट्रानिक्स संसाधन जोन (सीप्ज) का निम्नानुसार पुनर्गठन करती है :-

1. सचिव/विशेष सचिव वाणिज्य मंत्रालय, भारत सरकार।	अध्यक्ष
2. मुख्य सचिव, महाराष्ट्र सरकार।	सदस्य
3. सचिव, उद्योग विभाग और या श्रम विभाग और या विद्युत विभाग, महाराष्ट्र सरकार।	सदस्य
4. सचिव, आर्थिक कार्य विभाग, वित्त मंत्रालय, भारत सरकार।	सदस्य
5. सचिव, राजस्व विभाग, वित्त मंत्रालय, भारत सरकार।	सदस्य
6. सचिव, शहरी विकास मंत्रालय, भारत सरकार।	सदस्य
7. सचिव, उद्योग मंत्रालय, औद्योगिक विकास विभाग, भारत सरकार।	सदस्य
8. अध्यक्ष बाम्बे पोर्ट ट्रस्ट,	सदस्य
9. अपर सचिव और वित्तीय सलाहकार वाणिज्य मंत्रालय, भारत सरकार।	सदस्य
10. अपर सचिव, प्रभारी ई० पी० जैड० प्रभाग वाणिज्य मंत्रालय, भारत सरकार।	सदस्य
11. विकास आयुक्त, सांताक्रुज इलेक्ट्रानिक्स निर्यात संसाधन जोन।	सदस्य सचिव

2. सांताक्रुज इलेक्ट्रानिक्स निर्यात संसाधन जोन प्राधिकरण (सीप्ज) सांताक्रुज इलेक्ट्रानिक्स निर्यात संसाधन जोन के तेजी से सृजन, वृद्धि और विकास के लिए सभी प्रमुख नीतिगत मुद्दों को देखेगा। इस प्राधिकरण की वर्ष में एक बार बैठक अवश्य होगी।

3. प्राधिकरण का अध्यक्ष यदि जोन के कार्य के लिए आवश्यक समझे तो किसी अन्य विभाग/एजेन्सी के प्रतिनिधि से तदर्थ आधार पर सहयोग कर सकता है तथा यथापेक्षित उपसमितियां नियुक्त कर सकता है।

सं० (4)/2/82-ई० पी० जैड०—इस मंत्रालय की दिनांक 25/1/84 की समय-समय पर यथासंशोधित अधिसूचना सं० 14(12)/82-ई० पी० जैड

में आंशिक संशोधन करते हुए केन्द्र सरकार एतद्द्वारा नौएडा निर्यात संसाधन जोन (नेप्ज) प्राधिकरण का निम्नानुसार पुनर्गठन करती है :—

1. सचिव/विशेष सचिव, वाणिज्य मंत्रालय, भारत सरकार ।	अध्यक्ष
2. मुख्य सचिव उत्तर प्रदेश सरकार ।	सदस्य
3. सचिव, उद्योग विभाग और या श्रम विभाग और या विद्युत विभाग उत्तर प्रदेश सरकार ।	सदस्य
4. सचिव, आर्थिक कार्य विभाग, वित्त मंत्रालय, भारत सरकार ।	सदस्य
5. सचिव, राजस्व विभाग, वित्त मंत्रालय, भारत सरकार ।	सदस्य
6. सचिव, शहरी विकास मंत्रालय , भारत सरकार ।	सदस्य
7. सचिव, उद्योग मंत्रालय, औद्योगिक विकास विभाग, भारत सरकार ।	सदस्व
8. अध्यक्ष, नौएडा ।	सदस्य
9. अपर सचिव और वित्तीय सलाहकार वाणिज्य मंत्रालय, भारत सरकार ।	सदस्य
10. अपर सचिव, प्रभारी ई पी जैड, प्रभाग, वाणिज्य मंत्रालय, भारत सरकार ।	सदस्य
11. विकास आयुक्त, नौएडा निर्यात संसाधन जोन ।	सदस्य सचिव

2. नौएडा निर्यात संसाधन जोन प्राधिकरण नौएडा निर्यात संसाधन जोन के तेजी से सृजन, वृद्धि और विकास के लिए सभी प्रमुख नीतिगत मुद्दों को देखेगा इस प्राधिकरण की वर्ष में एक बैठक अवश्य होगी ।

3. प्राधिकरण का अध्यक्ष यदि जोन के कार्य के लिए आवश्यक समझे तो अन्य किसी विभाग/एजेन्सी के प्रतिनिधि से तदर्थ आधार पर सहयोग कर सकता है तथा यथापेक्षित उपसमितियां नियुक्त कर सकता है ।

सं० 14/13/82–ई० पी० जैड०—इस मंत्रालय की दिनांक 4/1/1984 समय-समय पर यथा संशोधित अधिसूचना सं० 14/13/82–ई० पी० जैड० में आंशिक संशोधन करते हुए केन्द्र सरकार एतद्द्वारा फाल्टा निर्यात संसाधन जोन प्राधिकरण का निम्नानुसार पुनर्गठन करती है :—

1. सचिव/विशेष सचिव वाणिज्य मंत्रालय, भारत सरकार ।	अध्यक्ष
2. मुख्य सचिव पश्चिम बंगाल सरकार ।	सदस्य
3. सचिव, उद्योग विभाग और या श्रम विभाग और या विद्युत विभाग, पश्चिम बंगाल सरकार ।	सदस्य
4. सचिव, आर्थिक कार्य विभाग, वित्त मंत्रालय, भारत सरकार ।	सदस्य
5 सचिव, राजस्व विभाग, वित्त मंत्रालय, भारत सरकार ।	सदस्य
6. सचिव, शहरी विकास मंत्रालय भारत सरकार ।	सदस्य
7. सचिव, उद्योग मंत्रालय, औद्योगिक विकास विभाग भारत सरकार ।	सदस्य
8. अध्यक्ष कलकत्ता पोर्ट ट्रस्ट ।	सदस्य
9. अपर सचिव, और वित्तीय सलाहकार वाणिज्य मंत्रालय, भारत सरकार ।	सदस्य
10. अपर सचिव, प्रभारी ई० पी० जैड० प्रभाग वाणिज्य मंत्रालय, भारत सरकार ।	सदस्य
11. विकास आयुक्त फाल्टा निर्यात संसाधन जोन ।	सदस्य सचिव

2. फाल्टा निर्यात संसाधन जोन प्राधिकरण फाल्टा निर्यात संसाधन जोन के तेजी से सृजन, वृद्धि और विकास के लिए सभी नीतिगत मुद्दों को देखेगा । इस प्राधिकरण की वर्ष में एक बैठक अवश्य होगी ।

3. प्राधिकरण का अध्यक्ष किसी भी अन्य विभाग/एजेन्सी के प्रतिनिधि से जिसके सहयोग को वह जोन के कार्य के लिए आवश्यक समझे तदर्थ आधार पर सहयोग कर सकता है तथा यथापेक्षित उपसमितियां नियुक्त कर सकता है ।

सं० 14/4/82–ई० पी० जैड०—इस मंत्रालय की दिनांक 3 मई, 1989 की समय समय पर संशोधित अधिसूचना सं० 14/14/82–ई० पी० जैड० में आंशिक संशोधन करते हुए केन्द्र सरकार एतद्द्वारा विशाखापटनम निर्यात संसाधन जोन प्राधिकरण का निम्नानुसार पुनर्गठन करती है :—

1. सचिव/विशेष सचिव वाणिज्य मंत्रालय , भारत सरकार ।	अध्यक्ष
2. मुख्य सचिव, आंध्र प्रदेश सरकार ।	सदस्य
3. सचिव, उद्योग विभाग और या श्रम विभाग और या विद्युत विभाग, आंध्र प्रदेश सरकार ।	सदस्य

4. सचिव, आर्थिक कार्य विभाग, वित्त मंत्रालय, भारत सरकार ।	सदस्य
5. सचिव, राजस्व विभाग, वित्त मंत्रालय, भारत सरकार ।	सदस्य
6. सचिव, शहरी विकास मंत्रालय, भारत सरकार ।	सदस्य
7. सचिव, उद्योग मंत्रालय, औद्योगिक विकास विभाग, भारत सरकार ।	सदस्य
8. अध्यक्ष, विशाखापटनम पोर्ट ट्रस्ट ।	सदस्य
9. अपर सचिव और वित्तीय सलाहकार, वाणिज्य मंत्रालय, भारत सरकार ।	सदस्य
10. अपर सचिव, प्रभारी ई० पी० जैड० प्रभाग, वाणिज्य मंत्रालय, भारत सरकार ।	सदस्य
11. विकास आयुक्त, विशाखापटनम निर्यात संसाधन जोन ।	सदस्य सचिव

2 विशाखापटनम निर्यात संसाधन जोन प्राधिकरण, विशाखापटनम निर्यात संसाधन जोन के तेजी से सृजन, वृद्धि और विकास के लिए सभी नीतिगत मुद्दों को देखेगा । इस प्राधिकरण की वर्ष में एक बैठक अवश्य होगी ।

3. प्राधिकरण का अध्यक्ष यदि जोन के कार्य के लिए आवश्यक समझे तो किसी अन्य विभाग/एजेन्सी के प्रतिनिधि से तदर्थ आधार पर सहयोग कर सकता है तथा यथापेक्षित उपसमितियां नियुक्त कर सकता है ।

सं० 14/15/82-ई० पी० जैड०—इस मंत्रालय की दिनांक 30/1/1984 को समय समय पर यथासंशोधित अधिसूचना सं० 14/15/82-ई० पी० जैड० में आंशिक संशोधन करते हुए केन्द्र सरकार एतद्द्वारा कोचीन निर्यात संसाधन जोन प्राधिकरण का निम्नानुसार पुनर्गठन करती है :—

1. सचिव/विशेष सचिव, वाणिज्य मंत्रालय, भारत सरकार ।	अध्यक्ष
2. मुख्य सचिव, केरल सरकार ।	सदस्य
3. सचिव, उद्योग विभाग और या श्रम विभाग और या विद्युत विभाग, केरल सरकार ।	सदस्य
4. सचिव, आर्थिक कार्य विभाग, वित्त मंत्रालय, भारत सरकार ।	सदस्य
5. सचिव, राजस्व विभाग, वित्त मंत्रालय, भारत सरकार ।	सदस्य
6. सचिव, शहरी विकास मंत्रालय भारत सरकार ।	सदस्य
7. सचिव, उद्योग मंत्रालय, औद्योगिक विकास विभाग, भारत सरकार ।	सदस्य
8. अध्यक्ष, कोचीन पोर्ट ट्रस्ट	सदस्य
9. अपर सचिव, और वित्तीय सलाहकार वाणिज्य मंत्रालय, भारत सरकार ।	सदस्य
10. अपर सचिव, प्रभारी ई० पी० जैड प्रभाग, वाणिज्य मंत्रालय, भारत सरकार ।	सदस्य
11. विकास आयुक्त, कोचीन निर्यात संसाधन जोन ।	सदस्य सचिव

2. कोचीन निर्यात संसाधन जोन प्राधिकरण कोचीन निर्यात संसाधन जोन के तेजी से सृजन वृद्धि और विकास के लिए सभी नीतिगत मुद्दों को देखेगा । इस प्राधिकरण की वर्ष में एक बैठक अवश्य होगी ।

3. प्राधिकरण का अध्यक्ष यदि जोन के कार्य के लिए आवश्यक समझे तो किसी अन्य विभाग/एजेन्सी के प्रतिनिधि तदर्थ आधार पर सहयोग कर सकता है तथा यथापेक्षित उपसमितियां नियुक्त कर सकता है ।

सं० 14 (18) 82-ई० पी० जेड—इस मंत्रालय की दिनांक 4-1-1984 की समय-समय पर यथासंशोधित अधिसूचना सं० 14(18) 82-ई० पी० जेड० में आंशिक संशोधन करते हुए केन्द्र सरकार एतद्द्वारा मद्रास निर्यात संसाधन जोन प्राधिकरण का निम्नानुसार पुनर्गठन करती है :—

1. सचिव/विशेष सचिव, वाणिज्य मंत्रालय, भारत सरकार ।	अध्यक्ष
2. मुख्य सचिव, तमिलनाडु सरकार ।	सदस्य
3. सचिव, उद्योग विभाग और या श्रम विभाग और या विद्युत विभाग, तमिलनाडु सरकार ।	सदस्य
4. सचिव, आर्थिक कार्य विभाग, वित्त मंत्रालय, भारत सरकार ।	सदस्य
5. सचिव, राजस्व विभाग वित्त मंत्रालय, भारत सरकार ।	सदस्य

6.	सचिव, शहरी विकास मंत्रालय, भारत सरकार ।	सदस्य
7.	सचिव, उद्योग मंत्रालय, औद्योगिक विकास विभाग, भारत सरकार ।	सदस्य
8.	अध्यक्ष, मद्रास पोर्ट ट्रस्ट	सदस्य
9.	अपर सचिव और वित्तीय सलाहकार वाणिज्य मंत्रालय, भारत सरकार ।	सदस्य
10.	अपर सचिव, प्रभारी ई० पी० जेड० प्रभाग, वाणिज्य मंत्रालय, भारत सरकार ।	सदस्य
11.	विकास आयुक्त, मद्रास निर्यात संसाधन जोन	सदस्य सचिव

2. मद्रास निर्यात संसाधन जोन प्राधिकरण मद्रास निर्यात संसाधन जोन के तेजी से सृजन, वृद्धि और विकास के लिए सभी नीतिगत मुद्दों को देखेगा। इस प्राधिकरण की वर्ष में एक बैठक आवश्य होगी।

3. प्राधिकरण का अध्यक्ष यदि जोन के कार्य के लिए आवश्यक समझे तो किसी अन्य विभाग/एजेन्सी के प्रतिनिधि तदर्थ आधार पर सहयोग कर सकता है तथा यथापेक्षित उपसमितियां नियुक्त कर सकता है।

जवाहर सरकार, निदेशक

पर्यावरण और वन मंत्रालय

(पर्यावरण, वन तथा वन्यजीव विभाग)

नई दिल्ली–3, दिनांक 6 मार्च, 1991

संकल्प

विषय : पर्यावरण और वन मंत्रालय के अन्तर्गत पर्यावरण, वन तथा वन्य जीव विभाग के क्षेत्रीय कार्यालयों की स्थापना।

सं० 1–1/88–आर० ओ० (मुख्यालय)—पर्यावरण और वन मंत्रालय के अन्तर्गत पूर्वी क्षेत्र के लिए क्षेत्रीय कार्यालय की स्थापना दिनांक 7–4–1986 के संकल्प सं० 37–3/85–एफ० पी० के अनुसार भुवनेश्वर में की गई थी। बाद में, क्षेत्रीय कार्यालय, पूर्वी क्षेत्र के मुख्यालय को भुवनेश्वर से कलकत्ता स्थानांतरित करने के लिए इस मंत्रालय ने 12–5–1988 को एक अन्य संकल्प जारी किया था। प्रशासनिक औचित्य को देखते हुए अब क्षेत्रीय कार्यालय, पूर्वी क्षेत्र के मुख्यालय को भुवनेश्वर ही रहने देने का निर्णय लिया गया है।

यह आदेश इस विषय पर पूर्ववर्ती अन्य सभी आदेशों के अतिक्रमण में है।

आदेश दिया जाता है कि इस संकल्प की एक प्रति सभी संबंधित व्यक्तियों को प्रेषित की जाए।

यह भी आदेश दिया जाता है कि इस संकल्प को सभी लोगों की जानकारी के लिए भारत के राजपत्र में प्रकाशित किया जाए।

र० राजामणि, सचिव

PRESIDENT'S SECRETARIAT

New Delhi, the 26th January 1991

No. 54-Pres/91.—The President is pleased to approve the award of 'Kirti Chakra' to the undermentioned persons for acts of conspicuous gallantry :—

1. GO-2009-N ASSISTANT ENGINEER (CIVIL) RAJ PAL SINGH RANA

(Effective date of the award : 19th January, 1990)

On the night of the 18th/19th January, 1990, the road between Leh and Khardungla experienced the severest snowfall of the season which caused extensive road blocks. Assistant Engineer (Civil) Raj Pal Singh Rana of 54 Road Construction Company, Project Himank of BRO was the officer-in-charge of snow clearance and maintenance of that road sector. There was blinding snowfall which made the road susceptible to heavy landslides and avalanches. Road clearance had to be organised with the help of bulldozers.

Shri Rana alongwith three pioneers moved on foot at 1000 hours on the 19th January, 1990 followed by the bulldozer operator. A massive snowslide came roaring down the hill, burying the entire party including the dozer. With remarkable presence of mind and extraordinary courage, Shri Rana extricated himself from the snow. Having realised that his colleagues were sill buried in the snow he immediately set about rescuing them, unmindful of further risk to his life from fresh avalanches. Single-handedly he rescued three pioneers who were buried neck deep in snow and carried them on his shoulder one by one to safe place about 500 metres up the road. Immediately after that, another heavy slide buried the dozer. But inspite of extreme exhaustion, Shri Rana immediately organised the recovery of the dozer, using another machine which had in the meantime arrived on the scene. Thus, he cleared the road upto Khardungla by about 1900 hours the same day in one of the most daring operations.

Assistant Engineer (Civil) Raj Pal Singh Rana, thus, displayed conspicuous courage and devotion to duty in rescuing his comrades and saving costly equipment.

2. 2671202 NAIK PARKASH CHAND, 15 GRENADIERS (*Posthumous*)

(Effective date of the award : 19th May, 1990)

Naik Parkash Chand, 15 Grenadiers was the commander of an ambush party which was entrusted with the task of interception of Jammu & Kashmir Liberation Front militants who were attempting to infiltrate from Pakistan occupied Kashmir into our own territory in the Kupawara Sector. At about 1500 hours on the 19th May, 1990, Naik Parkash Chand noticed a party of six armed militants 500 metres away from his ambush site. Naik Parkash Chand quickly took his ambush party to a new position and challenged the militants. The militants brought down heavy volume of fire from Light Machine Gun and automatic rifles. This was duly returned by the ambush party. Soon, the militants began to flee towards Pakistan occupied Kashmir. Naik Parkash Chand in utter disregard of his personal safety kept on chasing them even under heavy fire of automatic weapons and killed one of them. During the exchange of fire Naik Parkash Chand sustained a bullet injury. The bullet went right through his neck. Inspite of being seriously injured, he kept on chasing the militants and killed one more militant after which he fell down and became unconscious. Later he succumbed to his injury.

Naik Parkash Chand displayed conspicuous courage in his fight with the militants and in the process, he made the supreme sacrifice.

3. 2467756 LANCE NAIK CHARAN SINGH, PUNJAB REGIMENT,

(Effective date of the award : 17th July, 1990)

Lance Naik Charan Singh of Headquarters 93 Infantry Brigade Camp volunteered to execute an extremely hazardous mission in an operation planned to apprehend or eliminate a group of 43 militants who were to cross the line of control and infiltrate into the Kashmir valley. After infiltration, the militants had taken shelter in a jungle in the night of 17th July, 1990. The leader of the militant group demanded a civil truck to be arranged to transport them to a safe place beyond which they were to proceed on their own. Based on this information, a civil truck was arranged to transport the group. The militants had also stipulated that the truck should be drived by either a Sikh or a Muslim driver. Disguised as a civil truck driver, Lance Naik Charan Singh volunteered to take the vehicle to the designated spot from where the hostiles were to board the bus. A tricky situation developed when the truck was immobilised about one kilometre away from the stipulated venue, due to some mechanical problems. Lance Naik Charan Singh remained unruffled and keeping his wits, he walked up to the designated point and established contact with the militants. He gained their confidence and took four of them to the site where the vehicle had broken down. With their help, he was able to start the vehicle. He, thereafter, came to the rendezvous point with his truck. The leader of the militants began questioning him about his bonafides. Lance Naik Charan Singh was able to convince the militants' Group that he was basically involved in such activities only to earn money at the behest of the owner of the truck who had been involved in such activities earlier also. Lance Naik Charan Singh's confident handling of the situation at that crucial time paid off and the militants, without any further suspicion, got into the truck.

Lance Naik Charan Singh driving his vehicle cautiously approached the pre-selected ambush site. At the ambush site, where a big stone was placed on the road, Lance Naik Charan Singh stopped his truck and got down. When he was coming out of the truck, the leader of the group who was sitting in the front seat caught hold of his arm and questioned him about his purpose. Lance Naik Charan Singh keeping his nerves cool stated that he was going to remove the stone on the road as the truck could not go over it. He, with admirable presence of mind, switched off the light of the truck and proceeded to the place where the stone had been kept on the road to indicate the ambush site. Simultaneously, the guide also got off the truck in order to escape. The militants sitting on the roof of the truck opened fire at both of them killing the guide on the spot. Immediately, thereafter, the ambush party of 15 Rajputana Rifles under the command of Colonel Bhagwan Singh brought heavy fire on the militants killing 21 and apprehending two others. Fourteen AK 47 Rifles, two Universal Purpose Machine Guns, one 40 mm Chinese Rocket Launcher with four rockets, three revolvers, 39 stick grenades, 42 anti-personnel mines and 2309 rounds of small arms ammunition were recovered in this operation.

Throughout the operation, Lance Naik Charan Singh showed great presence of mind and conspicuous gallantry at grave risk to his own life.

4. MAJOR ANURAG NAURIYAL (IC-30005), GORKHA RIFLES (*Posthumous*)

(Effective date of the award : 23rd October, 1990).

On the 23rd October, 1990, during Operation Rakshak, Major Anurag Nauriyal, Brigade Major of an Infantry Brigade accompanied the Commander of the Brigade for an official conference at Patti (Punjab). After the conference, both of them along with the Commanding Officer of 14 Bihar were going to visit terrorist infested areas. On the way, they received a radio message from Major JSK Rao that a contact with terrorists had been made near a farm house situated north west of village Bhura Karimpur and that he had sent a section of armed force with Subedar Uma Charan Prasad to apprehend a terrorist who had run away towards village Sankhatra while he himself with the remaining two sections was pursuing the other terrorists hiding near village Bhura Karimpur. Major Nauriyal, his Brigade Commander and Commanding Officer, 14 Bihar immediately rushed to the village Sankhatra where Subedar Uma Charan Prasad of 14 Bihar was engaging the terrorist who had taken shelter in the area. After a quick briefing, one section of Subedar Uma Charan Prasad and the two escort parties decided to execute a plan to tackle the terrorist. Major Nauriyal led one of the escort groups. Having reached the farm house, he positioned himself left of Colonel Om Prakash Deswal, thereby, trapping the terrorist. Subedar Uma Charan Prasad advanced towards the terrorist and in the exchange of fire, received a burst in his thigh. Major Nauriyal realised that the terrorist must be killed immediately so that the Junior Commissioned Officer could be evacuated. He alongwith Havildar Manoj Kumar led a full blooded charge on the terrorist. In the exchange of fire, Major Nauriyal was hit on the left arm. Inspite of his injury he kept on firing at the terrorist. The terrorist knowing that his rifle Magazine has been hit pulled out this pistol. But before he could take out his pistol and fire, Major Nauriyal fired and killed him with burst of his carbine. Major Nauriyal, however, succumbed to his injuries during evacuation to Advance Dressing Station, Harike.

Major Anurag Nauriyal, thus, displayed conspicuous gallantry and made the supreme sacrifice of his life in the best tradition of the army.

5. CAPTAIN RAKESH RANA (JC-43342), BIHAR REGIMENT

(Effective date of the award : 23rd October, 1990).

On the 23rd October, 1990, a foot patrol of a Battalion of the Bihar Regiment had an encounter with terrorists in the village Bhura Karimpur in Punjab. The cultivated fields where the terrorists were hiding were cordoned off. Captain Rakesh Rana was ordered to rush to the site immediately with a Quick Reaction Team. He rushed to the spot and established links with the patrol. The Commanding Officer decided to flush out the terrorists from the fields by physical assault. Captain Rana volunteered to lead the assault. He was ordered to lead the left wing of the assault into the fields alongwith Major John Sampath Kumar Rao and Colonel Om Parkash Deswal. He exhorted his men to press forward. He provided intimate fire support to the group of Subedar Hari Nam Singh and helped him to eliminate the terrorist who was holding up the centre of the assault line. In the second phase, he was again in the left flank. Captain Rana volunteered to close in on the terrorists with his group while Major JSK Rao's group was to provide fire support. Undaunted by the heavy fire, he alongwith Sepoy Durga Charan Oraon and other men approached the terrorist even as bullets went over their heads. Encouraged by his personal example, his men closed in on the terrorists. Sepoy Durga Charan Oraon aimed his Light Machine Gun at the terrodists and shot one of them. But in the return fire he was injured in the head and fell fatally wounded. Realising the danger, Captain Rana crawled upto Sepoy Durga Charan Oraon and unmindful of the terrorist fire, grabbed his Light Machine Gun. He charged at the terrorists' position firing from the Light Machine Gun. The terrorists, though wounded, were firing wildly. Capt. Rana sprayed bullets on the terrorists with his Light Machine Gun. He moved forward, crouched on his knees and emptied a full magazine. He killed two terrorists and avoided further causalties to his men. One AK-47 automatic rifle and one 7.62 mm self loading rifle with large quantity of ammunition were recovered.

Captain Rakesh Rana, thus, displayed conspicuous gallantry and devotion to duty in utter disregard of his personal safety.

6. 13614032 NAIK Y.M. BANSODE, (*Posthumous*)

2 PARA REGIMENT

(Effective date of the award : 4th December, 1990)

On the 4th December, 1990, 2 Para Regiment planned and launched a swift special Operation Shatrujeet to locate and destroy a major nerve centre and hide-out of People's Liberation Army in a thick jungle, near village Sialsia, District Chura Chandpur, Manipur. Naik Y.M. Bansode was chosen to lead the search column. After gruelling march for about 15 hours through the thick jungle, at about 0130 hours on the 5th December, the search party reached the suspected camp site. As soon as they came near the position of the militants, the entire party came under machine gun and automatic rifle fire. Realising the danger due to this heavy and

accurate firing, Naik Bansode immediately and single- handedly sprang into action. In total disregard of his personal safety, he charged at the machine gun post. In the process he received a full burst of machine gun fire in his abdomen. Inspite of his grievous injuries, Naik Bansode managed to pull down the machine gun and succeeded in overpowering the machine gunner and killed him. However, he succumbed to his injuries. The brave act of Naik Bansode led to a regrouping of the search column and successful completion of special Operation 'Shatrujeet' in which two militants were killed and four captured. One medium gun, five semi-automatic rifles, one semi-auto carbine, large quantity of ammunition, detonators and incriminating documents were recovered in the operation.

Naik Y.M. Bansode displayed rare devotion to duty and conspicuous bravery in the face of the militants and made the supreme sacrifice.

No. 55-Pres/91.—The President is pleased to approve the award of 'Vir Chakra' to the undermentioned persons for acts of gallantry :—

1. 3386270 Sepoy GURDIP SINGH, *(Posthumous)*
SIKH REGIMENT

(Effective date of the award : 14th February, 1989).

On the 14th February, 1989, Sepoy Gurdip Singh of 22nd Battalion of the Sikh Regiment, alongwith his platoon, was detailed to open road Kumlamanai—Mumalai in North Eastern Sri Lanka. When the party had gone about one kilometre from the post, the leading platoon came under heavy automatic fire of the militants from a very close range. The heavy barrage of automatic fire was immediately followed by blowing up of four claymore mines spread along the length of the column. Sepoy Gurdip Singh returned the fire from his position and immediately lay on ground and brought down heavy and effective fire on the militants. In the ensuing heavy exchange of fire, three members of his platoon were seriously wounded. But due to his presence of mind and effective covering fire, Sepoy Gurdip Singh prevented the militants from snatching the arms of the wounded soldiers and killed the leader of the militant group who was giving orders to the other militants. In the process, he got a burst in his head and died on the spot. But by then, he had broken the ambush, caused heavy casualties to the militants and sent an example to his follow men

Sepoy Gurdip Singh, desplayed conspicuous gallantry and valour in the face of the militants.

2. 13613007 Havildar JASH THAKUR, *(Posthumous)*
PARACHUTE REGIMENT

(Effective date of the award : 12th April, 1989).

Havildar Jash Thakur was a squad commander of Bravo Team 9 Para Commando. He had participated in almost all special missions launched by the unit since October, 1987 in Sri Lanka. On the 12th April, 1989, he and his squad accompanying a platoon of 12 Jat had an encounter with a group of approximately 20 to 25 militants. In the initial phases of the encounter, his squad members were wounded and their vehicle came to a dead stop. Havildar Jash Thakur stood his ground amongst the wounded and brounght down effective fire on the militants from the Light Machine Gun mounted on the vehicle. The militants attempted several times to rush to the vehicle. Havildar Thakur alongwith Captain Sanjay Kumar Thapa successfully foiled all such attempts. Four to five militants were killed and 7 militants injured. Havildar Thakur having exhausted his Light Machine Gun ammunition, grabbed a weapon from one of his wounded squad members, jumped out of the vehicle and charged at a militant who was trying to remove the weapons from the wounded. In this process, Havildar Thakur was fatally wounded and made the supreme sacrifice of his life.

Havildar Jash Thakur, thus, displayed conspicuous courage and valour in the face of the militants.

3. Captain JAINARAYAN SINGH BISHT (IC-45125-K),
1 MARATHA LIGHT INFANTRY

(Effective date of the award : 20th April, 1989).

On the 20th April, 1989, on receiving information about the militants hiding in the area of Chulipuram, Jaffna, Sri Lanka, Captain Jainarayan Singh Bisht quickly organised a riad on the hideout and himself led the assault on the militants. Despite heavy colume of effective automatic fire of the militants, Captain Bisht alongwith Lance Naik S. Chellapan charged at the militants from a flank. He killed one militant on the spot and thereafter in hot pursuit charged into a house where militants were hiding. In the process, one militant who was injured attempted to flee. Captain Bisht pursued the fleeing militant till he was trapped and shot dead by one of the stops very imaginatively deployed by him. This lightening and bold raid led by Captain Bisht led to the killing of 3 militants and recovery of 2 AK-47 automatic rifles, 4 magazines of AK-47 rifles, 4 hand grenades, ammunition and documents of great importance from the point of view of collecting intelligence and propaganda material of the militants.

Captain Jainarayan Singh Bisht, thus, displayed conspicuous courage and valour in the face of the militants.

4. 3978845 Lance Naik PREM SINGH, *(Posthumous)*
2 DOGRA

(Effective date of the award : 30th April, 1989).

Operation IBEX was launched in the Chumik Gyongla Glacier Area of Siachen on the 11th April, 1989. The operation aimed at the occupation of a particular Area Point. It involved the establishment of a post, the opening of a surface route and the establishment of a support Base and numerous staging camps from the nearest administrative support Base in the Gyongla-Glacier. Lance Naik Prem Singh was inducted in the operation as a reinforcement on the 27th April, 1989. He set about his assigned tasks with cheerful enthusiasm and Vigour and soon completed an ice tunnel which allowed observation over the forward slope swept by enemy fire.

On the evening of the 30th April, 1989 he was on sentry duty whilst the remaining members of his team were taking a well earned break. The enemies, taking advantage of the poor visibility, had closed in on the post surreptitiously. Suddenly Lance Naik Prem Singh saw three enemy soldiers looming out of the fog at a distance of mere 10 metres.

In quick reflex action, he opened fire from his rifle and downed the leading enemy soldier. However, his weapon immediately suffered cold arrest. He shouted 'Dushman-Dushman' alerting his comrades who tumbled out of their make shift shelter. At the same time, the enemy fired a long burst that hit Lance Naik Prem Singh in the stomech and chest. Although he was mortally wounded, this young soldier did not give up the fight. He pulled out the pin of a grenade and lobbed it at the enemy even as he was collapsing. His gallant act of self sacrifice had allowed his group the reaction time needed to beat back the enemy attack.

Lance Naik Prem Singh, thus, displayed conspicuous courage and valour in the face of the enemy.

5. 3984434 Sepoy SARDAR SINGH,
2 DOGRA REGIMENT

(Effective date of the award : 1st May, 1989).

Operation IBEX was launched in the Chumik-Gyongla Glacier area of Siachen on the 11th April, 1989. The operation aimed at the occupation of the ground of tactical importance on the Saltoro ridge in order to pre-empt the enemy and thwart their aggressive design. The area of operations was at an altitude varying between 15,000 and 22,000 feet. The temperature was extremely low, going down even to minus 30 degree celcius. Wind velocities touched 80 K.M. per hour. Massive avalanches triggered both by naural causes and enemy shelling were common occurrences. Sepoy Sardar Singh was selected as a member of the special team to open the route from Kamen to Ice Wall I.

On the night of the 30th April/1st May, 1989, Sepoy Sardar Singh was a member of a small group on the Bump guarding the South Western approach. At the time when the enemy launched attack on the Bump, he had just returned to his tent, taken off his boots and was warming his hands, feet and weapon, using a small stove. On hearing the sentry, Lance Naik Prem Singh's alarm, he picked up his weopan and rushed out barefooted into the snow and ice, to his post. Almost instantaneously, he saw the enemy soldiers

barely 10 metres away crouching and firing at the sentry. He opened fire with his rifle immediately and calmly picked off three of the enemy soldiers. Turning to his right, he observed one soldier firing at him from the rear. Sepoy Sardar Singh shot him dead. He was, thus, instrumental in breaking up the enemy's attack on the Bump that night.

Thus, Sepoy Sardar Singh displayed conspicuous gallantry and valour in the face of enemy assault.

6. Captain TEJBANS SINGH CHEHAL (IC-45060), ARTILLERY.

(Effective date of the award : 7th May, 1989).

Operation IBEX was launched in the Chumik-Gyongla Glacier Area of the Sichen on the 11th April, 1989. The operation aimed at the occupation of a crucial Area Point. The area of operations was at an altitude varying between 15,000 and 22,000 feet. The temperature was extremely low, going down even to minus 30 degree celcius at times. Wind velocities touched 80 K.M. per hour.

On the 19th April, 1989 as a result of the repidly developing situation in the Chumik-Gyongla Glacier Area, it had become imperative to induct an Observation Post Officer as part of the special task force. The need of the hour was an experienced officer who was suitably acclimatised. Captain Tejbans Singh Chehal was the ideal choice. During the period from the 21st April to the 7th May, 1989, Captain Chahel manned his observation post unaided. He searched for identified and registered enemy targets. On the 21st April, 1989, he executed particularly effective shoots against the Chumik and Musa Camps inflicting severe punishment on the enemy. Intercepts revealed that the enemy suffered very heavy casualties

On the night of the 30th April/1st May, 1989 when the enemy launched attack against the Bump, Captain Chehal manned his observation post throughout the night bringing down timely and effective concentration of fire on both the approaches contributing significantly in repulsing the attack.

On the 7th May, 1989, at approximately 1020 hours, the enemy fired accurate air burst ammunition. Captain Chehal was grievously wounded in the thigh by a splinter hit which shattered his femur bone resulting in excessive loss of blood and shock. Despite his servere injuries and unbearable pain, the officer continued to operate his radio set, determined not to let the enemy know that the Observation Post Officer had been injured. Captain Chehal was finally evacuated the same day.

Captain Tejbans Singh Chehal displayed conspicuous courage and valour in the face of the enemy.

7. 4354617 Lance Naik KAMKHOLAM KUKI, 7 ASSAM.

(Effective date of the award : 28th May, 1989).

Lance Naik Kamkholam Kuki of 7 Assam while on water collection duty on the 28th May, 1989, was ambushed alongwith his comrades in the built up area of Pottuvil town in Sri Lanka by five militants. He and the other occupants of the leading vehicle bore the brunt of the well planned ambush. One of his comrades was killed and the weapon of the other was rendered ineffective by the hostile fire. Lance Naik Kuki was also wounded. In spite of being wounded, Lance Naik Kuki kept his cool and in utter disregard of his personal safety, prevented the militants from snatching the weapon from his dead comrade and also on the process killed a hardcore militant, captured his weapon and wounded another.

Lance Naik Kamkholam Kuki, thus, displayed conspicuous courage, initiative and valour in the face of the militants.

8. Captain ASHISH SONAL (IC-44114), 10 PARA.

(Effective date of the award : 9th June, 1989).

On the 3rd November, 1987 an assault team including Captain (then second Lieutenant) Ashish Sonal of 10 PARA was entrusted with the task of clearing a militants' stronghold at Mulai in Jaffna Peninsula. They noticed Light Machine Gun detachment of the militants. Captain Ashish Sonal despite great risk to his life moved close to the militants' detachment alongwith one other rank and killed one militant and recovered the Light Machine Gun.

On the 1st May, 1989, on receiving information about three militants approaching, Captain Ashish Sonal alongwith Lance Naik Bhoop Singh Yadav immediately moved to a position of advantage and engaged the militants. In the ensuring exchange of fire, one of the militants was killed on the spot. Having lost one companion, the other two militants ran away, Captain Ashish Sonal alongwith Lance Naik Bhoop Singh Yadav chased the fleeing militants who under pressure ran into the ambush of 1 Sikh Light Infantry and both of them were killed this ambush. One AK 47 rifle, four magazines and some important documents were also recovered in this operation.

On the 5th June, 1989 on getting information about the militants hiding in a house in Varani North, Captain Ashish Sonal moved his troop stealthily and approached upto a distance of 50 metres from the hideout without being detected. The militants on being surprised chose to flee. Captain Ashish Sonal directed accurate fire on the fleeing militants which resulted in killing of four militants and recovery of two weapons.

Again on the 9th June, 1989 while returning to base after completion of yet another successful mission in Chavakacheri North his petrol had a chance encounter with the militants. In the exchange of fire which ensued, Captain Ashish Sonal in his usual daring manner fought the militants bravely for a long time and was hit in the head by a militant's bullet.

Captain Ashish Sonal, thus, displayed conspicuous courage and valiant leadership in a series of actions against the militants.

9. 5748878 Lance Naik BAL BAHADUR THAPA, 8 GORKHA RIFLES (*Posthumous*)

(Effective date of the award : 19th June, 1989).

While serving in Sri Lanka, Lance Naik Bal Bahadur Thapa was a member of a patrol party. He volunteered to be the scout of the patrol party thereby putting himself right in front. While patrolling along Rasa Veethi on the 19th June, 1989, he spotted three young men crossing a fence in a suspicious manner. Ever vigilant, Lance Naik Thapa started chasing these men to apprehend them. Seeing that they have been spotted, the suspected militants ran in different directions, jumping over the fence. Determinde to get the militants, Lance Naik Thapa followed one of them in hot pursuit. Realising that Lance Naik Thapa was pursuing him very closely, the militant tried to evade capture by lobbing a grenade which exploded in front of Lance Naik Thapa. Undaunted by the explosion of the grenade, Lance Naik Thapa continued to chase the militant, who was now joined by another militant. The militants opened up with AK-47 rifles and brought a heavy volume of automatic fire on Lance Naik Thapa. Undeterred by the fire, Lance Naik Thapa returned the fire with his rifle and killed one militant instantly. Subsequently search of the person of the dead militant resulted in recovery of two cyanide capsules, two micro cassettees containing incriminating material and rupees 3,14,663 in Sri Lankan currency. However, in the exchange of fire, Lance Naik Thapa was seriously injured and he succumbed to his injuries.

Lance Naik Bal Bahadur Thapa, thus, displayed conspicuous courage, bravery and valour in the face of the militants in total disregard of his personal safety.

10. 2877302 Rifleman MOHAN SINGH, (*Posthumous*) 11 RAJPUTANA RIFLES

(Effective date of the award : 29th July, 1989).

On the 29th July, 1989, information regarding frequent move of militants in Tanniyuttu town in Sri Lanka was received. Accordingly, an ambush was planned. Rifleman Mohan Singh was Light Machine Gunner No. 1 in the ambush platoon. As the ambush was located in a built up area, the

militants received information regarding their presence. At about 1220 hours, militants numbering 60 to 80 opened heavy fire on the ambush party. Rifleman Mohan Singh responded immediately and engaged the militants effectively. While firing, he suddenly saw a group of militants rushing to the neighbouring section to snatch the weapons from the injured soldiers. Unmindful of the risk to his life and displaying tremendous courage, he rushed with his Light Machine Gun and brought down heavy fire on the militants inflicting casualties on them. The militants fired back but had to beat a hasty retreat due to this onslaught. In the process, Rifleman Mohan Singh was hit and met a glorious end. He fought gallantry to save his fellow soldiers and their weapons.

Rifleman Mohan Singh, thus, displayed conspicuous courage and valour in the face of the militants.

11. Captain RAJINDER SINGH RANA (IC-42383), MADRAS REGIMENT

(Effective date of the award : 30th July, 1989).

Captain Rajinder Singh Rana was deployed in Mannar Sector in Operation Pawan. On the 30th July, 1989 his company was given the task of laying ambushes on Nedukandal Bund with a platoon each on the North and South of road Adampan-Andankulam. At about 1115 hours, he observed approximately 50 militants moving on the bund at a distance of 400 metres and advancing towards his position. He brought down medium machine gun fire on the militants who got off the bund and then taking cover of the bund moved into a position closer to his location. The militants brought down effective and intense fire simultaneously using approximately 40-50 automatic weapons and 60 mm mortars from different directions. In the exchange of fire, the officer sustained a gun shot injury on his hip and abdomen. Inspite of his injuries and profusely bleeding, the officer kept on manoeuvering and motivating his men. The officer himself manned the gun for some time and brought down fire on militants thus, inflicting heavy casualties on them. At 1430 hours when the officer observed 35—40 militants moving towards the North East preparing to attack his position, he directed artillery and mortar fire on them. The officer continued to fight till he fell unconscious. The officer on regaining consciousness after some times realised that 14 of his men including the Junior Commissioned Officer had badly injured. At about 1630 hours, his platoon had been practically surrounded from the direction of North, East and South and about 80—100 militants had again formed up to attack his position. Captain Rajinder Singh Rana though severely injured crawled to the medium machine gun position and brought down controlled volume of effective fire keeping in view the paucity of ammunition. The fight continued till 1830 hours when the militants finally disengaged and fled.

In the above encounter which lasted for 7 hours, Captain Rajinder Singh Rana dispite being seriously injured, displayed exemplary courage, initiative and professionalism in the face of the militants, handling out a crushing defeat to the militants 52 of whom were killed and 32 injured.

12. 2568506 Naik C. SUBBAIYAN, (*Posthumous*)
MADRAS REGIMENT

(Effective date of the award : 30th July, 1989)

Naik C. Subbaiyan was a section commander in Number 7 platoon of Charlie Company, 2 Madras deployed on Nedunkandal Bund on the 30th July, 1989 in Operation Pawan. At about 1130 hours his section came under heavy fire of 40—50 automatic weapons simultaneously from different directions. He and his section immediately retaliated. During the exchange of fire, Naik Subbaiyan sustained gun shot injuries in his lower leg and thigh. Though bleeding profusely, he moved from man to man motivating them to fight back. While doing so, he again received a gun shot injury on the lateral side of his hip. However, unmindful of his injury, he continued encouraging his men. By abount 1500 hours nine persons of his group had sustained injuries and the situation appeared precarious. While rendering first aid to one of the injured men of his section, he received another bullet injury on his chest. Despite being seriously injured thrice, Naik Subbaiyan with determination, courage and bold leadership fought on till he breathed his last. Throughout the operation which lasted for seven hours, he remained undeterred inspite of his severe injuries and displayed indomitable fighting spirit.

Naik C. Subbaiyan, thus, displayed conspicuous gallantry and valour in the face of the militants.

13. 4265785 Sepoy GHAMA ORAON,
4 BIHAR.

(Effective date of the award : 4th August, 1989).

While operating as the leading scout of a subsidiary column forming part of the operation 'Silver Fish' conducted to search and destroy militants in the dense jungles of Rugam, Shri Lanka on the 4th August, 1989, Sepoy Ghama Oraon encountered four militants armed with lathal weapons. This young and brave soldier stood his ground and displaying a high degree of sharp reflexes under most challenging conditions fatally shot two dreaded militants. Braving intense retaliatory fire by the remaining two militants, Sepoy Ghama Oraon displayed courage beyond expectation and grievously wounded these two militants. The injured militants also subsequently succumbed to their injuries. In this act of bravery, Sepoy Ghama Oraon displayed exceptional initiative, indomitable counrage, grit and determination in complete disregard of his personal safety.

Sepoy Ghama Oraon, thus, displayed conspicuous courage and valour in the face of the militants.

14. 9415167 Lance Naik TILAK BAHADUR RAI,
11 GORKHA RIFLES.

(Effective date of the award : 18th August, 1989).

On the 18th August, 1989 a special mission patrol was ambushed by approximately 40—50 militants in Sri Lanka. In the initial volley of intense fire brought down by the militants from different directions, Lance Naik Tilak Bahadur Rai suddenly found that all the members of the patrol preceding him have been seriously wounded and that the militants were attempting to pick up the radio set and 9 mm Carbine of Rifleman Bishnu Prasad Rai who was lying injured. Realising the gravity of the situation, Lance Naik Rai maintained his cool and displaying an extremely high standard of valour charged forward to extricate Rifleman Bishnu Prasad Rai. This daring act on his part un-nerved the militants and Lance Naik Rai not only rescued his wounded comrade but also caused heavy casualties on the militants. Lance Naik Rai continued to foil repetad attacks of the militants till the militants were forced to withdraw.

Thus, Lance Naik Tilak Bahadur Rai displayed conspicuous courage and initiative in the face of the militants.

15. 2884459 Rifleman NEMI CHAND, (*Posthumous*)
11 RAJPUTANA RIFLES

(Effective date of the award : 26th August, 1989).

While serving in Sri Lanka, Rifleman Nemi Chand was detailed with his platoon for the protection of a convoy proceeding from Mullaittivy to Nedunkeni and back on the 26th August, 1989. The convoy reached safely upto Nedunkeni; but while returning from Nedunkeni, it was ambushed by the militants. The militants engaged the convoy with heavy fire from automatic weapons and rocket launchers. Rifleman Nemi Chand and others who were in the protection vehicle at the rear of the convoy could not move forward with their vehicle due to the narrowness of the assage. Therefore, all the men of the protection team jumped from the vehicle and charged at the militants, firing from their hip positions. Undaunted by risk to his life, Rifleman Nemi Chand rushed towards a vehicle which was set ablaze by the militants with their rocket fire. He was suddenly hit on his thighs by the burst of automattic fire by the militants and fell on the ground. Displaying tremendous courage, Rifleman Nemi Chand crawled and fired back, injuring three militants. Seeing the fearless action of this gallant soldier, the militants fled into the jungle. Rifleman Nemi Chand was evacuated to Feild Ambulance Vyavunia where he succumbed to his injuries. Rifleman Nemi Chand's quick reaction and brave fight saved the lives of many Indian and Sri Lankan Soldiers in the convoy.

Thus, Rifleman Nemi Chand displayed conspicuous courage and valour in the face of the militants.

16. 3988349 Paratrooper PAWAN KUMAR, 10 PARA

(Effective date of the award : 31st August, 1989)

On the 31st August, 1989, on receipt of information about militants' presence near village Mawathipuram, Jaffna, Sri Lanka, two squads under Major Shoman Singh in three vehicles were deployed on a search and destroy mission. While passing through the village Mawathipuram on the Kankesanthurai—Tellipallai road, the assault squads came under intense fire by militants simultaneously from five houses alongside the road. The driver of the vehicle in which Paratrooper Pawan Kumar was travelling, was hit by a bullet and the vehicle came to a halt at the ambush site. As soon as the vehicle stopped the militants began throwing grenades at it. Paratrooper Pawan Kumar received a splinter injury in the head and the chest but took cover behind the ambushed vehicles and started firing. Out of the eight soldiers in the vehicle, four were killed and three were seriously injured. But, undaunted by this, Paratrooper Pawan Kumar continued firing and kept the militants at bay. All of a sudden, Paratrooper Pawan Kumar noticed a militant who had taken position behind a wall, firing at his colleagues trapped in the ambushed vehicle. In total disregard of his personal safety, he crept towards the wall, struck the militant with his weapon and snatched his weapon, thus, averting more casualties. The aggressive action of Paratrooper Pawan Kumar forced the militants to withdraw though they were numerically far superior.

Paratrooper Pawan Kumar, thus, displayed leadership of a high order, conspicuous courage and valour in the face of the militants.

17. Captain ALOK SINGH (IC-47422), JAT REGIMENT

(Effective date of the award : 9th September, 1989)

Captain Alok Singh, Company Commander of 12 Jat Regiment alongwith his company organised ambushes in Anantar Puliyan Kulam and Pariya Puyarasan Kulam in Sri Lanka as a part of interdiction planned on the 8th and the 9th September, 1989. An encounter with the militants on the 9th September, 1989 resulted in the capture of an important area leader and finance member of the militant organisation, the killing of 22 militants and infliction of injuries to 27 cadres, without any loss to the Indian troops. He displayed great courage and aggressive leadership in placement, redeployment, re-grouping of his troops during the encounter. Unmindful of his personal safety, Captain Alok Singh moved from one section to another, guiding his troops in the face of grave danger. In this process his LMG group became the main target of the militants. To cover the re-deployment of the LMG group, he stepped out in the open and shot dead four militants at point blank range who had advanced to overpower the group. Inspired by this gallant action of their leader, the troops fought back resolutely and inflicted heavy casualties on the militants.

Captain Alok Singh, thus, displayed conspicuous courage, tactful leadership and valour in the face of the militants.

18. Captain CHANDER BALLABH SHARMA (IC-41411) SM, INFANTRY

(Effective date of the award : 13th September, 1989)

On the 13th September, 1989 at about 1000 hours, a message was received from Subedar Teja Singh that his platoon had an encounter with the militants in the Southern part of Kadaiparichehan in Sri Lanka. Captain Chander Ballabh Sharma Second-in-Command of Alfa Company 13 Sikh Light Infantry was ordered by his Company Commander to rush with a quick reaction team and advance on to the militants from the east. As Captain Sharma reached near the militants with his section, they had to face heavy volume of fire from the western direction. But this gallant officer kept on advancing even in the face of heavy fire till he could see the militants. Captain Sharma spotted a militant who was trying to approach an injured IPKF soldier, with the aim of snatching away his weapon. He shifted to an open flank from where he could engaged the militant. In complete disregard of his personal safety, Captain Sharma moved like a flash and shot the militant trying to approach the injured soldier. Having killed the first one, he engaged the other militants by bringing heavy pressure on them from the eastern direction. Thereafter, he deployed four other ranks to cover his move and himself moved quickly with three other ranks in an attempt to get behind the house occupied by the militants. His movement drew heavy volume of fire. Once again despite risk to his personal safety, Captain Sharma kept moving and engaged the militants who were now firing desperately for evacuating their dead and wounded. Such a bold and swift action on the part of Captain Sharma and his section compelled the militants to flee for their lives. Captain Sharma vigorously pursued the fleeing militants across the water channel inflicting more damage on them. In this action seven militants were killed and more than six injured. Two auto rifles and a radio set were recovered.

Captain Chander Ballabh Sharma, thus, displayed conspicuous courage and valour in the face of the militants.

19. Colonel KESHAVA-PILLAI PARAMESVARAN-PILLAI SASIKUMAR (IC-26641-K), 8 GORKHA RIFLES (*Posthumous*)

(Effective date of the award 21st January, 1990)

On the 21st January, 1990 Colonel Kesava Pillai Parameswaran Pillai Sasikumar, Commanding Officer 7/8 Gorkha Rifles was instructed by Brigadier A. K. Sanyal, Commander 167 Infantry Brigade to provide one campany for operation in the area of HQ., 2 Madras in Sri Lanka, around which a large number of militants had been contacted and heavy exchange of fire was in progress. Colonel K P Sasikumar along with Charlie Company 7/8 Gorkha Rifles moved to the area of operation to relieve pressure on the Indian troops and to clear the militants who had taken up position in a number of houses in the locality. Leading elements of Charlie Company 7/8 Gorkha Rifles drew heavy fire all along their front from the immediate line of houses 10 to 20 metres ahead resulting in death of two Other Ranks on the spot. Further progress was thus stalled. At this stage, Colonel K P Sasikumar moved ahead and inching his way forward with his group reached the close vicinity of one of the houses from where militants were bringing down heaviest fire on the Indian troops and thus holding up their forward move. Colonel K P Sasikumar alongwith a handful of men accompanying him rushed towards the militants' position and was about to gain entry into the house when he was fatally hit by a burst of automatic fire. The courageous action of their Commanding Officer so inspired the troops of Charlie Company 7/8 Gorkha Rifles that they instantaneously attacked the militants' position forcing them to flee.

Colonel Keshava-Pillai Parameswaran-Pillai Sasikumar, thus, displayed conspicuous gallantry and valour in the face of the militants and made the supreme sacrifice.

No. 56-Pres/91.—The President is pleased to approve the award of 'Shaurya Chakra' to the undermentioned persons for acts of gallantry :—

1. CHOUDHURY HARIMOHAN SINGH YADAV, KANPUR, UTTAR PRADESH

(Effective date of the award : 1st November, 1984)

Kanpur city was one of the cities which witnessed large scale looting, arson and violence following the assassination of the then Prime Minister, Smt. Indira Gandhi on the 31st October, 1984. At about 8.00 p.m. on the 31st October, 1984, some miscreants surrounded the HIG Colony, Ratan Lal Nagar and indulged in disruptive activities. On hearing the noise, Choudhury Harimohan Singh Yadav climbed on the roof of his house and started firing in the air. His firing forced the miscreants to flee from the scene.

On the 1st November, 1984, a crowd of about 500 armed miscreants again surrounded the HIG Colony, Ratanlal Nagar. Choudhury Harimohan Singh Yadav with his son climbed on the top of a house just in front of his own house and again started firing in the air. The rioters ran away.

Choudhury Harimohan Singh Yadav, thus, displayed exemplary courage and presence of mind and foiled the attempts of the miscreants and saved several innocent lives as well as property.

2. SHRI MOTIRAM RAISINH SONAWANE, MAHARASHTRA (*Posthumous*)

(Effective date of the award : 23rd January, 1988)

Shri Motiram Raisinh Sonawane, a forest guard in Sangvi Range, Dhule Distt. of Maharashtra, received information on the 23rd January, 1988 about illicit cutting of trees in the reserved forest of that Range. A raiding party of the Forest Department including Shri Raisinh and some policemen went to the spot near Budki village for arresting the offenders. The offenders had hidden themselves behind bushes and surrounding agricultural crops. As soon as the raiding party reached the spot, they came out and attacked the party from all directions with lathis, arrows and stones. The attack was completely unexpected and, therefore, a state of confusion prevailed. All other members of the raiding party including the policemen ran for safety. But Shri Motiram Raisinh Sonawane stood firm and fought the offenders. Heavily outnumbered, he was overpowered by the offenders who burnt him alive by sprinking kerosene on his whole body. By the time additional re-inforcements could reach the spot, he was dead.

Shri Motiram Raisinh Sonawane, thus, displayed conspicuous courage in his encounter with the poachers and made the supreme sacrifice in protecting valuable Government property.

3. SHRI HARNAM SINGH, KURUKSHETRA, HARYANA

4. SMT. JASWANT KAUR, KURUKSHETRA, HARYANA

5. SHRI KHUSHDEV SINGH. (*Posthumous*) KURUKSHETRA, HARYANA.

6. SMT. GURPREET KAUR, (*Posthumous*) KURUKSHETRA, HARYANA.

7. SHRI GURDEEP SINGH, (*Posthumous*) KURUKSHETRA, HARYANA.

(Effective date of the award : 9th April, 1988)

On the 9th April, 1988 at about 8.00 p.m. a terrorist entered the house of Shri Harnam Singh through the main gate and called him. Shri Harnam Singh alongwith his wife Smt. Jaswant Kaur came out in the courtyard of the house and noticed a young terrorist aiming at him with a revolver. Shri Harnam Singh immediately grappled with the said terrorist and Smt. Jaswant Kaur caught him by the hair. At the same time, another young terrorist entered the courtyard and started firing from AK-47 rifle. Two bullets hit Shri Harnam Singh on his left hand and four bullets hit Smt. Jaswant Kaur on the right side of her stomach. Hearing the sound of bullets, Shri Khushdev Singh (son of Shri Harnam Singh), Smt. Gurpreet Kaur (his daughter-in-law) and Shri Gurdeep Singh (son of the brother-in-law of Shri Harnam Singh) came out from the room to the courtyard and started fighting with the terrorist who kept firing from AK-47 rifle. In the process, Shri Gurdeep Singh was hit by three bullets—two in the abdomen and one on the elbow of the left hand. He fell down at the main gate of the house and died on the spot. Shri Khushdev Singh and his wife Smt. Gurpreet Kaur also caught hold of the terrorist armed with AK-47 rifle. Shri Khushdev Singh and Smt. Gurpreet Kaur came out into the street grappling with the terrorist. The terrorist caught by Harnam Singh and Smt. Jaswant Kaur also dragged Smt. Kaur in the street. A third terrorist, who was standing in front of the main gate fired several times from his AK-47 automatic rifle. Shri Khushdev Singh, Smt. Gurpreet Kaur as well as the terrorist caught by Shri Harnam Singh and Smt. Jaswant Kaur were seriously injured by the bullets being fired by the third terrorist. As a result the terrorist (caught by Shri Harnam Singh) lost his life on the spot. Shri Khushdev Singh and Smt. Gurpreet Kaur also later succumbed to their injuries in civil Hospital, Shahbad

Thus, Shri Gurdeep Singh, Shri Khushdev Singh and Smt. Gurpreet Kaur made the supreme sacrifice by bravely fighting the dreaded terrorists even though they were without any weapon. Smt. Jaswant Kaur and Shri Harnam Singh, despite their old age, exhibited rare presence of mind and exceptional bravery in grappling with the terrorists and keeping one of the terrorists under their control even after both of them had been hit by bullets.

8. SHRI RAKESH KUMAR, SHAKUR BASTI, DELHI

(Effective date of the award : 8th May, 1989)

On the 8th May, 1989 at about 1800 hours, two notorious criminals viz. Shri Rajinder Singh and Shri Hari Prakash raided a jewellery shop in Rajouri Garden and injured 4 persons out of whom one died on the spot and another in a hospital. As it caused a lot of commotion, the two criminals fled from the scene without taking anything from the shop. Shri Rakesh Kumar working as a salesman in a nearby shop chased the fleeing dacoits and followed them upto the Najafgarh Road bus stop. As the criminals boarded a D.T.C. bus, Shri Rakesh Kumar also quietly boarded the same but and kept watch on the two criminals and tried to enlist the support of some fellow passengers in apprehending the criminals. However, none came forward. Shri Rakesh Kumar then, got down at Tilak Nagar Police Station and sought held from policemen on duty. A Head Constable alongwith a constable and two home guards accompanied Shri Rakesh Kumar and the party proceeded to the spot in a jeep. The two criminals had also got down from the bus at Tilak Nagar and were trying to board another bus when Shri Rakesh Kumar spotted them. He alongwith the police personnel pounced upon them. Shri Rakesh Kumar caught hold of the bag of one of the criminals from which the other criminal was trying to take out his pistol and thus, foiled his attempt at firing. The finally overpowered the two criminals.

Shri Rakesh Kumar exhibited exemplary courage and presence of mind in getting both the culprits pinned down and nabbing them at grave risk to his own life.

9. 2881613 RIFLEMAN SUNDER SINGH, 15 RAJPUTANA RIFLES

(Effective date of the award : 19th May, 1989)

On the night of the 18th/19th May, 1989 one civilian of village Noglo in District Tirap of Arunachal Pradesh was killed by the Naga hostiles. On receipt of the above information, a special operation named 'Gheri Chaal' was launched to seal the International Border between India and Myanmar and to comb the suspected villages and the area around the border in order to apprehend Naga hostiles

Havildar Hukam Singh, the commander of the section detailed to search the area directed Rifleman Sunder Singh to act as the leading scout of the section. The section left their location at 0530 hours. When they almost reached the hideouts of the hostiles, they came under effective, accurate and heavy volume of fire from automatic weapons. The section commander, sensing grave danger to the lives of the men, ordered them to charge through the ambush. The section charged at the ambushed site and during the charge Rifleman Sunder Singh was hit by a bullet of the militants in his right thigh. Inspite of his severe injury, he bravely charged through the hostile ambush. When his section linked up with the platoon, Rifleman Sunder Singh was given the first aid and he volunteered to charge once again with the platoon. When the platoon charged the hostile ambush site, Rifleman Sunder Singh again joined the platoon despite his injuries and charged on the hostile position for the second time.

Rifleman Sunder Singh, young soldier with barely five years of service, thus, displayed high sense of duty, dash and initiative and courage of a high order in the face of the militants.

10. SHRI MOHIT SARAF, UNIVERSITY OF DELHI, DELHI

(Effective date of the award : 25th May, 1989)

On the 25th May, 1989, Shri Mohit Saraf, a Law Student of Delhi University and his friends were waiting for a train at the New Delhi Railway Station, when they spotted a minor girl sitting all alone outside the First Class waiting room. Shri Mohit with the help of his friend, Natasha, went to her to find out why she was sitting all alone. She told them that she had some differences of opinion with her parents and that she was going to Bombay with a woman whom she kept on referring to as 'Bombay Wali aunt'. The woman had assured the girl that she would get her a job in Bombay. The girl also informed that the 'Bombay Wali aunt' was sleeping on the platform. The 'Bombay Wali aunt' on seeing these people threatened them and summonned some musclemen to intimidate them. She, however, slipped away when Mohit threatened to call the police. Mohit was warned by a muscleman of dire consequences including death if he tried to come to the girl's rescue. Mohit however, did not yield to their threats and with the help of his friends was able to restore the minor girl to her parents residing at Shakarpur near I.P Estate, New Delhi.

In another incident on the 24th June, 1990, Shri Saraf, through his tactful handling, was instrumental in nabbing a gang of professional cheats, for which he was presented with a Commendation Card by the Deputy Commissioner of Police, New Delhi.

On the 31st October, 1990, Shri Saraf played a crucial role in busting a gang of burglars at the risk of his life.

Shri Mohit Saraf, thus, displayed not only conspicuous gallantry but also an exemplary sense of social responsibility on several occasions.

11. G-159885 OPERATOR EXCAVATING MACHINERY, SEWA SINGH

(Effective date of the award : 10th July, 1989)

On the 15th/16th June, 1989, torrential rains had caused wide-spread devastation to Chanduar-Tawang Road, thereby, serverely disrupting the line of communication to the forward areas. Landslide clearance under these conditions was full of risks due to likelihood of fresh slides. At the same time, the road being operationally important, could not be kept closed for a long time.

Inspite of heavy odds and attendant risks, Operator Excavating Machinery Sewa Singh of 178 Formation Cutting Platoon, Project Vartak of Border Roads Organisation volunteered to clear the road with his bulldozer. He continued his work in the midst of incessant rains, thick fog and shooting boulders, for 16 to 18 hours every day. However, bad luck befell the party. On the 10th July, 1989, a heavy landslide blocked the road. This included a huge boulder which could not be bypassed and could only be cleared by combined operation of blasting and clearing the fragmented debris by dozer. At the same time, there was a strong possibility of the hill face getting further landslides on account of incessant rains and the tremors of blasting.

Notwithstanding the grave risks involved, the clearance operations were undertaken. Unfortunately, a heavy landslide came tumbling down burying the entire party. OEM Sewa Singh was rescued from the landslide as he was partially buried. Immediately on rescue, he realised that his colleagues were still buried under the debris. Without wasting time, he not only rescued his colleagues but also extricated the dozer which was buried under the debris. This operation lasted one and half hours.

Thus, Operator Excavating Machinery Sewa Singh exhibited conspicuous gallantry and exceptional devotion to duty in saving the lives of several of his colleagues and his dozer.

12. SHRI JURAN KUMAR BANERJEE, ISHAPORE, WEST BENGAL

(Effective date of the award : 6th August, 1989)

On the 6th August, 1989, a gang of three dacoits got into 9 Up Doon Express with the intention of committing dacoity. Immediately after the train left the Howrah Station, the gang attacked the passengers in the First Class compartment in which Shri Juran Kumar Banerjee, an employee of the Metal and Steel Factory, Ishapore was travelling with his family. As the armed dacoits started snatching the valuables of the passengers, Shri Banerjee showed exemplary courage and with the help of his two sons, pounced upon them and fought relentlessly without caring for the injuries inflicted upon his person. They finally succeeded in overpowering one of them and later handed him over to the GRPF, Sreerampore.

Shri Juran Kumar Banerjee displayed exceptional courage in catching an armed dacoit in the running train at a great risk to his own life.

13. 14328128 HAVILDAR RATAN LAL RAJBANGSHI, ARTILLERY (*Posthumous*)

(Effective date of the award : 31st August, 1989)

On the 31st August, 1989 at about 0830 hours, a rogue elephant entered the Solmaraghat cantonment area and started chasing human beings who came in its way. Having come from the jungles alongwith three other elephants, it started moving on the Solmaraghat-Tejpur main road, Havildar Ratan Lal Rajbangshi was driving a light military vehicle on the same road carrying two ladies and two children to 155 Base Hospital for medical treatment. The elephant rushed towards the vehicle. Havildar Rajbangshi immediately stopped the vehicle and came out to draw the attention of the elephant towards himself and started running away from the vehicle so as to divert it away from the school children and the ladies sitting in the vehicle. The elephant turned towards the Non Commissioned Officer and started chasing him. In utter disregard of his personal safety, Havildar Rajbangshi continued to run on the road looking back every now and then, thereby luring the elephant towards himself with the hope that the elephant would get out of the cantonment area in this process. These tactics worked for some time, but soon the elephant overtook Havildar Rajbangshi, caught him in its trunk and violently threw him on the ground and thereafter, trampled him with its foot. The Non Commissioned Officer died instantaneously. Thereafter, the elephant in a fury ran away from the cantonment area.

Havildar Ratan Lal Rajbangshi, thus, displayed presence of mind and conspicuous bravery and made the supreme sacrifice of his life in order to save the lives of others.

14. 731119559 HEAD CONSTABLE KHUNIHO SEMA, BORDER SECURITY FORCE (*Posthumous*)

(Effective date of the award : 1st September, 1989)

On the 1st September, 1989 at 0245 hours, about 50 NSCN Under Grounds under the leadership of Self Styled Major Ramkathing attacked Border Security Force Post 'Laniye Bridge' in Ukhrul District of Manipur. Head Constable Khuniho Sema was performing the duties of Company Havildar Major. On hearing the reports of firing, he jumped from his bed and loudly asked his men to take defensive positions and fire on the insurgents. After ensuring their despatch to the respective posts, he himself rushed towards the armoury and helped the Armoury Under Officer in opening the door of ammunition bunker. Therefore, he supplied arms/ammunition to the men, took one box of ammunition himself, crawled to the Armoury, took one rifle and again ordered "Fight the enemy till last". While firing at the insurgents from his rifle, he rushed towards the bunker in the face of heavy fire without caring for his own life. While he was only two yards away from the bunker, he was hit with a burst of fire in the stomach, as a result of which he fell down and breathed his last.

Head Constable Khuniho Sema, thus, displayed conspicuous gallantry and made the supreme sacrifice in his fight against the insurgents.

15. SHRI H. BASAVANNI, (*Posthumous*)
DISTRICT SHIMOGA, KARNATAKA

(Effective date of the award : 29th October, 1989)

Shri H. Basavanni, a forest guard in Shimoga Circle of Karnataka, was instrumental in bringing to book a number of sandalwood smugglers at grave personal risk and ultimately at the cost of his life. On the 29th October, 1989 at about 1.00 p.m., on receipt of information, he laid a road block on Sunnadakoppa Chikkjambur road in Shiralkoppa Range to apprehend the sandalwood smugglers. When the car of the smugglers was speeding towards Chikkjambur, Shri Basavanni fired a warning shot to stop the car at the road block. But the desperate smugglers would not stop. Seeing this, Shri Basavanni came out and himself stood by the road block for stopping the car. However, his bravery did not help as the smugglers dashed through the road block and ran over him. Shri Basavanni later succumbed to his injuries in the hospital on the 6th November, 1989.

Thus, Shri Vasavanni displayed exemplary courage and supreme devotion to duty at the cost of his life.

16. CAPTAIN VIRENDER KUMAR YADAV (IC-35527), ARTILLERY.

(Effective date of the award : 11th November, 1989)

Captain Virender Kumar Yadav was travelling by North East Express from New Delhi to Rangiya on the 11th November, 1989. Near Phaphund a large mob of approximately 4000 college students stopped the train and gheraoed it. The mob attacked and started damaging the 2 tier AC Compartment in which Captain Yadav was travelling. In utter disregard of his safety, Captain Yadav came out of the compartment, pacified the mob and prevented them from damaging the compartment. Suddenly, a Sikh gentleman came out of the compartment. When they saw him, the mob got infuriated once again and attacked him. The Sikh gentleman fell on the ground. Captain Yadav ran to the spot and rescued the man, who later turned out to be a Havildar from Border Security Force. In the process, Captain Yadav himself sustained bodily injury. He, thereafter, mustered four other military personnel travelling in the same train and posted them as sentries to protect the severely injured Havildar. The mob thereafter set fire to one of the compartments in which approximately twenty persons including army personnel belonging to a particular community were trapped. Seeing this, inspite of his injuries, Captain Yadav tried to save the lives of the passengers. The mob would not let him enter the compartment. But with great courage and determination, Captain Yadav forced his way into the compartment. With the help of the persons trapped inside, he broke open the ceiling of the compartment and let the water flow from the overhead tank, thereby, flooding the burning compartment. This ultimately extinguished the fire. Meanwhile the police arrived and with the help of the police, Captain Yadav managed to disperse the mob. He, thereafter organised medical help for the injured. Five army persons who were also severely wounded, were evacuated to Air Force Base Hospital at Kanpur personally by the Officer. The civilians were evacuated to the civil hospital.

Captain Virender Kumar Yadav, thus, displayed conspicuous courage under grave threat to his own life.

17. G-58052 OPERATOR EXCAVATING MACHINERY BHAIRO KOIRY

(Effective date of the award : 19th January, 1990)

Operator Excavating Machinery Bhairo Koiry of 168 Formation Cutting Platoon Care 113 Road Construction Company, Project Himank of Border Roads Organisation was detailed for snow clearance on Leh-Khalsar Road in the Ladakh region in January, 1990. The road Leh-Khalsar has high tactical and strategic importance. This road passes over Khardungla at an altitude of 18,380 feet and is the world's highest moterable road. The road has to be kept open throughout winter when snow accumulates even up to a depth of 30 feet and the temparature falls to (—) 40 C.

On the night of the 18th/19th January, 1990, the road between Leh and Khardungla experienced the severest snowfall of the season which caused extensive snow blocks all over. The responsibility of keeping the road open to traffic fell on OEM Bhairo Koiry. In spite of the continuing snow fall and poor visibility, he started his work. Though he was aware that there was every possibility of heavy landslides and avalanches, he carried on his work without fear. As OEM Bhairo Koiry was clearing the snow that was more than 25 feet deep, a massive snowslide came roaring down the hill, burying him and the entire party alongwith the dozer. With great physical effort and remarkable courage, OEM Bhairo Koiry alongwith Assistant Engineer (Civil) Raj Pal Singh Rana extricated themselves from the snow. They thereafter rescued some other pioneers who were buried neck deep in the snow below the road. Additionally OEM Koiry retrieved his dozer and without wating any time, immediately resumed the work of clearing the road. Braving the severe blizzards, adverse weather conditions and risking his life at every turn on the road, he achieved what appeared to be an impossible task of clearing the road by 1700 hrs the same day.

Operator Excavating Machinery Bhairo Koiry, thus, displayed extraordinary courage, determination, grit and extreme devotion to duty in maintaining the line of communication in the face of great personal risk.

18. 628814K CORPORAL SANTOSH KUMAR BAJPAI, MECHANICAL TRANSPORT DRIVER

(*Posthumous*)

(Effective date of the award : 30th January, 1990)

On the 30th January, 1990, Corporal Santosh Kumar Bajpai belonging to a Signal Unit, Air Force at Tejpur was detailed on temporary duty to an AF Station. After completion of the task, the airman boarded a civil but at 1330 hours for returning to Rangapara. At about the same time that day, a gang of armed militants had looted approximately Rs. 1 crore from SBI Rangapara. These armed militants were stranded with their booty at Borjully PWD Road about 3 Kms from Rangapara as their getaway vehicle brokedown. At this point of time the civil bus carrying Cpl Bajpai and other passengers reached that spot. The stranded armed extremists numbering approximately seven stopped the bus at gun point and ordered the driver to reverse and asked the passengers to get down. Realising that the extremists wanted to use the bus for their escape, Cpl Bajpai courageously came forward and refused to get down from the bus while the other frightened passengers disembarked. Cpl Bajpai, on the other hand, ordered the bus driver to drive on the bus to Rangapara. While Cpl Bajpai boldly defied the armed extremists, other passengers watched in mute silence and continued to obey the command of the extremists Angered at the defiance of Cpl Bajpai, one of the extremists fired at him from point blank range and killed him. Another extremist opened fire indiscriminately inside the bus. By this time one motor cycle and a moped happened to be passing by the site of the incident. In panic the extremists stopped and took over these two vehicles at gun point and five of the extremists escaped on these two vehicles while the other two ran away through the tea garden. The police recovered Rs. 73 lacs from the Ambassador Car which had broken down at the site of the incident. The civil bus was driven to the Rangapara Railway Hospital with the injured passengers and the deadbody of Col. Bajpai. Had Corporal Bajpai not put up a valiant resistance at the risk of his life, the extremists would have succeeded in getting away with the booty.

Corporal Santosh Kumar Bajpai, thus, displayed conspicuous bravery and made the supreme sacrifice of his life in public interest.

19. SMT. SADHANA PAWAR OF MAHARASHTRA

20. SMT. NEELA SAWANT OF MAHARASHTRA

(Effective date of the award : 14th February, 1990)

On the 14th February, 1990, Smt. Sadhana Pawar (nee Sadhana Paraskar) and Smt. Neela Sawant (nee Neela Patil) were on duty as air hostesses in the flight No. IC 605 from Bombay to Bangalore. While landing, the aircraft touched the ground. From their position, Sadhana and Neela could not see outside and at first they thought that it was a normal landing. Immediately thereafter, there was a second impact which was severe. As the aircraft was still in motion, Sadhana tried to look outside. By that time the aircraft made a third impact and came to a halt on marshy land. Smt. Sadhana saw a ball of smoke and fire in the forward section of the aircraft. Her colleague Neela sitting close to her was thrown out of her seat. Sadhana then shouted at Neela to get the passengers out as the fire and smoke were beginning to engulf the aeroplane. In the meantime, Sadhana opened the rear door on the left side. Sadhana and Neela helped the passengers leave the aircraft by the same door. As the passengers were in a state of shock and confusion, their reaction was naturally slow. On repeated pleading both by Sadhana and Neela, the passeengers managed to reach the opened door. The passengers were hurt and injured, and the two airhostesses helped them in their exit. Sadhana provided water to the injured passengers who were screaming for water and also helped the remaining passengers.

Subsequently, with the help of the local people the injured were removed to the hospital. Sadhana and Neela who herself was injured ensured that all the injured passengers were safely evacuated before they boarded a relief bus.

Thus Smt. Sadhana Pawar and Smt. Neela Sawant showed exemplary devotion to duty and courage in utter disregard of the grave risk to their own lives.

21. 2683938 GRENADIER RAMESH SINGH,

15 GRENADIERS (*Posthumous*)

(Effective date of the award : 3rd October, 1990)

On the 3rd October, 1990 Grenadier Ramesh Singh of 'A' Company was detailed as a part of a combined team which was given the task of apprehending/killing the anti nationalists who had hidden in the jungle area in Jumagund (J&K). Consequently, the combined team was divided into two groups; one was for support and the other was for assault. Grenadier Ramesh Singh was in the assault group which also had the additional task of covering the movement of support group till the latter reached the vantage point to engage anti national elements effectively. While on the move to the vantage point, support group came under heavy and effective fire of anti national elements. Realising that the move of the support group had become well nigh impossible, Grenadier Ramesh Singh, with irresistible desire to eliminate the anti national elements, moved ahead from one position to another with his Light Machine Gun without caring for his personal safety. He killed two militants and injured one. In doing so, while moving from one position to another, he was hit by a bullet and was killed. Thus, he made the supreme sacrifice in the service of the nation.

Grenadier Ramesh Singh, displayed exemplary courage and comradeship of the highest order.

22. 4251263 HAVILDAR CHANDRAMA SINGH,
THE BIHAR REGIMENTS (*Posthumous*)

(Effective date of the award : 23rd October, 1990)

The 14 Bihar, working under an Infantry Brigade was carrying out training in general area Bhura Karimpur from the 19th October, 1990. On the 23rd October, 1990 a foot patrol of the Battalion had an encounter with the terrorists. Operations were launched against the terrorists and they were subsequently destroyed. Havildar Chandrama Singh was a member of the quick reaction team led by Captain Rakesh Rana. In the second phase of the assault to flush out the terrorists, this brave non commissioned officer was inspiring his men by personal example to forge ahead. As the battle progressed, Havildar Chandrama Singh noticed that two terrorists were trying to get away to the east. He also saw Naib Subedar Devindra Singh getting injured. He immediately lunged forward and in half a run and crawl, he reached the injured Junior Commissioned Officer. He immediately manned the Light Machine Gun and pushed the Junior Commissioned Officer into a safe place. Then with accurate fire, he managed to prevent the escape of the terrorists. In the exchange of fire, while moving to a better firing position, Havildar Chandrama Singh received a bullet injury in the groin. Despite his injury, he continued to man the weapon with devastating accuracy. By this time, the terrorists had crawled towards hut number one where the Commanding Officer had knocked out a weapon from the hand of a terrorist. The Commanding Officer now wanted the weapon retrieved before the terrorist get to it. It was then that Havildar Chandrama Singh rose to the occasion and despite his injury exhorted Sepoy Durga Charan Oraon who was with him to retrieve the weapon while he gave covering fire. Despite the agony of pain due to injury, the Non Commissioned Officer fired accurately till Sepoy Durga Charan Oraon accomplished his task. Havildar Chandrama Singh finally succumed to his injury on the 27th October, 1990.

Havildar Chandrama Singh, fighting against concerted terrorists' attack, infused high spirits in his men with conspicuous courage till he laid down his life in supreme sacrifice.

23. 4264170 SEPOY DURGA CHARAN ORAON,
14 BIHAR (*Posthumous*)

(Effected date of the award 23rd October, 1990)

The 14 Bihar, working under an Infantry Brigade, was carrying out raining in general area of Voltoha from the 19th October, 1990. On the 23rd October, 1990, a foot patrol of the Battalion had an encounter with some terrorists at the village Bhura Karimpur. Sepoy Durga Charan Oraon on duty in the officers' mess heard that the Quick Reaction Team had been alerted for the encounter. He quickly took his weapon and jumped into at ruck. He formed part of Captain Rakesh Rana's Quick Reaction Team. In the second phase of the assault of flushing out operations, Sepoy Oraon was pressing forward along the north eastern field when the terrorists made a bid to escape. He saw that both Havildar Chandrama Singh and Naib Subedar Devindra Kumar who had managed the light machine gun to his right had been injured. Sepoy Oraon rushed to the injured Junior Commissioned Officer, grabbed the Light Machine Gun and engaged the terrorists preventing their escape. In the meantime, the commanding Officer by his accurate fire had knocked out a weapon from the hand of a terrorist. On a signal from the Commanding Officer, Sepoy Oraon crawled up and recovered the AK-47 rifle of the terrorist. Not wanting to miss the remaining action, he moved up with the Light Machine Gun and joined Captain Kakesh Rana's group again. By the time Sepoy Oraon joined Captain Rakesh Rana there were only two terrorists to be eliminated. Even though bullets were skimming over their heads. Sepoy Oraon pressed on with the officer and brought heavy fire upon the terrorists time and again. Sepoy Durga Charan Oraon unmindful of his own safety took careful aim and fires a deadly burst which silenced one of the terrorists. As Sepoy Durga Charan Oraon was changing the magazine of the weapon, a burst hit him on his head and he, later, succumbed to his injuries.

Sepoy Durga Charan Oraon, fighting against the terrorists infused high spirits in his men by his conspicuous courage and he laid down his life in supreme sacrifice.

No. 57-Pres/91.—The President is pleased to approve the award of the 'Param Vishisht Seva Medal' to the undermentioned personnel for distinguished service of the most exceptional order :—

1. Lieutenant General Bipin Chandra Joshi (IC-7011), AVSM, Armoured Corps.
2. Lieutenant General Ravindar Nath Mahajan (IC-6482), VSM, Infantry.
3. Lieutenant General Bhartruhari Trimbak Pandit (IC-7320), VrC, Engineers.
4. Lieutenant General Rangaswami Narasimhan (IC-7384), SC, VSM, Infantry.
5. Lieutenant General Ashok Mangalik (IC-6161), SM, Artillery.
6. Lieutenant General Yash Pal Khurana (IC-6170), Engineers.
7. Lieutenant General Christopher Anthony Barretto (IC-6602), Engineers.
8. Lieutenant General Mohammad Ahmad Zaki (IC-7613), AVSM, VrC, Infantry.
9. Lieutenant General Vinod Kumar Singh (IC-7709), Infantry.
10. Lieutenant General Rajender Pal Agarwal (IC-6770), VSM, Army Ordnance Corps.
11. Lieutenant General Rajendra Kumar Upadhyay (MR-965), VSM, Army Medical Corps.
12. Lieutenant General Harbhajan Singh (IC-6115), Signals.
13. Lieutenant General Ashish Banerjee (IC-6436), Artillery (Retired).
14. Vice Admiral Vijai Singh Shekhawat, AVSM, VrC (00189-B).
15. Surgeon Vice Admiral Om Prakash Chawla, AVSM (75048-N) (Retired).
16. Air Marshal Parduman Kumar Jain, VSM (4366), Administrative.
17. Air Marshal Rajendra Kumar Dhawan, AVSM, VM (4736), Flying (Pilot).
18. Air Marshal Shashi Kumar Samuel Ramdas, AVSM VM, VSM, (4930), AE(M).
19. Air Vice Marshal Trilochan Singh, AVSM, VrC, VM (5043), Flying (Pilot).

No. 58-Pres/91.—The President is pleased to approve the award of the 'Uttam Yuddh Seva Medal' to the undermentioned personnel for distinguished service of an exceptional order :—

1. Major General Vasantha Rao Raghavan (IC-10150), AVSM, Infantry.
2. Major General Rabinder Nath Bhalla (IC-10414), VSM, Infantry.
3. Brigadier Rostum Kaikhushru Nanavatty (IC-13878), Infantry.

No. 59-Pres/91.—The President is pleased to approve the award of the 'Ati Vishisht Seva Medal' to the undermentioned personnel for distinguished service of an exceptional order :—

1. Lieutenant General Dhirender Krishen Khanna (IC-10013), Infantry.
2. Major General Satish Nambiar (IC-10018), VrC, Mechanised Infantry.
3. Major General Satish Chander Ahuja (IC-7022), Signals.
4. Major General Ramesh Chander Chopra (IC-7046), Intelligence Corps.
5. Major General Nirvikar Swarup Bhatnagar (IC-7711), Army Service Corps.
6. Major General Ashok Kalyan Verma (IC-7783), Infantry.
7. Major General Shashi Bhushan Sharma (IC-7784), Signals.
8. Major General Vinod Krishna (IC-8131), Signals.
9. Major General Ashok Joshi (IC-8142), Engineers.
10. Major General Surinder Nath (IC-8525), Artillery.
11. Major General Suresh Nath Endley (IC-10107), Engineers.
12. Major General Nirmal Chandra Mahajan (IC-10432), Artillery.
13. Major General Parnab Dutt (IC-10495), VSM, Infantry.
14. Major General Madan Mohan Lakhera (IC-10497), VSM, Infantry.
15. Major General Venkatesh Madhav Patil (IC-11885), Artillery.
16. Major General Chander Kailash Kapur (IC-12169), Infantry.
17. Major General Ranjit Singh (IC-6762), Artillery (Retired).
18. Major General Yudhishter Kumar Kapoor (IC-7317), Artillery (Retired).
19. Brigadier Madanjit Singh Bains (IC-12467), EME.
20. Brigadier Ranjit Singh Mavi (IC-12637), SC, Infantry.
21. Brigadier Prakash Gokarn (IC-12855), Signals.
22. Brigadier Inder Pal Bhalla (MR-1370), VSM, Army Medical Corps (Retired).
23. Brigadier Surendra Kumar Jain (MR-01711), Army Medical Corps (Retired).
24. Rear Admiral Raj Bahadur Suri, VSM (00375-A),
25. Rear Admiral Jag Mohan Singh Sodhi, VSM (00425-R).
26. Rear Admiral Desh Bandhu Kapila, VSM (50104-Y).
27. Acting Rear Admiral Perumpacheruvilla Johnson Jacob, VSM (00511-K).
28. Commodore Arvind Ramchandra Dabir, VSM (00514-T) (*Posthumous*)
29. Commodore Rajendra Singh Chaudhry, VSM (40159-W).
30. Commodore Gupteshwar Rai, NM, VSM (00528-Z).
31. Air Vice Marshal Amal Kumar Mukhopadhyaya (5237), Aeronautical Engineering (Mechanical).
32. Air Vice Marshal Subramaniam Ratnam (5921), Education.
33. Air Vice Marshal Vishnu Murti Raina (5382), Flying (Pilot).
34. Air Commodore Sharadkumar Ramakrishna Deshpande, VM (5694), Flying (Pilot).
35. Air Commodore Trevor Raymond Joseph Osman (6005), Flying (Pilot).
36. Air Commodore Ranjeet Kumar Malhotra, VM (6513), Flying (Pilot)
37. Air Commodore Shailindra Singh Kaushik (6766), Flying (Pilot).
38. Air Commodore Teshter Jall Master (7224), Flying (Pilot).
39. Group Captain Jaswant Singh Kumar, VSM (6186), Logistics.
40. Group Captain Ajit Bhavnani, VM (10440), Flying (Pilot).

No. 60-Pres/91.—The President is pleased to approve the award of "Sarvottam Jeevan Raksha Padak" to the undermentioned persons :—

1. Shri Mohammed Abbas, (*Posthumous*)
H. No. 9-40, Sharab Bowdi,
Devarakonda-508 248,
District Nalgonda,
Andhra Pradesh.

On 16th July, 1989, an Andhra Pradesh Road Transport Corporation bus was stranded in the middle of the flooded Uppuvagu stream and some women passengers and crew members were trapped inside. The water level was fast rising and the situation was alarming. On noticing this, Shri Mohammed Abbas entered the ill fated bus through gushing waters and rescued Smt. Sousilya. Meanwhile, the water level further rose and the bus was washed away. Shri Abbas lost his life alongwith eleven other passengers.

Shri Mohammed Abbas showed conspicuous courage of very high order in saving the life of Smt. Sousilya and made the supreme sacrifice while trying to save the lives of others.

---

2. Shri Arjan Singh, (*Posthumous*)
B-IV-490, Mohalla Fateh Ganj,
Ludhiana, Punjab.

On 29th May, 1988, the terrorists confronted S/Shri Atma Ram Arya and Arjan Singh at the former's bakery shop. They pointed their gun on Shri Arya. Shri Arjan Singh rushed to Shri Arya's rescue and stood between him and the terrorists. The miscreants asked him to get aside and threatened to kill him if he tried to save Shri Arya. But Shri Arjan Singh refused to budge. The terrorists gunned him down before shooting shooting Shri Arya dead.

Shri Arjan Singh displayed great courage in coming to aid of Shri Arya and in the process lost his own life.

3. Shri Rajwant Singh, (*Posthumous*)
Vill. & .O. Kandila,
Tehsil Batala, District Gurdaspur,
Punjab.

4. Shri Avtar Singh, (*Postthumous*)
Vill. Hakimpur, P.O. Kalanaur,
Tehsil & District Gurdaspur,
Punjab.

On 6th June, 1988, six gun-wielding terrorists forcibly diverted a private bus with 65 passengers from Amritsar to Pathankot towards Tatwandi Village. They got the bus halted near a small canal and ordered the shaven persons inside the bus to come out. Two Sikh youths travelling in the bus, S/Shri Rajwant Singh and Avtar Singh were deeply moved by the situation. They rushed forward and pleaded with the armed miscreants not to kill the innocent passengers. Infuriated by their intervention, the terrorists shot them down. The resistance shown by the brave but unfortunate youths put the terrorists into disarray and they fled into the fields.

The exemplary valour and self-sacrifice of S/Shri Rajwant Singh and Avtar Singh averted what could have been a major tragedy resulting in the loss of many lives.

5. Shri G. S. Gill,
Additional Chief Mining Engineer,
Eastern Coalfields Ltd.,
Sanctoria, P.O. Disergarh,
District Burdwan, West Bengal.

On 13th November 1989, Mahabir Colliery near Raniganj town was flooded and a number of miners were trapped inside. Shri G. S. Gill, Additional Chief Mining Engineer of Eastern Coalfields Ltd. conducted the rescue operations with uttmost devotion. He got two drilling rigs hired and two bores completed within a few hours. One was used for carrying down food, drinking water, medicines, etc. and the other was used for bringing out the trapped miners one-by-one. A capsule was inserted through the bore-hole and Shri Gill went into the mine through the bore-hole in the capsule. He conducted the entire rescue operation staying inside the flooded mine till the last surviving miner was rescued with the help of the capsule.

Shri G. S. Gill showed exemplary courage in such a grave situation and was instrumental in saving the lives of many trapped miners.

No. 61-Pres/91.—The President is pleased to approve the award of "Uttam Jeevan Raksha Padak" to the undermentioned persons :—

1. Shri Gurdev Singh (*Posthumous*)
H. No. B/29-355, Sirhind Gate,
Patiala,
Punjab.

On the night of 3rd/4th July, 1988, when unprecedented floods hit the city of Patiala, Shri Gurdev Singh rescued 16 persons from the swirling water before sacrificing his own life in a bid to save more people.

Shri Gurdev Singh displayed exemplary courage and bravery in saving the lives of 16 persons and made the supreme sacrifice while trying to save more people.

2. Shri Jagannath Sathi, (*Posthumous*)
Village & Post Kulsari,
District Chamoli,
Uttar Pradesh.

On 10th September, 1989, Shri Mohammed Irfan Khan of village Banauli descended into the river Pinder to pick up a few floating logs. While returning after picking up the logs from the middle of the river, he got panicky and shouted for help and was drowning. On noticing this, Shri Jagannath Sathi immediately jumped into the river to save the drowning man. But he was caught in a whirlpool and was drowned.

Shri Jagannath Sathi displayed exemplary courage in making valiant efforts to save the life of a drowning man and in the process lost his own life.

3. 1056030 Dafadar Bhaskaram Vadlamani,
44, Armoured Regiment,
C/O 56 APO.

On 5th April, 1989 while returning from duty, Dafadar Bhaskaram Vadlamani saw a tailor's shop in flames and the tailor, a handicapped person was frantically shouting for help. The gallant jawan rushed into the burning shop and lifted the helpless victim. When he was coming out, the roof of the shop caved in and one of the burning wooden beams fell on his back setting his clothes on fire. Undaunted by the severe second degree burns he received, Dafadar Vadlamani brought the victim to safety and thus saved his life.

Dafadar Bhaskaram Vadlamani showed conspicuous courage in saving the life of a handicapped person unmindful of grave risk involved to his own life.

4. Kumari Nirmala,
D/o Shri Rampat,
Village Ahirka, Tehsil Jind,
District Jind, Haryana.

On 4th September, 1989, a 3year old boy master Yogesh, while playing with his 4 year old cousin sister Kumari Monica near a canal, slipped and fell into the canal and was swept away for about 300 feet before he was entangled in a bush. Seeing this, Kumari Monica raised a hue and cry which brought Kumari Nirmala (8 years) to the site. She at once jumped into the canal and swam upto the hapless boy. She rescued him from the bush and brought him to the bank of the canal. With the help of a woman passing by, she brought him to safely and thus saved his life.

Kumari Nirmala displayed exemplary courage in saving the life of a drowning boy unmidful of the risk involved to her own life.

5. Shri Pathose Lazer, (*Posthumous*)
Valiaparambil Pulimel,
Pattor, P.O. Nooranadu,
Alleppey District,
Kerala.

On 29th June, 1989, a country boat with 10 school children on board capsized in the Peruvelichal Puncha and all the children were thrown overboard. The children were struggling for their lives and were drowning. The boatman, Shri Pathrose Lazer rose to the occasion and dived into the flooded pucha. He picked up the children one by one and put them in thte boat. Thus he saved nine children. When he picked up the 10th child and surfaced, the boat had drifted a little too far and the tired boatman could not swim upto it alongwith the child. The boatman and the child drowned in the pucha and died.

Shri Pathrose Lazer showed exemplary courage in saving the lives of 9 children from drowning and make the supreme sacrifice while trying to save the life of the 10th child.

6. Master V. Sampath Kumar,
Koothapadi Village,
Pennagaram Taluk,
North Arcot District,
Tamil Nadu.

On 13th December, 1988, two children aged two years fell into a deep well near Koothapadi village and were drowing. On seeing this, Master V. Sampath Kumar (14th years) immediately jumped into the well and rescued the hapless children.

Master V. Sampath Kumar displayed conspicuous courage and promptitude in saving the lives of two children unmindful of the risk involved to his own life.

7. Shri R. Vediappan,
Guttur Village,
Ampalli (P.O.) Krishnagiri Taluk,
Dharmapuri District,
Tamil Nadu.

On 21st December, 1986 two girls, namely, Kumari Saroja and Kumari Selvi fell into a well and a boy who happened to see this raised an alarm. Hearing the alarm, Shri R. Vediappan rushed to the site and immediately jumped into the well to save the girls. First he brought Kumari Saroja out of the water and again jumped into the well to save the other girl who was about to be drowned. He could successfully retrieved Kumari Selvi from out of deep water.

Shri R. Vediappan showed conspicuous courage and promptitude in saving the lives of two girls unmindful of the grave risk involved to his own life.

8. Kumari Maya,
Village Hussain Pur,
P.O. Ramraj,
District Muzaffarnagar,
Uttar Pradesh.

On 1st May, 1989, a devastating fire broke out in village Hussainpur and four children were trapped inside a burning house. Kumari Maya who happened to be near the site of the incident entered into the burning house and rescued all the four children. In the process she received severe burn injuries on her hand.

Kumari Maya displayed exemplary courage and promptitude in saving the lives of four hapless children unmidful of the grave risk involved to her own life.

9. Smt. Sumitra Devi (Posthumous)
Village Rewan,
Jost-Purwa Rewan,
Thane-Mehmoodabad,
District Sitapur,
Uttar Pradesh.

On 10th September, 1988, three children were drowning in a pond Smt. Sumitra Devi, who was grazing her cattle nearby, saw their plight and rushed to their aid. She immediately jumped into the pond and saved two of them. She again entered the pond to save the third child. Though she succeeded in saving the third child also, in the process, she slipped into a deeper portion of the pond and got drowned.

Smt. Sumitra Devi displayed exemplary courage and concern for human life in saving the lives of the hapless children and in the process lost her own life.

10. T/No. 4404 CPL Sudarshan Pradhan (Posthumous)
Village Bewhabhar, P.O. Simdega,
District Gumla, Bihar.

On 10th December, 1988, CPL Sudarshan Pradhan of 116 Road Construction Company under Project Vartak of Boarder Roads Organisation on road Changwinti-Walong-Namti in Arunachal Pradesh was helping the drillers to charge drilled holes with explosives for blasting. All of a sudden, an overhanging rock portion caved in and everybody ran helter-skelter to save themselves. As Shri Pradhan was scrambling down he noticed big chunks of rock about to hit the supervisor incharge and the CP mate. He at once rushed towards them and pushed them away from the falling rocks. In the process, he got trapped in the slide and was struck by the boulders which took him down the hill for about 150 metres causing serious injuries to him which resulted in his instant death.

Shri Sudarshan Pradhan exhibited exemplary courage, presence of mind and devotion to duty of high order in saving the lives of his two superiors and in the process sacrified his own life.

11. T/No. 505 CPL Tsring Dolkar,
Dett South Pullu,
359 RMPL CARE 113 RCC (GREF),
C/o 56 APO.

On 31st December, 1988, an unprecedented snow avalanche struck a snow clearance team on Leh-Khalsar Road. The dozer was buried and the dozer operator and the overseer were carried away deep into the snow covered valley for about 1000 feet. The operator managed to come out the overseer fell unconscious. On hearing this incident, Smt. Tsring Dolkar rushed to the spot with shovel and removed the snow covering the hapless victim. She rescued him and carried him on her back to safety under very trying circumstances.

Smt. Dolkar showed exemplary courage and devotion to duty in saving the life of a hapless man.

12. G-47166 VEH/MECH (Posthumous)
Shri L. James,
J. J. Bhavan,
Village & P.O. Puthiya
Thura, Tehsil Neyyattinkara,
District Trivandrum,
Kerala-695526.

On 25th December, 1989, Vehicle Mechanic L. James visited Kovalam International Tourist Centre alongwith 24 others. The tourist boat in which they were sailing capsized in the open sea near Palam and all the tourist were thrown over-board. They were struggling for their lives. Being an expert swimmer, Shri James came to their rescue. He continuously swam in the high sea for long hours and was able to save a few of his co-passengers. In the process, he got extremely tired and could not muster enough strength to swim back to the shore and thus sacrified his life while trying to save the lives of fellow passengers.

Shri James exhibited exemplary courage and concern for human life in saving the lives of many persons from drowning and in process, lost his own life.

No. 62-Pres/91.—The President is pleased to approve the award of "Jeevan Raksha Padak" to the undermentioned persons :—

1. Shri Naresh Kumar Chopra (*Posthumous*)
Dalichi Mohalla,
Sirhind City,
Tehsil Fatehgarh Sahib,
District Patiala,
Punjab.

On 13th September, 1988, four terrorists came to Sirhind Mandi and started indiscriminate firing on the people killing many of them. They were advancing towards Sirhind City killing people on the way. Shri Naresh Kumar Chopra, who was on his bisycle, happened to see the killings and rushed to caution the people on the way. Thus, he could save many lives. Later, he tried to apprehend the terrorists and in the process lost his life.

Shri Naresh Kumar Chopra showed great courage under trying circumstances and in the process lost his life.

2. 4166240 Havildar Puran Ram, (*Posthumous*)
Village Tayal, P.O. Bunga China,
T.O. Pithoragarh,
District Pithoragarh,
Uttar Pradesh.

On 10th November, 1988, Lance Naik Jasram's wife came into contact with a live wire in her kitchen garden and got stuck to it. Havildar Puran Ram, who happened to be there at that time, noticed her plight and rushed to her aid. He immediately snatched away the live wire from her clutches and saved her life. But unfortunately, he was himself got electrocuted in the process.

Havildar Puran Ram showed exemplary courage in saving the life of a hapless woman at the cost of his own life.

3. Shri Tekalkote Murlidhar Rao,
H. No. 4-7-142, Esamiya Bazar,
Hyderabad-500 027,
Andhra Pradesh.

On 26th April, 1989, a 25 year old woman jumped into a tank in a bid to end her life due to domestic problems. A hue and cry ensued and Shri Tekalkote Murlidhar Rao, who was passing that way on scooter, rushed to the spot, He at once jumped into the tank and rescued the woman.

Shri Rao showed conspicuous courage and promptitude in saving the life of a drowning woman unmidful of the risk involved to his own life.

4. Shri John K. Jose,
Kallidukkil, Kalayanthani,
Alacode, Thodupuzha,
Idukki District, Kerala.

On 27th December, 1989, while playing a 3 year old child fell into a well and was drowning. A hue and cry resulted. Though many people gathered around the well, none dared rescue the child. Shri John K. Jose rushed to the child's aid. He jumped into the well and rescued the child with the help of a rope provided by the on-lookers. His brave and timely action could save a precious life.

5. Kumari Sajini, K.S.,
Kalluthara House, Thuruthy P.O.,
Changanassery, Kottayam District,
Kerala.

On 12th August, 1989, a 3½ year old child slipped into a well while bathing. Some children saw this and started crying. On hearing their cries, Kumari Sajini, who was indisposed and resting in her house, rushed to the spot. She immediately jumped into the well and fished out the child from the bottom of the well. Meanwhile others arrived at the scene and brought the child and her rescuer out of the well.

But for the courageous act of Kumari Sajini, the little child could not have been saved.

6. Shri Chamkaur Singh,
Vill. & P.O. Leelan Magh Singh,
Via Sidhwan Bet,
District Ludhiana,
Punjab.

On 25th September, 1988, on account of floods, seven persons including two women were marooned on a tree top and there was the danger of their being washed away by the swift currents alongwith the tree. Shri Chamkaur Singh rushed to their aid in a boat alongwith three CRPF Jawans. They successfully rescued the victims but while returning disaster struck them as the boat capsized. One of the persons fell into the flood waters and was washed away. The rescue party caught hold of a tree and tied the boat to it. Then there was a torrential down-poor for over 14 hours and the boat alongwith the tree was being swept away. The rescue party again managed to catch hold of another tree and tied the boat to it. After more than 33 hours, army boats managed to reach there and brought back the rescue party and six persons trapped in floods.

Shri Chamkaur Singh displayed courage of a high order and saved the lives of six marooned persons unmindful of the risk involved to his own life.

7. Shri Manmohan Singh,
Village Jogewal,
Tehsil Samana,
District Patiala,
Punjab.

8. Shri Kulwant Ram,
Village Jogewal,
Tehsil Samana,
District Patiala.
Punjab.

On 23rd September, 1988, a Delhi bound bus fell into the Bhakra canal near Khanauri village and all the passengers were drowning. S/Shri Manmohan Singh and Kulwant Ram who happened to be there rushed to the rescue of the hapless victims. They saved the lives of 13 persons at the risk to their own lives.

9. Shri Gopal Singh Negi,
Village Kandi,
Post Thangar,
District Pauri Garhwal,
Uttar Pradesh.

On 27th December, 1988, 72 year old man fell into the river Ganga and was drowning. Shri Gopal Singh Negi, who happened to see this, rushed to his aid. He at once jumped into the river and brought the hapless victim out of water unmindful of the risk involved to his own life.

10. Master Kaushal Kishore alias Babu,
Village Lalpur,
P.S. Kosi Kalan,
District Mathura,
Uttar Pradesh.

On 17th March, 1990, a devastating fire broke out in a house in village Lalpur and an old woman was trapped inside. On hearing about the incident, Master Kaushal Kishore alias Babu rushed to the spot and in complete disregard of his own safety, entered the burning house through the raging flames and successfully rescued the old woman out to safety.

11. Shri Raj Kumar Jain,
Sanskrit Mahavidyalaya,
Sadumal, District Lalitpur,
Uttar Pradesh.

On 8th April, 1988, a four year old child accidentally fell into a 40 feeet deep well in the Sri Mahavir Digamber Jain Sanskrit Mahavidyalaya, Lalitpur and a hue and cry followed. Shri Raj Kumar Jain, a student of the Mahavidyalaya rushed to her aid. He immediately jumped into the well and caught hold of the drowning child. He firmly held the child on his shoulders and supported himself by holding the bricks on the inner wall of the well till people collected around managed to lower a rope into the well with the help of which he could get out alongwith the child.

12. Shri K.P. Sasikumar,
Driver, Public Works Deptt.,
Mahe.

On 5th April, 1990, a 15 old boy fell into the river mouth while playing and was carried away by the tidal waves. Many people watched this, but none dared to save the drowned boy. Shri Sasikumar, moved by the plight of the boy, jumped into the sea unmindful of the grave risk involved to his own life and rescued the hapless boy.

13. Master Shamsher Singh,
Resident of Rindana,
Tehsil Gauhana,
Rohtak, Haryana.

On 28th December, 1989, a two year old boy slipped and fell into a well while his mother was drawing water. The woman shouted for help. On hearing her shouts 13 year old Master Shamsher Singh rushed to the spot. He immediately jumped into the well and caught hold of the drowning boy. With the help of a rope lowered into the well, he brought the hapless child out of the deep well.

Master Shamsher Singh showed conspicuous courage and promptitude in saving the child without caring for his own life.

14. Kumari Manju Bala,
D/o Shri Kehar Singh Pathania,
Vill. & P.O. Paniali,
Tehsil Palampur,
District Kangra,
Himachal Pradesh.

On 16th August, 1989, Kumari Manju Bala and her elder sister Smt. Suman Rana entered their cow-shed to pen their cow and found to their shock a leopard sitting inside. On seeing them, the leopard attacked. The younger girl firmly cought hold of the leopard's tail. Meanwhile, the elder pounded the leopard on its head with a wooden stake/stone and the beast sustained grievous head injuries and died. In the process both the girls were injured. But for the timely action coupled with composure, courage and promptitude by the younger girl, both would have lost their lives.

15. Shri Ravinder Kumra,
S/o Shri Raghunath,
Village Takrera,
P.O. Sandhole,
Tehsil Sarkaghat,
District Mandi,
Himachal Pradesh.

On 13th August, 1988, four girls went to graze their cattle on the bank of river Beas. While their cattle were grazing, the girls went to the river to bathe. While one of the girls remained near the bank of the river, the other three went to the deep waters and started drowning. A hue and cry ensued. On hearing the frantic shouts, Shri Ravinder Kumar who was also grazing his cattle at some distance rushed to the aid of the drowning girls. He jumped into the river with a long bamboo pole in his hand and swam upto the girls. He beckoned the girls in distress to catch hold the pole. Two of the girls caught hold of the pole and each other's hands and the brave boy brought them ashore. Thus he saved the lives of two young girls unmindful of the risk involved to his own life.

16. Master Bhasha Mohammed Haneef, (*Posthumous*)
S/o Shri K. Ibrahim,
Sharadanagar, Sajapamunnur,
Village Bantawala Taluk,
Dakshina Kannada District,
Karnataka.

On 6th April, 1989, Master Bhasha Mohammed Haneef and his six friends went to collect sea shells at the Netravathi river. As the other boys were engaged in collecting the sea shells, a hue tide swept them into the river. On seeing this, Master Haneef immediately jumped into the river and rescued three drowning boys. While trying to save the lives of the other boys he was himself drowned and made the supreme sacrifice.

17. Shri Rachappa Basavant Harti,
H. No. 50, Somevarpet,
Tilakwadi,
Belgaum,
Karnataka.

On 2nd June, 1989, a 14 year old girl on her evening walk came into contact with a charged electric pole and got stuck to it. On seeing this, Shri Rachappa Basavant Harti rushed to her aid. With the help of a wooden pole, he pushed the hapless girl away from the electric pole and thus saved life. In the process, he himself received electric shock and was unconscious for some time.

18. Shri Kottackal Ittiachan Thomachan,
Kottakkal House,
House No. VI/110 Nedumbasserry,
Panchayat, Alwaye Thaluk, Ernakulam Distt.,
Kerala.

On 13th June, 1989, a three year old child fell into a well and a hue and cry followed. Shri Kottackal Ittiachan Thomachan who happened to be threre in the vicinity heard the shouts and rushed to the spot. He immediately jumped into the well and rescued the child. In the process he dislocated his wrist bones.

19. Master Pradeep Kumar,
S/o Shri Ramakrishnan,
Anthazhi, Cheramangalam,
Melarcode, Alathur,
Palakkad District,
Kerala.

On 1st April, 1989, three young girls in 7—10 age group were playing near a pond adjacent to which there was an eight feet pit filled with water. While trying to pluck lotus from the pond one of the girls slipped and fell into the pit and was drowning. The other two girls jumped into the pit one by one to save the drowning girl and the drowning girl caught hold of the rescuers firmly. In the process, all the three girls were in danger of being drowned. A boy saw their plight and raised an alarm which brought Master Pradeep who was passing by to their rescue. He immediately jumped into the pit and the girls tried to catch hold of his hands but he cuccessfully warded them off. He took a long stick and put one end of it into the pit and made the girls clutch to it. He pulled the girls out of the pit one by one and saved their lives.

20. Master M. S. Sudheer,
S/o Shri M. A. Sankarakutty,
Malayattil House,
Chentrappinny-680 007,
Thrissur District,
Kerala.

On 17th December, 1989, a nine year old boy came into contact with a live wire and got stuck to it. His companion, Master Sudheer tried to pull him away from the live wire but he too got electric shock and was thrown away. Then he tried to pull him by his trousers but the trousers were torn and his efforts failed. Undaunted, he brought a wooden stick with which he pushed the hepless victim away from the live wire and saved his life.

Master Sudheer showed conspicuous courage and presence of mind and saved a precious life from electrocution.

21. Master Xavier Shibu,
S/o Shri Xavier,
Valiyaparambil Thekkathil,
Pulimo, Pattoor,
Pattoor P.O.
Nooranad Village,
Alleppey District,
Kerala.

22. Kumari Varghese Reena,
D/o Shri Varghese,
Palavilayil Puthan Veedu,
Pulimel, Pattoor P.O.,
Noroanadu,
Alleppey District,
Kerala.

On 29th June, 1989, a country boat with 10 school children on board capsized in the Peruvelichal Puncha and all the children were thrown overboard. The children were struggling for their lives and were drowning. The boatman showed great courage and dived into the flooded puncha. He picked up the children one by one put them in the boat. Thus he saved nine children. When he picked up the 10th child and surfaced, the boat had drifted a little too far for the extremely tired boatman to swim upto it alongwith the child. The boatman and the tenth child drowned in the puncha and died.

Two of the rescued children Master Xavier Shibu and Kumari Varghese Reena ably assisted the boatman in his efforts. They showed great fortitude in controlling the boat and making the other children hold on to the boat before they were rowed ashore.

23. Shri Sibychan Kuruvilla,
Thottaikalam, Pulinkumnu,
Kuttanad Taluk,
Alapuzha District,
Kerala.

On 11th November, 1988, a country boat carrying over 15 passengers capsized in the Pampa river and all the passengers were thrown over-board. While all the other passengers were frantically trying to swim back to the nearest bank, two frightened girls could not swim and were drowning. Shri Sibychan Kuruvilla, one of the passengers of the ill-fated boat, while swimming his way to safety, noticed their plight and rushed to their rescue. He successfully brought the hapless girls to safety with the help of a few persons and saved their lives.

24. Shri K. M. Thankappan,
Kattuparamban House,
Munipara, Pariyaram Village,
P.O. Kanfirapally, Chalakkudy,
Thrissur District, Kerala.

On 16th November, 1988, one Smt. Chandrika slipped and fell into a well while trying to fix a pulley for drawing water and was struggling for her life as she did not know swimming. Shri K.M. Thankappan, one of the many persons who reached the spot, rushed to her rescue. He immediately jumped into the well and lifted the drowning woman on his shoulder. He came out of the well with the help of a ladder which was lowered into the well by the people gathered around the well and thus saved her life.

25. Master Dawal Saxena,
S/o Shri Praveen Saxena,
M.O.-73, M.P.F.B. Colony,
Rampur, Jabalpur.

On 19-12-1989, a four year old boy fell into a water tank while playing with his friends and was struggling for his life. Fortunately, he could get hold of the upper edges of the water tank supporting himself precariously. Meanwhile one of his freinds, Master Dawal Saxena managed to get hold of the hapless boy and brought him out to safety with the help of other boys.

The courage and presence of mind of Master Dawal Saxena thus saved life of the hapless victim.

26. Shri Ramchandra Keru Satpute,
Navanand Co-op. Housing Society,
1st Floor, Sant Namdeo Path,
Shantabai Naka, Manpada Road,
Dombivali (East), District Thane,
Maharashtra.

On 23-7-1988, Shri Ramchandra Keru Satpute, a tenant of a three storied building 'Sanjay Niwas' was informed by his neighbour that the building was caving in. It was raining heavily and other inmates of the bulding were asleep. Sensing the danger of building collapse, Shri Satpute rushed to the first and second floors, woke up all the tenants and helped them come out of the building. It so happened that after all the tenants had come out, the building collapsed. But for his timely action many lives would have perished.

27. Shri Sanjay Vaijanath Tate,
Varma Colony, Parbhani,
Maharashtra.

On 4th June, 1989, a passenger train was passing through Brahmangaon manned railway gate and the gate-keeper was busy giving signals. Meanwhile, a three year old girl was crossing the track at a distance of 30 feet away from the railway gate. No one noticed the girl and the gatekeeper was puzzled. Shri Sanjay Vijanath Tate, who was passing by, noticed this and realised the danger. He immediately rushed to her rescue and took her out of the railway line just a few seconds before the train passed.

Shri Sanjay Vaijanath Tate thus showed courage of a high order and saved the girl unmindful of the grave danger involved to his own life.

28. Shri Bheru Bheel,
P.S. Danthal, Tehsil Bhilwara,
District Bhilwara,
Rajasthan.

On 28-1-1989, a 15 month old child fell into a deep well and the child's sister shouted for help. Hearing the shouts Shri Bheru Bheel and two others rushed to the spot. Shri Bheel tied a rope around his waist and jumped into the well. He rescued the child and saved a life.

29. Shri Chunnilal Aagri,
Assistant,
Home Department,
Government of Rajasthan,
Jaipur.

On 30th July, 1988, a Rajasthan State Transport Corporation bus from Delhi to Jaipur Collided with a matador resulting in on the spott death of both the driver and the conductor of the bus and two passengers and injuries to many others. Many injured passengers were trapped inside the illfated bus and crying for help. One of the injured passengers, Shri Chunnilal Aagri managed to come out of the bus through a window but, on hearing the pathetic cries of the fellow passengers, re-entered the bus to rescue them. Undaunted by the injuries he had hemself sustained. Shri Aagri successfully rescue all the trapped passengers and thus saved many lives.

30. Shri Giriraj Prasad Gupta,
P/R-5, Panchayat Samiti Colony,
Mantown, Sawai Madhopur,
Rajasthan.

On 19th December, 1987, a middle aged woman accidentally fell into a well and was drowning. Shri Giriraj Prasad Gupta, who happened to be near the scene of the incident, rushed to her rescue. He immediately jumped into the well and brought her to safety unmindful of the risk involved to his own life.

31. Shri Rajendra Kumar Sharma, (*Posthumous*)
House No. 779, Prem Bhavan,
Ankhadon Ka Rasta,
Kishanpol Bazar,
Jaipur.

On 16th October, 1989, four armed robbers boarded a Rajasthan Roadways bus near Meerut and started looting the passengers of their valuables. They also misbehaved with women passengers. One of the passengers, Shir Rajendra Kumar Sharma, stood up to the armed robbers though he himself was unarmed. He exhorted the fellow passengers to oppose the goons. He pounced upon the robbers and single-handedly apprehended all the four robbers. But in the absence of help from others, he was soon over-powered by the robbers. One of the robbers managed to extricate himself from the clutches of Shri Sharma and shot him dead. In panic the robbers got the bus stopped and escaped into the jungle.

Shri Rajendra Kumar Sharma thus displayed courage of a very high order and thereby saved several passengers from being looked and killed and in the process made the supreme sacrifice.

32. Shri Rameshkumar Mandawala, (*Posthumous*)
Ward No .15, Kuchamancity,
District Nagaur,
Rajasthan.

On 6th August, 1989, one Smt. Santosh Devi Soni slipped and fell into a kund (pond) at village Panchodha while bathing and was drowning. Shri Rameshkumar Mandawala saw this and rushed to her rescue. He immediately jumped into the kund and made valiant efforts to save her. But unfortunately the woman clutched on to him firmly making his movements difficult. As a result, both were drawn towards the well inside the kund and were drowned.

33. Smt. Radha Devi,
Village Mansuna,
P.O. Mansuna,
Tehsil Ukhimath,
Janpadh Chamoli,
Uttar Pradesh.

On 7th November, 1988, Smt. Radha Devi and some other women were cutting grass in a jungle for their cattle. All of a sudden, a bear fell upon Smt. Saraadi Devi. It caught her and threw her into a 40-50 feet deep pond. On this, the women raised a hue and cry which scared the bear away. Immediately the women rushed to the rescue of the hapless woman struggling for her life in the pond. Smt. Radha Devi jumped into the pond unmindful of her own safety and brought the drawning woman out of the pond. Thus a precious life was saved.

34. Master Suraj Pal Singh, (posthumous)
S/o Shri Jaswant Singh,
Village Bharoli (Sewali),
P.O. Kadola,
District Pauri Garhwal,
Uttar Pradesh.

On 11th December, 1988, a water carrier of 6 Para Battalion was turning back after supplying water to the old dairy farm quarters, Agra Cantt. and a 15 month old child who came out of her house was likely to come under the rear wheel of the vehicle. On seeing this, five year old Master Suraj Pal Singh rushed to rescue the child. He tried in vain to save the girl from being crushed under the back wheel and in the process himself came under the same wheel and was crushed to death alongwith the child.

35. Kumari Yachna Chandola,
Shail Niram, Mallital,
Nainital, Uttar Pradesh.

On 16th May, 1989, a 5-year old boy was about to be crushed by a maruti car which went out of control. Noticing this. Kumari Yachna Chandola who was on her way to school rushed to his rescue even at great risk of herself being crushed by the speeding car. She successfully managed to push the boy of the car's way and thereby saved his life In the process, she however sustained serious leg injuries.

36. Shri Pranab Majumdar,
Hospital Para,
P.O. & P.S. Maynaguri,
District Jalpaiguri,
West Bengal.

On 29th September, 1988, Shri Pranab Majumdar, while crossing the bridge at Jarda on way to school, saw a boy being swept away in the river by its strong current and was about to be drowned. Though many persons mutely witnessed the plight of the boy, only Shri Majumdar was the one who rushed to his aid. He immediately jumped into the river and rescued the boy under trying circumstances. He thus saved the life of the drowning boy unmindful of the risk involved to his own life.

37. Shri Krishna Tukaram Kadam, (Posthumous)
40, Narwiar Tanaji Wadi,
Shivaji Nagar,
Pune-411005

On 15th January, 1990, a deaf and dumb girl was crossing the railway track and a train was fast approaching her. Shri Krishna Tukaram Kadam, who was on his way to work noticed this and rushed to save the life of the hapless girl. He managed to reach the girl, but before he could save her the train came and both of them were crushed to death. Shri Kadam sacrificed his life in his brave bid to save the life of a girl.

38. G/39533Y Pioneer Naina Bahadur,
518 Engineer Stores and Supply Company,
C/o 99 APO.

On 21st August, 1988, the 'Yon Nallah' on Road Tezu-Hayuliang in Arunachal Pradesh was heavily flooded and the Border Roads Organisation camp at 'Yon' was inundated. Many persons were marooned and there was the threat of flood waters entering the unit accommodation posing serious threat to human lives. Pioneer Naina Bahadur of Project Vartak, a member of the rescue team, did a commendable job in rescuing the marooned persons. He carried children and women one by one on his shoulder and crossed the overflowing nallah several times to reach them to safety. But for his timely efforts, many lives would have been lost.

39. MOELAR II (097001F) (Posthumous)
Bejjam Dhanam Jaya,
Quarter No. 80-J, Varunapuri,
Mangoor Hill, Vasco Da Gama,
Goa-403 802.

On 15th April, 1989, Shri Bejjam Dhanam Jaya was swimming at Hansa Beach with a few other sailors and civilians and they were swept away by high waves and strong seaward current into deep waters. One of the swimmers, a 16-year old boy was drowning and he shouted for help. On hearing the shouts, Shri Jaya rushed to his aid. He swam upto him and held him firmly onto his shoulders but he could not swim back to the shore due to strong currents. Meanwhile, another sailor seeing their plight rushed to them and brought both of them ashore. By that time Shri Jaya had become unconscious due to fatigue and died. Shri Jaya lost his life in bravely trying to save the life of a drowning boy.

40. Shri Baikrishna Bajpai,
Assistant Works Manager,
Ordnance Equipment Factory,
Kanpur.

41. Shri Harjeet Singh,
Overseer,
Ordnance Equipment Factory,
Kanpur.

On 17th April, 1989, five employees of the Ordnance Equipment Factory, Kanpur went into the sumpwell storing effluents of the tannery Section for cleaning and became unconscious due to the poisonous gas inside. The lives of all the five trapped persons were in peril. Undaunted by the alarming situation, S/Shri Baikrishna Bajpai and Harjeet Singh got down into the sumpwell and brought the victims out. But unfortunately 3 of them died on way to hospital and the other two died during tereatment at the hospital.

42. G/157564 WL/Hand
(N/T) Jai Singh,
1581 pioneer Company, Project Vartak,
GREF, C/O 99 APO.

During August, 1988, the Yon nallah at Tezu-Hayuliang in Arunachal Pradesh was heavily flooded and the Yon camp where three BRO units were located was completely submerged under flood waters. The marooned personnel were being evacuated and Leading Hand Jai Singh was in charge of evacuation. He inspired all men to cross the fast flowing water. While crossing, Pioneer Milkha Singh slipped and was about to be drowned. Shri Jai Singh at once jumped into the flood waters and swam upto the drowning man. He firmly caught hold of him and rescued him to safety. He thus saved the life of the hapless man unmindful of the risk involved to his own life.

43. G/156313-A Supervisor Non-Technical Grade II Pradip Kumar Maity, 1072 Field Workshop (GREF), C/O 99 APO.

On 22nd June, 1989, Driver Desh Raj accidentally slipped and fell into the sea at Campbell Bay Jetty and was drowning as he did not know swimming. On seeing this, Shri Maity immediately jumped into the sea and swam upto him. He caught hold of the drowning man firmly kept him afloat and slowly brought him near the jetty steps. Other people gathered there pulled him out of water.

44. Shri Anil Kumar, R/O Kunnu, Tehsil Moorang, District Kinnaur at Kalpa, Himachal Pradesh.

45. Shri Raghubir Singh, R/O Kunnu, Tehsil Moorang, District Kinnaur at Kalpa, Himachal Pradesh.

In August, 1987, three persons fell into the Rangrik Khad and were struggling for their lives. S/Shri Anil Kumar and Raghubir Singh, who were on their way to school, noticed their plight and rushed to their aid. They immediately jumped into the khad unmindful of the risk involved to their own lives and rescued the drowning persons.

46. Shri Arun Kumar, S/O Shri Mehar Chand, Government Middle School, Naina Deviji, Sub-Teh. Bilaspur, Himachal Pradesh.

On 3rd January, 1989, a seven-year old girl while playing came into contact with a live stay wire attached to an electric pole and got stuck to it. On hearing the resultant hue and cry, Shri Arun Kumar rushed to the site and swung into action. He at once brought a bamboo pole with the help of which he extricated the hapless girl from the deadly wire and saved her life.

47. GO-2079 Assistant Engineer (Civil) Shri Gian Singh, 1416, Recce Survey and Trace Cut, C/O HQ 14 BRTF C/O 99 APO

On 23rd January, 1990, a vehicle of Special Security Bureau rolled down a 100 feet deep valley and six persons were trapped inside the ill-fated vehicle with serious injuries. The trapped persons were crying for help. Shri Gian Singh who happened to pass by in his jeep heard their cries for help and rushed to their aid. He sent one of his men to fetch more help and started rescue work with the help of another man, Shri Padmanabhan. With great efforts they brought out three of the injured persons on their shoulders Meanwhile, a rescue party arrived and all the trapped persons were brought out. But for Shri Gian Singh's valiant efforts, many lives would have been lost.

48. Shri Gulam Mohamed Husain, Village Afani (Aphani), Post Atholi, Tehsil Kishtwar, District Doda, Jammu & Kashmir,

On 9th February, 1990, a heavy rock-slide occurred on Galhar sansari Road and two labourers and their three children were killed, and another child was trapped in the rubbles. A tea-stall owner, Shri Gulam Mohamed Hussain led a GREF personnel team for rescue work to the disaster site. The rescue team heard the wails of a child amidst the rubbles and made untiring efforts to save the life of the child. Shri Hussain with the help of Driller Lal Bahadur removed the stones beneath the heavy boulders, made a small tunnel and removed the trapped child. Thus he was instrumental in saving the life of the hapless child.

A. K. UPADHYAY, Director

(DEPARTMENT OF ELECTRONICS)

New Delhi, the 27th March 1991

RESOLUTION

No. 2(11)/89-MB—Electronics Research and Development Centres (ER&DCs) at Trivandrum, Calcutta, Lucknow, Mohali and Pune have been established with primary objective of undertaking application oriented, region specific Research, Design and Development in the state-of-the-art Electronics technology including rural applications so as to generate and deliver knowhow for productionisation at various manufacturing units in the country. These five ER&DCs are autonomous Scientific Societies registered with the Registrars of Cooperatives Societies under the Societies Registration Act of the respective states.

It has now been decided by the Government of India to have uniform set of Rules and Regulations for all ER&DCs. With this end in view, the resolution No. 4(1)/88-Fin II dated February 10, 1989 relating to ER&DC, Trivandrum is amended as follows with immediate effect :

Governing Council of ER&DC, Trivandrum

Chairman

(i) Secretary, Deptt. of Electronics, Government of Iindia, or his nominee (Ex-officio)

Members

(ii) & (iii) Two members nominated by Secretary Deptt. of Electronics, Government of India

(iv) Director, ER&DC, Trivandrum

(v) Representative of the Govt. of Kerala

(vi) Nominee of Kerala State Electronics Development Corporation Ltd. (KSEDC)

(vii) Representative of user Industry or relevant Industry association

Member-Finance

(viii) JS&FA, Deptt. of Electronics, Government of India, or his nominee (Ex-officio)

Exceutive Committee of ER&DC, Trivandrum

Chairman

(i) Nominee of State Electronics Development Corporation in the Southern Region (by rotation)

Members

(ii) JS&FA, Deptt. of Electronics, Government of India, or his nominee (Ex-officio)

(iii) Nominee of Deptt. of Electronics.

(iv) Director, ER&DC, Trivandrum

Registrar, ER&DC, Trivandrum will be the Secretary to the Governing Council and Executive committee.

The Management Board stands abolished. The new Governing Council is advised to take immediate action to amend the Rules and Regulations and Bye-laws of ER&DC, Trivandrum in line with the other ER&DCs as already approved by the Government of India.

ORDER

Ordered that the Resolution be published in the Gazette of India.

Ordered that a copy of the Resolution be communicated to all concerned.

A. K. Deb, Jt. Secy

MINISTRY OF HOME AFFAIRS

New Delhi, the 27th March 1991

No. U-13019/2/89-GP.—The President is pleased to nominate the following non-official members to the Advisory Committee of Union Territory of Dadra & Nagar Haveli associated with the Ministry of Home Affairs for the year 1990-91.

(1) Smt. Kokilaben D. Khandya—Woman Member
(2) Shri Paulus Vangad, Sarpanch, Mandoni (ST)
(3) Shri Devaji Raju Gond, Sarpanch, Dudhani (ST)
(4) Shri Dhirajsinh U. Solanki, Sarpanch, Naroli

A. P. SHARMA, Director

MINISTRY OF COMMERCE

New Delhi, the 22nd January 1991

No. 3/2/73-FTZ(T)—In partial modification of this Ministry's Notification No. 3/2/73-FTZ(T) dated the 24-5-1973 and the amendments carried out thereto from time to time, the Central Government hereby reconstitute the Kandla Free Trade Zone Authority with the following composition :—

Chairman

1. Secretary/Special Secretary,
Ministry of Commerce,
Government of India.

Members

2. Chief Secretary,
Government of Gujarat.

3. Secretary,
Industries Department and or
Labour Department and or
Department of Power,
Government of Gujarat.

4. Secretary,
Department of Economic Affairs,
Ministry of Finance,
Government of India.

5. Secretary,
Department of Revenue,
Ministry of Finance,
Government of India.

6. Secretary,
Ministry of Urban Development,
Government of India.

7. Secretary,
Ministry of Industry,
Department of Industrial Development,
Government of India.

8. Chairman,
Kandla Port Trust,

9. Additional Secretary &
Financial Adviser,
Ministry of Commerce,
Government of India.

10. Additional Secretary,
In charge of EPZ Division,
Ministry of Commerce,
Government of India.

Member-Secretary

11. Development Commissioner,
Kandla Free Trade Zone.

2. The Kandla Free Trade Zone (KAFTZ) Authority will deal with all major policy issues for speedy creation, growth and development of the Kandla Free Trade Zone. The Authority will meet once a year.

3. The Chairman of the Authority is authorised to co-opt on ad-hoc basis any representative of any other Department/Agency whose association is considered essential to its working and to appoint sub-Committees as and when required.

No. 4/1/73-EPZ—In partial modification of this Ministry's Notification No. 4/1/73-EPZ dated the 15-2-1973 and the amendments carried out thereto from time to time, the Central Government hereby reconstitute the Santacruz Electronics Export Processing Zone (SEEPZ) Authority with the following composition :—

Chairman

1. Secretary/Special Secretary,
Ministry of Commerce,
Government of India.

Members

2. Chief Secretary,
Government of Maharashtra.

3. Secretary,
Industries Department and or
Labour Department and or
Department of Power,
Government of Maharashtra.

4. Secretary,
Department of Economic Affairs,
Ministry of Finance,
Government of India.

5. Secretary,
Department of Revenue,
Ministry of Finance,
Government of India.

6. Secretary,
Ministry of Urban Development,
Government of India

7. Secretary,
Ministry of Industry,
Department of Industrial
Development,
Government of India.

8. Chairman, Bombay Port Trust.

9. Additional Secretary &
Finance Adviser,
Ministry of Commerce.
Government of India.

10. Additional Secretary
Incharge of EPZ Division,
Ministry of Commerce,
Government of India.

Member-Secretary

11. Development Commissioner,
Santacruz Electronics Export
Processing Zone.

2. The Santacruze Electronics Export Processing Zone Authority will deal with all major policy issues for speedy creation, growth and development of the Santacruz Electronics Export Processing Zone. The Authority will meet once a year.

3. The Chairman of the Authority is authorised to co-opt on ad-hoc basis any representative of any other Department/Agency whose association is considered essential to its working and to appoint sub-committees as and when required.

No. 14(12)/82-EPZ—In partial modification of this Ministry's Notification No. 14(12)/82-EPZ dated the 25-1-1984 and the amendments carried out thereto from time to time, the Central Government hereby reconstitute the Noida Export Processing Zone (NEPZ) Authority with the following composition :—

Chairman

1. Secretary/Special Secretary,
Ministry of Commerce,
Government of India.

Members

2. Chief Secretary,
Government of Uttar Pradesh.

3. Secretary,
Industries Department and or
Labour Department and or
Department of Power,
Government of Uttar Pradesh.

4. Secretary,
Department of Economic Affairs,
Ministry of Finance,
Government of India.

5. Secretary,
Department of Revenue,
Ministry of Finance,
Government of India.

6. Secretary,
Ministry of Urban Development,
Government of India.

7. Secretary,
Ministry of Industry,
Department of Industrial
Development,
Government of India.

8. Chairman,
NOIDA.

9. Additional Secretary &
Financial Adviser,
Ministry of Commerce,
Government of India.

10. Additional Secretary
Incharge of EPZ Division,
Ministry of Commerce,
Government of India.

Member-Secretary

11. Development Commissioner,
Noida Export Processing Zone.

2. The Noida Export Processing Zone Authority will deal with all major policy issues for speedy creation, growth and development of the Noida Export Processing Zone. The Authority will meet once a year.

3. The Chairman of the Authority is authorised to co-opt on ad-hoc basis any representative of any other Department/Agency whose association is considered essential to its working and to appoint sub-committees as and when required.

No. 14/13/82-EPZ—In partial modification of this Ministry's Notification No. 14/13/82-EPZ dated the 4-1-1984 and the amendments carried out thereto from time to time, the Central Government hereby reconstitute the Falta Export Processing Zone Authority with the following composition :—

Chairman

1. Secretary/Special Secretary
Ministry of Commerce,
Government of India.

Members

2. Chief Secretary,
Government of West Bengal.

3. Secretary,
Industries Department and or
Labour Department and or
Department of Power,
Government of West Bengal.

4. Secretary,
Department of Economic Affairs,
Ministry of Finance,
Government of India.

5. Secretary,
Department of Revenue,
Ministry of Finance,
Government of India.

6. Secretary,
Ministry of Urban Development,
Government of India.

7. Secretary,
Ministry of Industry,
Department of Industrial
Development,
Government of India.

8. Chairman,
Calcutta Port Trust.

9. Additional Secretary &
Financial Adviser,
Ministry of Commerce,
Government of India.

10. Additional Secretary
In charge of EPZ Division,
Ministry of Commerce,
Government of India.

Member-Secretary

11. Development Commissioner,
Falta Export Processing Zone.

2. The Falta Export Processing Zone Authority will deal with all major policy issues for speedy creation, growth and development of the Falta Export Processing Zone. The Authority will meet once a year.

3. The Chairman of the Authority is authorised to co-opt on ad-hoc basis any representative of any other Department/agency whose association is considered essential to its working and to appoint sub-Committees as and when required.

No. 14/14/82-EPZ—In partial modification of this Ministry's Notification No. 14/14/82-EPZ dated the 3rd May, 1989, the Central Government hereby reconstitute the Visakhapatnam Export Processing Zone Authority with the following Composition :—

Chairman

1. Secretary/Special Secretary
Ministry of Commerce,
Government of India.

Members

2. Chief Secretary,
Government of West Bengal.

3. Secretary,
Industries Department and or
Labour Department and or
Department of Power.

4. Secretary,
Department of Economic Affairs,
Ministry of Finance,
Government of India.

5. Secretary,
Department of Revenue,
Ministry of Finance,
Government of India.

6. Secretary,
Ministry of Urban Development,
Government of India.

7. Secretary,
Ministry of Industry,
Department of Industrial
Development,
Government of India.

8. Chairman,
Visakhapatnam Port Trust.

9. Additional Secretary &
Financial Adviser,
Ministry of Commerce,
Government of India.

10. Additional Secretary
In charge of EPZ Division,
Ministry of Commerce,
Government of India.

Member-Secretary

11. Development Commissioner,
Visakhapatnam Export Processing Zone.

2. The Visakhapatnam Export Processing Zone Authority will deal with all major policy issues for speedy creation, growth and development of the Visakhapatnam Export Processing Zone. The Authority will meet once a year.

3. The Chairman of the Authority is authorised to co-opt on ad-hoc basis any representative of any other Department/agency whose association is considered essential to its working and to appoint sub-Committees as and when required.

No. 14/15/82-EPZ.—In partial modification of this Ministry's Notifiication No. 14/15/82-EPZ dated the 30-1-1984 and the amendments carried out thereto from time to time, the Central Government hereby reconstitute the Cochin Export Processing Zone Authority with the following composition :—

Chairman

1. Secretary/Special Secretary
Ministry of Commerce,
Government of India.

Members

2. Chief Secretary,
Government of Kerala.

3. Secretary,
Industries Department and or
Labour Department and or
Department of Power,
Government of Kerala.

4. Secretary,
Department of Economic Affairs,
Ministry of Finance,
Government of India.

5. Secretary,
Department of Revenue,
Ministry of Finance,
Government of India.

6. Secretary,
Ministry of Urban Development,
Government of India.

7. Secretary,
Ministry of Industry,
Department of Industrial
Development,
Government of India.

8. Chairman,
Cochin Port Turst.

9. Additional Secretary &
Financial Adviser,
Ministry of Commerce,
Government of India.

10. Additional Secretary
In charge of EPZ Division,
Ministry of Commerce,
Government of India.

Member-Secretary

11. Development Commissioner,
Cochin Export Processing Zone.

2. The Cochin Export Processing Zone Authority will deal with all major policy issues for speedy creation, growth and development of the Cochin Export Processing Zone. The Authority will meet once a year.

3. The Chairman of the Authority is authorised to co-opt on ad-hoc basis any representative of any other Department/agency whose association is considered essential to its working and to appoint sub-Committees as and when required.

No. 14(18)/82-EPZ—In partial modification of this Ministry's Notification No. 14(18)/82-EPZ dated the 4-1-1984 and the amendments carried out thereto from time to time, the Central Government hereby reconstitute the Madras Export Processing Zone Authority with the following composition :—

Chairman

1. Secretary/Special Secretary
Ministry of Commerce,
Government of India.

Members

2. Chief Secretary,
Government of Tamil Nadu.

3. Secretary,
Industries Department and or
Labour Department and or
Department of Power,
Government of Tamil Nadu.

4. Secretary,
Department of Economic Affairs,
Ministry of Finance,
Government of India.

5. Secretary,
Department of Revenue,
Ministry of Finance,
Government of India.

6. Secretary,
Ministry of Urban Development,
Government of India.

7. Secretary,
Ministry of Industry,
Department of Industrial
Development,
Government of India.

8. Chairman,
Madras port Trust.

9. Additional Secretary &
Financial Adviser,
Ministry of Commerce,
Government of India.

10. Additional Secretary
In charge of EPZ Division,
Ministry of Commerce,
Government of India.

Member-Secretary

11. Development Commissioner,
Madras Export Processing Zone.

2. The Madras Export Processing Zone Authority will deal with all major policy issues for speedy creation, growth and development of the Madras Export Processing Zone. The Authority will meet once a year.

3. The Chairman of the Authority is authorised to co-opt on ad-hoc basis any representative of any other Department/agency whose association is considered essential to its working and to appoint sub-Committees as and when required.

JAWHAR SIRCAR, Director

MINISTRY OF ENVIRONMENT AND FORESTS

(DEPARTMENT OF ENVIRONMENT, FORESTS & WILDLIFE)

New Delhi-110003, the 6th March 1991

RESOLUTION

Subject : ESTABLISHMENT OF REGIONAL OFFICES OF THE DEPARTMENT OF ENVIRONMENT, FORESTS AND WILDLIFE UNDER THE MINISTRY OF ENVIRONMENT AND FORESTS

No. 1-1/88-RO(HQ).—The Regional Office for the Eastern Zone under the Ministry of Environment and Forests was set up at Bhubaneswar in accordance with Resolution No. 37-3/85-FP dated 7-4-1986. Subsequently, this Ministry issued another Resolution dated 12-5-1988 shifting the Headquarters of the Eastern Zone Regional Office from Bhubaneswar to Calcutta. In view of administrative expediency it has now been decided to retain the Headquarters of the Eastern Zone Regional Office at Bhubaneswar.

This order supersedes all previous orders on the subject.

ORDER

Ordered that a copy of this Resolution be communicated to all concerned.

Ordered also that the Resolution be published in the Gazette of India for general information.

R. RAJAMANI, Secy

प्रबन्धक, भारत सरकार मुद्रणालय, फरीदाबाद द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशन नियंत्रक, दिल्ली द्वारा प्रकाशित. 1991
Printed by the Manager, Govt. of India Press, Faridabad & Published by the Controller of Publications, Delhi—1991